मूल्य - 20

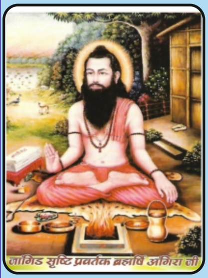

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का मासिक पत्र

जांगिड ब्राह्मण

JANGID BRAHMIN

अंगिराऽसि जंगिडः

वर्षः 119, अंकः 06, जून -2026 ई., तारीख 22-27 प्रति माह

श्री विश्वकर्मणे नमः

POSTED UNDER LICENCE NO. U(DN) 39/2024-26 OF POST WITHOUT PREPAYMENT OF POSTAGE

महासभा द्वारा संचालित अंगिरस भारती पब्लिक स्कूल बांकनेर के भवन में नव निर्माण कार्य हेतु 17-06-2026 को नींव का मुहूर्त विधिवत पूजा अर्चना के साथ सम्पन्न

प्रधान- श्री रामपाल शर्मा

सम्पादक- रामभगत शर्मा

शुभलाभ
GREEN VALLEY
2&3 BHK LUXURIOUS FLAT
& SHOPS

शुभलाभ
VINTAGE
VILLA
6 BHK Luxurious Villas

THE
VINTAGE
by शुभलाभ
3 BHK Premium Living

शुभलाभ
HERITAGE
3 | 4 BHK Heritage Living
& Penthouse

शुभलाभ
SQUARE
Showrooms | Corporate
Entertainment

शुभलाभ®
GROUP

AHMEDABAD

THE VINTAGE
Naroda- Dehgam Road
Opp. Shyam Valencia Bungalow
New Naroda, A'bad-382230

Nilesh Sharma 96388 00449
Anurag Sharma 83201 68811

शुभलाभ
HEIGHTS
2 | 3 BHK Premium Living

SENTOSA
ROYAL BUNGALOW
4 BHK Royal Living Homes

PALATE
RESTAURANT & BANQUET

GRAND
Neelkanth
banquet & restaurant
100-1000 Capacity Banquet

FITNESS
FUEL
365 Days Open, Luxurious Gym

महासभा द्वारा संचालित अंगिरस भारती पब्लिक स्कूल बांकनेर के भवन में नव निर्माण कार्य हेतु 17-06-2026 को नींव का मुहूर्त विधिवत पूजा अर्चना की चित्रावली

राजस्थान प्रदेशसभा द्वारा आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता मे चूरू जिले से सफल रहे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चूरू जिला सभा द्वारा सम्मान।

सागरपुर शाखा सभा के अध्यक्ष का निर्विरोध चुनाव

INTERIO CRAFT

MERGER OF **ROYAL, SG AND KRISHNA INTERIORS**

Our Management Team

Rampal Sharma | Deepak Sharma | Jagmohan Sharma | Amith Sharma

With its existence over three and half decades, we have carved a niche in the segment of providing complete interior solutions to various corporates houses, retail stores & residences pan India.

OUR STRENGTHS
- QUALITY OF WORK
- SERVICE COMMITMENT
- ON TIME COMPLETION
- PRICING

Our Sister Concerns:

- Krishna Ventures
- Krishna Retails
- SG Ventures
- NR Retails

Our Franchise Stores

- N R Retails, Uspolo Store, Kammanahalli, BANGALORE
- Uspolo Store, Vega City Mall, BANGALORE
- Krishna Retails, Uspolo Store, USPA-Forum Sujana Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM-Forum, Sujana Mall, HYDERABAD
- Uspolo Kids, USPA kids-Sarat City Mall, HYDERABAD
- Uspolo Denim, USPA Denim - Sarat City Mall, HYDERABAD
- Flying Machine, FM -Sarat City Mall, HYDERABAD
- Krishna Ventures, Mega Mart, Mega Mart - Kotputli, JAIPUR
- Third Wave Coffee, Bel Road, BANGALORE
- Wrogn Store, L&T Mall, HYDERABAD
- Swish Salon, BANGALORE

OUR SERVICES

ON SITE
- Carpentry
- Painting
- Tiling
- Marble Work
- Electrical & Lighting
- Civil
- Plumbing...

OFF SITE
- Production of Furniture
- Metal Works

WE ARE TURNKEY INTERIOR SOLUTION PROVIDERS

WE MAKE THEM LOOK AESTHETICALLY RICH AND BEAUTIFUL

Reach us:

Corporate Office: No 13/14 Royal Chambers, 3rd Floor, Dodda Banaswadi, Outer Ring Road, Near Vijaya bank Colony, Bengaluru, Karnataka 560043

080 2542 6161

projects@interiocraft.com

www.interiocraft.com

Some of our Valuable Clients

FLYING MACHINE, U.S. POLO ASSN., AÉROPOSTALE, ARROW, LP LOUIS PHILIPPE, PETER ENGLAND, NAUTICA, GAP, trueblue, GANT, Allen Solly, VAN HEUSEN, lifestyle, max, homecentre, ZOYA, TANISHQ, TANEIRA, TITAN, Helios, fastrack, TITAN eyeplus, Mia, MELORRA, CENTRO, BIRKENSTOCK, THIRD WAVE COFFEE, SWAYAMVAR, SHOPPERS STOP, BLUESTONE, SS BEAUTY, SWISH, TASVA, Manyavar

''जांगिड ब्राह्मण महासभा पत्रिका'' के नियम एवं उद्देश्य

1. समाज के सभी वर्ग के व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास के लिए नवाचार करना।
2. साहित्य सृजन, आध्यात्मिक चेतना एवं आत्मविश्वास को प्रोत्साहन देना।
3. सामाजिक गतिविधियों के अन्तर्गत केन्द्रीय, प्रादेशिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय समाचारों को प्रकाशित करना।
4. सामाजिक शिक्षा, वैज्ञानिक तकनीकी एवं शिल्पोन्नति संबंधी निबंध तथा लेखों आदि को प्रकाशित करना।
5. समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करना तथा उन्मूलन के लिए विकास की ओर उन्मुख होने का संचरण करना।
6. पत्रिका प्रत्येक अंग्रेजी माह की 22-27 तारीख को प्रकाशित होती है।
7. लेखों व अन्य प्रकाशनार्थ भेजी गयी सामग्री को छापने, न छापने तथा घटाने-बढ़ाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक के पास सुरक्षित है।
8. व्यक्तिगत तथा विवादास्पद लेख पत्रिका में प्रकाशित नहीं किए जाएंगे।
9. लेखन सामग्री भेजने वाले स्वयं उसके लिए उत्तरदायी होंगे।
10. नमूने का अंक उपलब्ध होने पर ही भेजा जा सकता है।

स्वामित्व एवं सर्वाधिकार सुरक्षित

पंजीकृत सं. एस.-27/1919

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

प्रधान कार्यालय

440, हवेली हैदरकुली, चांदनी चौक, दिल्ली-110006

दूरभाष:- 011-45516719 , 9990070023

Website: www.abjbmahasabha.com

E-mail: jangid.mahasabha@gmail.com

सम्पर्क सूत्र

प्रधान-पं.रामपाल शर्मा ''जांगिड''	09844026161
महामंत्री-पं.सांवरमल ''जांगिड''	09414003411
सम्पादक-पं.रामभगत शर्मा ''जांगिड''	09814681741
सह सम्पादक-पं.प्रहलाद राय शर्मा ''जांगिड''	08140229679

'जांगिड ब्राह्मण' महासभा की सदस्यता दर

(01-10-2018 से)

सदस्यता	रुपये
प्लेटिनम सदस्य	1,00,000/-
स्वर्ण सदस्य	51,000/-
रजत सदस्य	25,000/-
विशेष सम्पोषक	21,000/-
सम्पोषक सदस्य	11,000/-
संरक्षक (पत्रिका सहित)	2,100/-
संरक्षक (पत्रिका रहित)	500/-
वार्षिक पत्रिका शुल्क	240/-
मासिक पत्रिका शुल्क	20/-

विज्ञापन शुल्क की दरें

टाईटल का अंतिम पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 10000/-,वार्षिक 100000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 6000/-,वार्षिक 61000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (रंगीन)
मासिक 4000/-, वार्षिक 41000/-

अन्दर का पूरा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 3000/-, वार्षिक 31000/-

अन्दर का आधा पृष्ठ (साधारण)
मासिक 1500/-, वार्षिक 17000/-

अन्दर का चौथाई पृष्ठ (साधारण)
मासिक 750/-,वार्षिक 8500/-

वैवाहिक विज्ञापन
मासिक 201/-

UPI ID: akhilbhartiyajangidbrahminmahasabha@sbi

महासभा बैंक खाता

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया खाता नं. **61012926182 , (IFSC Code: SBIN0006814)** में किसी भी स्थान से बैंक (शाखा-एसबीआई, मुण्डका, नई दिल्ली-41) में 49000/- रू. प्रतिदिन नकद जमा करवाए जा सकते हैं। जमाकर्ताओं से अनुरोध है कि नकद जमापर्ची / चेक /Neft जमापर्ची पर पाने वाले का नाम **''अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा''** अवश्य लिखें तथा जमा राशि का सम्पूर्ण विवरण महासभा को आवश्यक रूप से प्रेषित करें। महासभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80-G के तहत छूट के लिए मान्य है। दानदाता अपनी आयकर विवरणी में दान पर आयकर छूट के लिए दावा कर सकते है।

अरूण कुमार (अनिल जांगिड)
कोषाध्यक्ष महासभा, मो. 9810988553

॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अनुक्रमणिका

03. महासभा द्वारा संचालित अंगिरस भारती पब्लिक स्कूल बांकनेर के भवन में नव निर्माण कार्य हेतु 17-06-2026 को नींव का मुहर्त विधिवत पूजा अर्चना की चित्रावली.........
07. संपादकीय...
09. प्रधान की कलम से...
11. कृतज्ञता धन्यवाद एवम.. भामाशाह पी एल शास्त्री जी
11. महासभा द्वारा संचालित अंगिरस भारती पब्लिक स्कूल बांकनेर के स्कूल भवन में नव निर्माण कार्य हेतु नींव का मुहूर्त विधिवत पूजा अर्चना के साथ सम्पन्न..
12. महासभा की त्रैमासिक मीटिंग की सूचना - बेंगलुरु
13. प्रदेशसभाओं के अधीनस्थ इकाईयों के चुनाव में..
14. महासभा द्वारा जारी रसीद बकों के तहत धनराशि..
15. संविधान संशोधन कमेटी का गठन..
16. विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस का महत्व
18. हरदा जिलाध्यक्ष पद हेतु चुनाव अधिसूचना..
19. भावनगर जिलाध्यक्ष पद हेतु चुनाव अधिसूचना......
20. समाज और संगठन के सशक्त समन्वय का गौरवपूर्ण अवसर भा.ज.पा. राजस्थान द्वारा श्री भंवरलाल जांगिड..
21. 11 फरवरी 2027 को होगा शेखावटी जांगिड समाज का.
22. प्रधान जी द्वारा सदस्यता मिशन डेढ़ लाख अभियान..
23. बधाई एवं शुभकामनाएं ..
24. बधाई एवं शुभकामनाएं.....
25. जीवन जीने के कला - आओ सीखें प्रकृति से ..
26. अहंकार और गुस्सा मानवता के दुश्मन ..
28. (1 जून) अंतर्राष्ट्रीय माता पिता दिवस..
30. वाव-थराद जिला सभा कार्यकारणी शपथ ग्रहण समारोह.
31. प्रदेश सभा राजस्थान द्वारा 12 जुलाई 2026 को..
33. विश्व पर्यावरण दिवस 2026: प्लास्टिक प्रदूषण को..
35. आने वाला समय क्या कुँवारेपन का युग होगी ?
37. बागपत जिलाध्यक्ष पद हेतु चुनाव अधिसूचना..
38. (ॐ) आम शब्द का अर्थ और स्वरूप ..
40. सूर्य नमस्कार में सभी योगों का योग..
42. विश्व बाल श्रम निषेध दिवस..
43. गायत्री जयंती : भारतीय संस्कृति, अध्यातम और ..
46. हल्दी घाटी युद्ध के 450 वर्ष...
48. अंगिरावंशियों के स्वजातीय शिक्षा -प्रसार की..
50. जिला सभा चूरू के निर्देशन में महिला प्रकोष्ठ द्वारा..
51. पंच महायज्ञ ..
52. महासभा के एक लाख रुपये के प्लैटिनम ..
58. शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रुपये के..
60. वैवाहिक विज्ञापन...
61. हाल ही मे सम्पन्न जिला सभा चूरू के निर्देशन मे महिला प्रकोष्ट द्वारा आयोजित जिला स्तरीय "सेल्फी परिंडा अभियान 2026" की कुछ झलकियां........

प्रचार सामग्री (विज्ञापन)

शुभ लाभ ग्रुप

कृष्णा इंटीरियर

भारत व्हील

शर्मा एंड कंपनी

भागीरथ मोटर्स

न्यायिक क्षेत्र

सभी न्यायिक मामलों में महासभा के किसी भी पदाधिकारी के विरूद्ध महासभा सम्बन्धी मामले में कानूनी कार्यवाही के लिये न्यायिक क्षेत्र दिल्ली ही होगा।

विनम्र निवेदन

(1) 'जांगिड ब्राह्मण' पत्रिका हर माह की 22 से 27 तिथि तक नियमित रूप से भेज दी जाती है, जो आपको 3-7 दिन में मिल जानी चाहिए।

(2) जिन आदरणीय सदस्यों को पत्रिका नहीं मिल पा रही है वे कृपया अपने सम्बन्धित डाक घर में लिखित शिकायत करें और इसकी एक प्रति महासभा कार्यालय में भी भेजें ताकि महासभा कार्यालय भी अपने स्तर पर मुख्य डाकपाल अधिकारी को यह शिकायत आप की फोटो प्रतियों के साथ भेज सके।

हमारे पास बहुत सारी पत्रिकाएं डाक कर्मचारी की इस टिप्पणी के साथ वापिस आ रही है, कि 'पते में पिता का नाम नहीं', 'इस पते पर नहीं रहता', 'पता अधूरा है', 'पिन कोड' बिना भी पत्रिका वापिस आ रही है। यदि आपके पते में उपरोक्त अशुद्धियाँ है तो लिखित रूप में महासभा कार्यालय में भेजें ताकि शुद्ध किया जा सके। हम आपको विश्वास दिलाते है कि प्रत्येक सदस्य को कार्यालय से प्रतिमाह 22 से 27 तिथि को पत्रिकाएं भेज दी जाती है।

(3) समाज के प्रबुद्ध लेखकों, विद्वानों से निवेदन है कि रचनाओं की छाया प्रति न भेजें, वास्तविक प्रति ही सुस्पष्ट, सुन्दर लेख में लिखकर या टाइप कराकर भेजें। वैवाहिक विज्ञापन एवं इसका शुल्क, अन्य लेख व प्रकाशन सम्बन्धी सभी प्रकार की सामग्री हर माह की 10 तारीख तक महासभा कार्यालय में अवश्य पहुंच जानी चाहिए।

कृपया ध्यान दें! बार बार निवेदन करने पर भी लेखक अपनी रचनाएँ अस्पष्ट हस्तलिखित तथा छोटे से कागज पर भेज रहे है। जिससे हमेशा पढ़ने में असुविधा हो रही है। ऐसे लेख प्रकाशित नहीं हो पाएंगे।

(4) आपसे यह भी निवेदन है कि प्रत्येक रचना के अंत में यह घोषणा अवश्य करें कि यह रचना मेरी मौलिक रचना है और अभी तक कहीं प्रकाशित या प्रसारित नहीं हुई है। यदि किसी अन्य स्रोत से ली गई है - तो उसका संदर्भ अवश्य दे तथा लेख के अन्त में अपना नाम, पता, फोन नम्बर हस्ताक्षर सहित अवश्य लिखें।

(5) पत्रिका के विषय में प्रबुद्ध लेखकों के सुझाव सादर आमंत्रित है।

(6) अस्वीकरण-पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के व्यक्तिगत विचार होते हैं। महासभा का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है।

- सम्पादक

इस पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों से सम्पादक अथवा महासभा का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। इसमें प्रकाशित सभी रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों, तथ्यों आदि की शुद्धता तथा मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

सम्पादकीय-------

प्रहलाद राय शर्मा (जांगिड) – सह संपादक

योग- स्वस्थ जीवन, संतुलित मन और सशक्त मानवता का आधार

योग भारत की प्राचीन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर है। यह केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के समन्वय की एक संपूर्ण जीवन-पद्धति है। हजारों वर्षों से भारतीय ऋषि-मुनियों ने योग के माध्यम से मानव जीवन को स्वस्थ, संतुलित और सार्थक बनाने का मार्ग प्रशस्त किया है। आज जब पूरा विश्व तनाव, अवसाद, अस्वस्थ जीवनशैली और विभिन्न प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं से जूझ रहा है, तब योग एक प्रभावी समाधान के रूप में सामने आया है।

योग की इसी वैश्विक उपयोगिता को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 दिसंबर, 2014 को हर वर्ष 21 जून को **"अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस"** के रूप में मनाने की घोषणा की। तब से प्रत्येक वर्ष विश्व के लगभग सभी देशों में यह दिवस उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। वर्ष 2026 में भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मानव स्वास्थ्य और वैश्विक कल्याण के संदेश को लेकर पूरे विश्व में मनाया जा रहा है।

'योग' शब्द संस्कृत धातु 'युज्' से बना है, जिसका अर्थ है – जोड़ना या मिलाना। योग का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप से जोड़ना है। योग शरीर, मन और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

योग केवल आसनों तक सीमित नहीं है। इसमें प्राणायाम, ध्यान, संयम, नैतिकता और आत्मानुशासन जैसे अनेक तत्व शामिल हैं। महर्षि पतंजलि ने अपने योगसूत्र में योग को **"चित्तवृत्ति निरोध"** अर्थात मन की चंचल वृत्तियों को नियंत्रित करने की प्रक्रिया बताया है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुरुआत: हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने संबोधन के दौरान योग दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा था। इस प्रस्ताव को विश्व के अनेक देशों का समर्थन प्राप्त हुआ।

11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। इस प्रस्ताव को 177 देशों का अभूतपूर्व समर्थन प्राप्त हुआ, जो संयुक्त राष्ट्र के इतिहास में सबसे अधिक समर्थित प्रस्तावों में से एक था। इसके बाद 21 जून 2015 को पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। भारत सहित विश्व के अनेक देशों में लाखों लोगों ने योगाभ्यास कर इस दिवस को ऐतिहासिक बना दिया।

21 जून को योग दिवस के लिए सबसे उपयुक्त तिथि माना गया, क्योंकि यह दिन वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है और इसे **ग्रीष्म अयनांत (Summer Solstice)** कहा जाता है। भारतीय परंपरा में इस दिन का विशेष आध्यात्मिक महत्व माना गया है। ऐसा माना जाता है कि इसी काल में आदियोगी भगवान शिव ने योग का ज्ञान सप्तऋषियों को प्रदान किया था।

योग भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग है। वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता और अनेक प्राचीन ग्रंथों में योग का विस्तृत वर्णन मिलता है। श्रीमद् भगवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का वर्णन करते हुए योग को जीवन का सर्वोत्तम मार्ग बताया है। भारतीय संस्कृति में योग केवल स्वास्थ्य प्राप्ति का साधन नहीं बल्कि आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग भी माना गया है।

महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग का वर्णन करते हुए योग के प्रमुख आठ अंग बताए है जो इस प्रकार है- **यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि।** इन आठ अंगों के माध्यम से व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास की ओर अग्रसर होता है। योग नियमित रूप से करने पर शरीर को अनेक लाभ प्राप्त होते है जिनमे प्रमुख इस प्रकार है।

1. योग शरीर को स्वस्थ बनाता है। यह शरीर की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है तथा लचीलापन बढ़ाता है।

2. योग रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाता है जिससे अनेक बीमारियों से बचाव होता है।

3. योग से हृदय के स्वास्थ्य में सुधार होता है। प्राणायाम और ध्यान रक्तचाप को नियंत्रित करने तथा हृदय रोगों के जोखिम को कम करने में सहायक होते हैं।

4. यह मधुमेह नियंत्रण में सहायकहोता है। नियमित योगाभ्यास रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित रखने में मदद करता है।

5. योग मोटापा कम करता है। योग शरीर की अतिरिक्त चर्बी कम करने तथा वजन नियंत्रित रखने में सहायक है।

योग के कई मानसिक लाभ है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में मानसिक तनाव एक गंभीर समस्या बन चुका है। योग मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में अत्यंत प्रभावी है। योग मन को शांत करता है और तनाव कम करता है।

ध्यान और प्राणायाम से स्मरण शक्ति तथा एकाग्रता बढ़ती है। योग सकारात्मक सोच विकसित करता है तथा अवसाद और चिंता जैसी समस्याओं को कम करने में सहायता करता है। योग व्यक्ति को आत्मनियंत्रण और भावनात्मक स्थिरता प्रदान करता है। विद्यार्थियों के जीवन में योग का विशेष महत्व है। योग एकाग्रता बढ़ाता है। स्मरण शक्ति को मजबूत करता है। परीक्षा तनाव कम करता है। आत्मविश्वास बढ़ाता है। अनुशासन विकसित करता है। आज अनेक विद्यालयों में योग शिक्षा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है।

महिलाओं के स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन के लिए योग अत्यंत लाभकारी है। यह हार्मोनल संतुलन बनाए रखने में सहायता करता है। योग से गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य लाभ मिलता है। तनाव और थकान में कमी आती है। हड्डियों और मांसपेशियों की मजबूती होती है। बढ़ती उम्र में स्वास्थ्य को संरक्षण मिलता है।

वृद्धजनों के लिए योग करना अति आवश्यक है। बढ़ती उम्र में शरीर और मन दोनों को स्वस्थ रखने के लिए योग एक प्रभावी उपाय है। जोड़ों के दर्द में राहत। संतुलन और लचीलापन बढ़ता है। रक्तचाप नियंत्रण में सहायता। मानसिक शांति और सकारात्मकता प्राप्त होती है।

कोविड-19 महामारी के दौरान योग की उपयोगिता विश्वभर में और अधिक स्पष्ट हुई। घरों में रहकर लोगों ने योग और प्राणायाम का अभ्यास किया जिससे मानसिक तनाव कम हुआ तथा स्वास्थ्य बेहतर बना रहा। योग ने यह सिद्ध किया कि स्वस्थ जीवनशैली और मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली के निर्माण में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

आज योग भारत की सीमाओं से निकलकर विश्वव्यापी आंदोलन बन चुका है। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, जापान, ऑस्ट्रेलिया और अन्य अनेक देशों में लाखों लोग नियमित रूप से योग करते हैं। विश्व के प्रमुख शहरों में योग केंद्र स्थापित हो चुके हैं। अनेक विश्वविद्यालयों और चिकित्सा संस्थानों में योग पर शोध कार्य किए जा रहे हैं। योग ने भारत की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर नई प्रतिष्ठा प्रदान की है।

योग की पर्यावरण के संरक्षण मे भी महत्वपूर्ण भूमिका है। योग केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य की बात नहीं करता, बल्कि प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने की भी प्रेरणा देता है। योग सिखाता है कि मनुष्य और प्रकृति एक-दूसरे के पूरक हैं। पर्यावरण संरक्षण, सादगीपूर्ण जीवन और प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग का संदेश भी योग की मूल भावना में निहित है।

योग को जीवन का हिस्सा बनाने की आवश्यकता है। योग दिवस केवल एक दिन का आयोजन नहीं है। इसका उद्देश्य लोगों को नियमित योगाभ्यास के लिए प्रेरित करना है। यदि प्रतिदिन 20 से 30 मिनट योग किया जाए तो जीवन में सकारात्मक परिवर्तन अनुभव किए जा सकते हैं। योग को जीवन का हिस्सा बनाने के लिए आवश्यक है कि हम इसका नियमित अभ्यास करे। संतुलित आहार ग्रहण करे। सकारात्मक सोच रखे। अनुशासित दिनचर्या होनी चाहिये। योग के साथ ध्यान और प्राणायाम का समिश्रण होना चाहिये।

योग भारत की ऐसी अमूल्य देन है जिसने सम्पूर्ण मानवता को स्वस्थ जीवन का मार्ग दिखाया है। यह भारत की सांस्कृतिक शक्ति, आध्यात्मिक परंपरा और वैज्ञानिक सोच का अद्भुत संगम है। आज जब पूरी दुनिया स्वास्थ्य संकट, मानसिक तनाव और जीवनशैली संबंधी रोगों से जूझ रही है, तब योग एक सरल, सस्ता और प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि मानव कल्याण का वैश्विक अभियान है। यह दिवस हमें स्वस्थ शरीर, शांत मन और संतुलित जीवन की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। योग व्यक्ति, समाज और राष्ट्र—तीनों के विकास का आधार बन सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम योग को केवल एक दिवस तक सीमित न रखें, बल्कि इसे अपनी दैनिक जीवनचर्या का हिस्सा बनाएं। नियमित योगाभ्यास के माध्यम से हम स्वस्थ, खुशहाल और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

यही अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का वास्तविक उद्देश्य और संदेश है—

"योग से स्वास्थ्य, योग से संतुलन और योग से मानवता का कल्याण।"

प्रधान की कलम से.............

महासभा प्रधान- रामपाल शर्मा

प्रिय समाज बंधुओं,

यह माह भारतीय संस्कृति, सामाजिक चेतना, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता तथा आध्यात्मिक साधना की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह महिना अनेक अंतरराष्ट्रीय दिवसों, राष्ट्रीय महत्व के अवसरों तथा धार्मिक पर्वों से परिपूर्ण है। ये दिवस केवल कैलेंडर की तिथियां नहीं हैं, बल्कि हमें अपने कर्तव्यों, संस्कारों और सामाजिक उत्तरदायित्वों का स्मरण कराने वाले प्रेरणा-पर्व हैं।

प्रधान,रामपाल शर्मा

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की ओर से मैं सभी समाज बंधुओं से आग्रह करता हूँ कि वे इन अवसरों को केवल औपचारिक रूप से न मनाकर, इनके मूल संदेश को अपने जीवन में आत्मसात करें। साथ ही समाज की एकता, संगठन और संस्कारों की रक्षा के लिए महासभा से अधिकाधिक संख्या में जुड़कर समाज को मजबूत बनाने में अपना योगदान दें।

विश्व पर्यावरण दिवस संपूर्ण विश्व को प्रकृति संरक्षण का संदेश देता है। आज जलवायु परिवर्तन, जल संकट, प्रदूषण और जैव विविधता के विनाश जैसी समस्याएं मानवता के सामने गंभीर चुनौती बन चुकी हैं।

भारतीय संस्कृति में वृक्षों, नदियों और प्रकृति को देवतुल्य माना गया है। पीपल, बरगद, तुलसी और नीम जैसे वृक्षों की पूजा हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण केवल वैज्ञानिक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि हमारा धार्मिक और सांस्कृतिक कर्तव्य भी है। समाज के प्रत्येक परिवार को कम से कम एक पौधा लगाने और उसकी देखभाल करने का संकल्प लेना चाहिए।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस हमें सुरक्षित और पौष्टिक भोजन के महत्व की याद दिलाता है। आज भी दुनिया में करोड़ों लोग कुपोषण और खाद्य असुरक्षा से जूझ रहे हैं। भारत कृषि प्रधान देश है। अन्नदाता किसानों के सम्मान और खाद्यान्न की बर्बादी रोकना हम सभी का कर्तव्य है। विवाह समारोहों और सामाजिक आयोजनों में भोजन की बर्बादी रोकने की दिशा में समाज को विशेष प्रयास करने चाहिए।

रक्तदान को महादान कहा गया है। एक यूनिट रक्त किसी व्यक्ति का जीवन बचा सकता है। जांगिड समाज सदैव सेवा और परोपकार की भावना के लिए जाना जाता रहा है। युवाओं को नियमित रक्तदान के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। प्रत्येक जिले में रक्तदान शिविर आयोजित करना समय की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति में **माता-पिता और बुजुर्गों** को देवतुल्य माना गया है। आधुनिक जीवनशैली के कारण कहीं-कहीं बुजुर्गों की उपेक्षा की घटनाएं सामने आती हैं। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि परिवारों में बुजुर्गों को सम्मान, स्नेह और सुरक्षा मिले। उनके अनुभव समाज की अमूल्य धरोहर हैं।

भारत की प्राचीन **योग परंपरा** आज संपूर्ण विश्व को स्वास्थ्य और मानसिक शांति का मार्ग दिखा रही है। योग केवल व्यायाम नहीं बल्कि शरीर, मन और आत्मा का समन्वय है। नियमित योगाभ्यास से तनाव कम होता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और जीवन में सकारात्मकता आती है। महासभा के सभी सदस्य अपने-अपने क्षेत्रों में योग शिविर आयोजित करने का प्रयास करें।

संगीत भारतीय संस्कृति की आत्मा है। संगीत मनुष्य को आध्यात्मिक शांति प्रदान करता है और सामाजिक समरसता को बढ़ाता है। हमें अपनी लोक संस्कृति, भजन, कीर्तन और पारंपरिक संगीत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए।

नशा- व्यक्ति, परिवार और समाज तीनों का विनाश करता है। युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति अत्यंत चिंताजनक है। समाज के सभी जागरूक नागरिकों को नशा मुक्त भारत और नशा मुक्त समाज के लिए अभियान चलाना चाहिए।

शराब, तंबाकू और अन्य नशीले पदार्थों से दूर रहकर स्वस्थ समाज का निर्माण करें। युवा शक्ति को शिक्षा, खेल और राष्ट्र निर्माण की दिशा में प्रेरित किया जाना चाहिए।

भारत के महान **सांख्यिकीविद् प्रशांत चंद्र महालनोबिस** की जयंती पर यह दिवस मनाया जाता है। यह दिवस देश के विकास में आंकड़ों और वैज्ञानिक योजना के महत्व को रेखांकित करता है।

यद्यपि **राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस 1 जुलाई को मनाया जाता है,** जून के अंतिम सप्ताह में स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन प्रारंभ हो जाता है। समाज के चिकित्सकों का सम्मान और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है।

इस माह में अनेक धार्मिक एवं आध्यात्मिक पर्व हैं जो भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपरा को सुदृढ़ करते हैं। **निर्जला एकादशी** को सभी एकादशियों का फल प्रदान करने वाली एकादशी माना गया है। यह संयम, तप और आत्मनियंत्रण का संदेश देती है। गंगा दशहरा पवित्र गंगा के पृथ्वी पर अवतरण का स्मरण कराता है। यह पर्व जल संरक्षण और नदियों की स्वच्छता का संदेश भी देता है।

ज्येष्ठ पूर्णिमा का दिन दान, तप, सत्संग और आध्यात्मिक साधना के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। भारतीय संत परंपरा ने सदैव समाज को नैतिकता और सेवा का मार्ग दिखाया है।

गायत्री जयंती भी इसी महीने मे मनाई जाती है। गायत्री मंत्र भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का अमूल्य रत्न है। यह ज्ञान, विवेक और आत्मिक उन्नति का संदेश देता है। गायत्री साधना से व्यक्ति के भीतर सकारात्मक ऊर्जा, आत्मविश्वास और नैतिक शक्ति का विकास होता है।

प्रिय समाज बंधुओं, किसी भी समाज की प्रगति केवल आर्थिक विकास से नहीं होती, बल्कि उसके नैतिक और सामाजिक मूल्यों से होती है। आज हमें कुछ सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संगठित अभियान चलाने की आवश्यकता है।

दहेज सामाजिक अभिशाप है। विवाह को प्रदर्शन और आर्थिक बोझ का माध्यम नहीं बनने देना चाहिए। विवाह, मृत्युभोज तथा अन्य आयोजनों में अनावश्यक खर्च से बचना चाहिए। बचाया गया धन शिक्षा और समाज सेवा में लगाया जा सकता है। बालिकाओं की शिक्षा पर ध्यान देना समय की आवश्यकता है। शिक्षित समाज ही विकसित समाज बन सकता है।

जातीय, क्षेत्रीय और व्यक्तिगत मतभेदों से ऊपर उठकर समाजहित को प्राथमिकता देनी चाहिए। नई पीढ़ी को आधुनिक शिक्षा के साथ भारतीय संस्कृति, परिवार व्यवस्था और नैतिक मूल्यों से जोड़ना आवश्यक है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा समाज के संगठन, शिक्षा, प्रतिभा सम्मान, सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। किसी भी संगठन की शक्ति उसके सदस्यों की सक्रिय भागीदारी में निहित होती है।

मैं समाज के प्रत्येक परिवार, युवा, महिला, शिक्षाविद्, व्यवसायी, कर्मचारी और जनप्रतिनिधि से आग्रह करता हूँ कि वे महासभा की सदस्यता ग्रहण करें तथा अपने परिवार और परिचितों को भी जोड़ें।

यदि प्रत्येक सदस्य कम से कम पांच नए सदस्यों को महासभा से जोड़ने का संकल्प ले, तो समाज की संगठनात्मक शक्ति कई गुना बढ़ सकती है। एक सशक्त संगठन ही समाज के हितों की प्रभावी ढंग से रक्षा कर सकता है तथा नई पीढ़ी के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

अंतरराष्ट्रीय दिवस, राष्ट्रीय अवसर और धार्मिक पर्व हमें प्रकृति संरक्षण, स्वास्थ्य, सेवा, योग, सामाजिक उत्तरदायित्व, आध्यात्मिक उन्नति और राष्ट्रीय चेतना का संदेश देते हैं। आइए, हम सभी इन अवसरों से प्रेरणा लेकर एक शिक्षित, संगठित, संस्कारित और सशक्त समाज के निर्माण का संकल्प लें।

"संगठन में शक्ति है, संस्कारों में समृद्धि है और सेवा में समाज का उज्ज्वल भविष्य निहित है।"

******

कृतज्ञता, धन्यवाद एवम् आभार

समाज के प्रसिद्ध उद्योगपति (माइक्रो मैक्स कंपनी), महासभा के वरिष्ठ संरक्षक सदस्य, मार्गदर्शक एवं समर्पित भामाशाह आदरणीय **श्रीमान पुरषोतम लाल जी शर्मा गुडगाँव** (जिनको हम सब पी. एल. शास्त्री जी के नाम से जानते है) ने सदैव महासभा के हितों को सर्वोपरि रखते हुए तन, मन और धन से समय समय पर अपना अमूल्य योगदान प्रदान करते रहते है। इसी क्रम में उन्होंने हाल ही में महासभा भवन, **मुंडका के लिए पांच 43 इंच के एल. ई. डी. टीवी भेंट कर** महासभा भवन को और अधिक सुसज्जित करने एवं वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तथा महासभा कार्यालय एवं भवन संचालन को और अधिक सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया है।

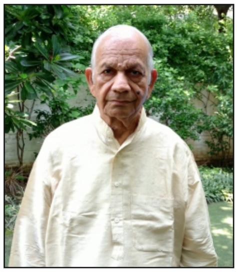

इसके पूर्व भी आपके द्वारा महासभा को **रूपये 5,05,551/- के अलावा 22 स्प्लिट ए.सी. (1.5 टन क्षमता), 6 सेकण्ड हैंड ए.सी. (2 टन क्षमता), 2 एल. ई. डी. टीवी तथा 2 एयर कूलर** प्रदान किए जा चुके हैं। आपका यह अनुपम सहयोग समाज सेवा, उदारता एवं समर्पण का प्रेरणादायक उदाहरण है।

आप जैसे भामाशाहों के सहयोग से ही महासभा भवन की सुविधाओं का विस्तार हुआ है तथा समाज के विभिन्न कार्यक्रमों को सुचारु रूप से संचालित करने में अत्यंत सहायता प्राप्त हुई है। आपका यह योगदान केवल भौतिक संसाधनों तक सीमित नहीं है, बल्कि आपके अनुभव, मार्गदर्शन एवं समाज के प्रति समर्पण ने महासभा को निरन्तर नई दिशा और ऊर्जा प्रदान की है।

अखिल भारतीय जांगिड महासभा परिवार आपकी उदार भावना एवं सतत सहयोग के लिए हृदय से आभारी है तथा ईश्वर से आपके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं यशस्वी जीवन की मंगलकामना करता है। हमें विश्वास है कि आपका स्नेह, मार्गदर्शन और सहयोग भविष्य में भी समाज एवं महासभा को इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा।

रामपाल शर्मा
राष्ट्रीय प्रधान, महासभा

महासभा द्वारा संचालित अंगिरस भारती पब्लिक स्कूल बांकनेर के स्कूल भवन में नव निर्माण कार्य हेतु नींव का मुहूर्त विधिवत पूजा अर्चना के साथ सम्पन्न

महासभा प्रधान की अध्यक्षता में दिनांक 7 जून, 2026 को आयोजित की गई मीटिंग में कार्यकारी प्रधान, महामंत्री, कोषाध्यक्ष एवं स्कूल भवन निर्माण कमेटी सदस्यों तथा विभिन्न पदाधिकारियों एवं समाज बन्धुओं की उपस्थिति में लिए गये निर्णयानुसार दिनांक 17 जून, 2026 को दोपहर 12.15 बजे अंगिरस भारती पब्लिक स्कूल बांकनेर - नरेला के स्कूल भवन में नव निर्माण एवम पूर्व भवन का सम्पूर्ण जीर्णोद्धार कार्य करवाने हेतु महासभा के कार्यकारी प्रधान लादू राम जांगिड के कर कमलों से महासभा महामंत्री, कोषाध्यक्ष, स्कूल भवन निर्माण कमेटी सदस्यों, दिल्ली प्रदेश महामंत्री, विभिन्न पदाधिकारियों एवं बांकनेर के प्रबुद्ध समाज बंधुओं के सानिध्य में विधिवत पूजा अर्चना के साथ नींव का मुहूर्त सम्पन्न हुआ।

स्कूल भवन के नवनिर्माण कार्य के लिए किये गये नींव के मुहूर्त के अवसर पर शिक्षा को बढ़ावा देने के इस उत्कृष्ट प्रयास तथा समाज उत्थान के कार्य में जो महानुभाव साक्षी बने उनमे मुख्य रूप से गंगादीन जांगिड अध्यक्ष पहाड़गंज विश्वकर्मा मंदिर, सुरेशकुमार टाइगर सदस्य उच्च स्तरीय कमेटी, अनिल कुमार जांगिड़ कोषाध्यक्ष महासभा, सुरेंद्र वत्स चेयरमैन व लोकेश जांगिड वाईस चेयरमैन अंगिरस भारती पब्लिक स्कूल बांकनेर, ऋषि प्रकाश जांगिड़ कार्यालय प्रभारी महासभा, कंवर सिंह एवं नरेशकुमार जांगड़ा जिला अध्यक्ष बांकनेर स्कूल निर्माण कमेटी सदस्य, सत्यपाल वत्स अध्यक्ष आध्यात्मिक प्रकोष्ठ महासभा, देशराज जांगिड महासचिव पहाड़गंज विश्वकर्मा मंदिर, रामकिशन जांगिड सह कोषाध्यक्ष महासभा, ब्रह्मानन्द जांगिड प्रदेश महामंत्री दिल्ली और महेशकुमार जांगिड़ के अलावा भी महासभा एवं दिल्ली प्रदेश के विभिन्न पदाधिकारी गण तथा बांकनेर समाज के प्रबुद्ध गणमान्य बंधु उपस्थित रहे।

महासभा प्रधानजी के वर्तमान कार्यकाल के विभिन्न लक्ष्यों में से यह कार्य सर्वोपरि लक्ष्य था जिसे 17 जून , 2026 को मूर्त रूप में परिणित करने का आगाज हो गया है। विपुल धन्यवाद।

सांवरमल जांगिड , महामंत्री – महासभा

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

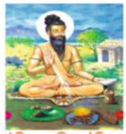
अंगिराऽसि जांगिड

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सांवरमल जांगिड	अरुण कुमार जांगिड
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
9844026161	9414003411	9810988553

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2979/2026 **दिनांक 13/06/2026**

प्रतिष्ठा में,

महासभा कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारीगण,
एवं सम्मानीय समस्त प्रदेशाध्यक्ष / प्रदेश प्रभारी,
अखिल भारतीय जांगिड ब्राहमण महासभा-दिल्ली.

अखिल भारतीय जांगिड ब्राहमण महासभा दिल्ली के सम्माननीय समस्त प्रदेशाध्यक्षों, प्रभारियों एवं महासभा कार्यकारिणी के पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आगामी त्रैमासिक मीटिंग **प्रसिद्ध उद्योगपति, भामाशाह एवं मुख्य वक्ता श्री सुखदेव जी जांगिड के मुख्य आतिथ्य तथा महासभा प्रधान श्री रामपाल जांगिड की अध्यक्षता में दिनांक 05 जुलाई, 2026 को प्रातः 9 बजे से पैलेस ग्राउंड, गेट नम्बर 6, मेकरी सर्किल, बेल्लारी रोड, अरमाने नगर, बेंगलुरू (कर्नाटक) में आयोजित होने जा रही है**

उक्त त्रैमासिक मीटिंग का एजेंडा निम्नानुसार है:-

1. फरीदाबाद त्रैमासिक मीटिंग **दिनांक 05 अप्रैल 2026 में** लिए गये निर्णयों का अनुमोदन ।
2. महासभा संगठन का विस्तार करने के लिये नई प्रदेश सभाओं का गठन करने बाबत चर्चा ।
3. महासभा के पदाधिकारियों एवं अधीनस्थ सभाओं से महासभा द्वारा जारी आदेशों एवं दिशा - निर्देशों तथा निर्धारित लक्ष्यों का कड़ाई से पालन करवाने बाबत चर्चा ।
4. सामाजिक सुधार हेतु शादी-विवाह, भात, जन्मोत्सव, मृत्यु भोज, सालगिरह, प्रेवेडिंग सेरेमनी और अन्य सामाजिक आयोजनों में फिजूलखर्ची रोकने एवं दहेज प्रथा, बाल विवाह, एवं शराब, तम्बाकू एवं ड्रग्स जैसी नशे की कुरीतियों के प्रति जागरूकता अभियान चलाने बाबत चर्चा ।
5. महासभा अंतर्गत युवा प्रकोष्ठ, महिला प्रकोष्ट एवं सदस्यता मिशन की गतिविधियों की प्रगति बाबत चर्चा ।
6. समाज उत्थान एवं महासभा के लिए अन्य कोई सुझाव प्रधान जी की अनुमति से ....

अतः महासभा कार्यकारिणी के समस्त पधाधिकारीगण एवं समस्त प्रदेश अध्यक्ष / प्रदेश प्रभारी उक्त त्रैमासिक मीटिंग में ससम्मान सादर आमंत्रित हैं, कृपया बैठक में समय पर पधार कर उपरोक्त एजेंडा बिन्दुओं पर समाज हित में अपने सुझाव देकर सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए महासभा को सहयोग प्रदान करें ।

आवश्यक सुचना :- मीटिंग में पधारने वाले महासभा कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारीयों के लिए दिनांक **04 जुलाई को ठहरने एवं रात्रि भोजन की व्यवस्था तथा 5 जुलाई को सुबह के नास्ते कि** व्यवस्था **होटल अक्षय ओरा, 06 कालिदास मार्ग, गाँधी नगर, बेंगलुरु** में तथा **05 जुलाई** को समारोह के उपरांत **दोपहर के भोजन की व्यवस्था समारोह स्थल** पर की गई है । **मीटिंग स्थल एवं होटल कि लोकेशन** महासभा कार्यकारिणी ग्रुप में पहले ही भेजी जा चुकी है ।

धन्यवाद ।

(सांवर मल जांगिड)
महामंत्री - महासभा

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

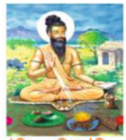
अंगिराऽसि जांगिड

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सांवरमल जांगिड	अरुण कुमार जांगिड
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
9844026161	9414003411	9810988553

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2989/2026 　　　　　　　　　　　　दिनांक 17/06/2026

*** महासभा आदेश ***

प्रतिष्ठा में,

सम्माननीय समस्त प्रदेशाध्यक्ष / प्रदेश प्रभारी,
अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

विषय:- **प्रदेश सभाओं के अधीनस्थ इकाईयों के चुनाव में चुनाव व्यवस्था शुल्क बाबत स्पष्टीकरण।**

सन्दर्भ:- महासभा के पूर्व पत्रांक क्रमांक।- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2877/2025 दिनांक 26/12/2025

महोदय,

उपरोक्त विषयांतर्गत एवं संदर्भित पत्र के सम्बन्ध में लेख है कि अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली की नडियाद में दिनांक 07 दिसंबर 2025 को आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की त्रैमासिक मीटिंग में लिए गये निर्णयानुसार प्रदेश सभाओं के अधीनस्थ जिला, तहसील, ब्लाक एवं शाखा सभाओं के अध्यक्ष पद के निर्वाचन में जमा की जाने वाली चुनाव व्यवस्था शुल्क राशी नकद के स्थान पर केवल **"डिमांड ड्राफ्ट"** द्वारा ही जमा करने के निर्देश जारी किये गये थे ।

परन्तु इस विषय पर प्रदेशाध्यक्षों से प्राप्त सुझावों एवं अनेक जिला सभाओं मे बैंक खाते नही होने के कारण महासभा प्रधान जी के आदेशानुसार यह निर्णय लिया गया है कि प्रदेश सभाओं द्वारा सम्पन्न करवाए जाने वाले जिला अध्यक्षों के चुनाव में चुनाव व्यवस्था शुल्क राशी **केवल डिमांड ड्राफ्ट से** तथा शेष अधीनस्थ **तहसील, ब्लाक एवं शाखा सभाओं** के चुनाव मे चुनाव व्यवस्था शुल्क राशी **नकद** में भी **जमा** की जा सकेगी । उक्त आदेश को तुरंत प्रभाव से लागू करते हुए आपको निर्देशित किया जाता है की अधीनस्थ सभाओं के चुनाव में चुनाव व्यवस्था शुल्क राशी जमा करने के सम्बन्ध में जारी उक्त निर्देशों की पालना सुनिश्चित करें ।

धन्यवाद ।

प्रतिलिपि:-
श्री प्रवीण कुमार शर्मा,
मुख्य चुनाव अधिकारी महासभा, दिल्ली
को सूचनार्थ एवं चुनाव निर्देशिका 2024 में उक्त निर्णय को सम्मिलित करने बावत ।

(सांवरमल जांगिड)
महामंत्री - महासभा

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

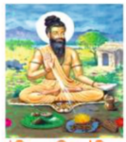

अंगिराऽसि जंगिड

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सांवरमल जांगिड	अरुण कुमार जांगिड
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
9844026161	9414003411	9810988553

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2990/2026 दिनांक 17/06/2026

*** महासभा आदेश ***

प्रेषित,

सम्माननीय समस्त प्रदेशाध्यक्ष प्रदेश प्रभारी,
अखिल भारतीय जांगिड ब्राहमण महासभा -दिल्ली

विषय :- **महासभा द्वारा जारी रसीद बुकों के तहत धनराशी प्राप्त करने वाले पदाधिकारीयो द्वरा रसीद पर अपने हस्ताक्षर के साथ सदस्यता क्रमांक एवं मोबाइल नम्बर भी अंकित करने बाबत ।**

महोदय,

महासभा के अधीनस्थ कार्यरत पंजीकृत सभाओं को चुनाव सम्पन्न करवाने एवं स्थानीय विभिन्न सामाजिक कार्यों का आयोजन करने के लिए धनराशी संग्रह करने हेतु महासभा द्वारा प्रत्येक प्रदेशाध्यक्षों को समय- समय पर रसीद बुकें आवंटित की जाती है। परन्तु महासभा में जमा होने वाली भरी हुई रसीद बुकों की (विभिन्न महासभा पदाधिकारियों से प्राप्त शिकायतों के बाद) जाँच करने पर यह पाया गया है कि महासभा द्वारा जारी रसीद बुकों के तहत धनराशी प्राप्त करने वाले पदाधिकारी द्वरा रसीद पर अपने हस्ताक्षर के साथ सदस्यता क्रमांक एवं मोबाइल नम्बर अंकित नही करने के कारण महासभा में प्राप्त शिकायतों का समाधान करने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है ।

अत: इस सम्बन्ध में महासभा प्रधान जी के आदेशानुसार समस्त प्रदेशाध्यक्षों को निर्देशित किया जाता है की भरी हुई रसीद बुकों को महासभा में वापस जमा करवाने से पूर्व **प्रत्येक रसीद बुक पर धनराशी प्राप्त करने वाले सम्बन्धित पदाधिकारी के हस्ताक्षर के साथ उसका सदस्यता क्रमांक एवं मोबाइल नम्बर** भी उल्लेखित करना सुनिश्चित करें तथा उक्त आदेश को तुरंत प्रभाव से लागू किया जाता है ।

धन्यवाद ।

(सांवरमल जांगिड)
महामंत्री महासभा

जय श्री विश्वकर्मणे नमः

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली

रानी खेड़ा रोड़, मुंडका मेट्रो स्टेशन के पास,
मुंडका, नई दिल्ली – 110041
दूरभाष : 9990070023
पंजीकरण संख्या एस. – 27 / 1919

अंगिराऽसि जांगिड

Website: www.abjbmahasabha.com, E-mail: Jangid.mahasabha@gmail.com

रामपाल शर्मा	सांवरमल जांगिड	अरुण कुमार जांगिड
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष
9844026161	9414003411	9810988553

क्रमांक :- अ.भा.जां.ब्रा.म.-2993/2026 — दिनांक 18/06/2026

*** संविधान संशोधन कमेटी का गठन ***

सम्मानीय महोदय,

मुझे, आपको सूचित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है की महासभा एवं समाज के प्रति आपका अनुकरणीय योगदान, समाज में सक्रियता, शेक्षणिक योग्यता एवं महासभा संविधान से सम्बन्धित विशेष अनुभव को ध्यान में रखते हुए मैं, महासभा प्रधान रामपाल शर्मा **"महासभा संविधान संशोधन कमेटी"** का गठन करते हुए आप सभी को उक्त कमेटी का सदस्य मनोनीत करता हूँ ।

आशा करता हूँ की आप सभी महासभा संविधान का पालन करते हुए अपनी सकारात्मक सोच एवं निष्पक्ष भाव के साथ महासभा के प्रचलित संविधान **दिनांक 27/01/2013** के बाद महासभा कार्यकारिणी द्वारा समय समय पर संविधान में संशोधन करने हेतु लिए गये निर्णयों एवं महासभा सदस्यों से आमंत्रित सुझावों का गहन अध्ययन एवं समीक्षा कर महासभा के वर्तमान संविधान में आज की आवश्यकतानुसार अति आवश्यक संशोधनों का समावेश करने के लिए कमेटी की सर्व सम्मत रिपोर्ट **दिनांक 15/10/2026** तक महासभा को प्रेषित करने का कष्ट करेंगें । साथ ही कमेटी को उक्त कार्य में महासभा की और से जो भी दस्तावेज / रिकोर्ड / जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए **श्री सांवर मल जांगिड सीकर, महासभा महामंत्री**, **समन्वयक (Coordinator) के रूप में** कमेटी को पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे ।

उक्त कमेटी में निम्न पदाधिकारीगण होंगे ।

1. श्री मोहन लाल दायमा	नासिक	सदस्य	- पूर्व महामंत्री महासभा एवं कोर कमेटी सदस्य
2. श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा	अहमदाबाद	सदस्य	- सदस्य उच्च स्तरीय कमेटी
3. श्री श्रीगोपाल चोयल	अजमेर	अध्यक्ष	- मुख्य सलाहकार
4. श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स	दिल्ली	सदस्य	- क़ानूनी सलाहकार
5. श्री कृष्णदत्त शर्मा	दिल्ली	सदस्य	- पूर्व मुख्य चुनाव अधिकारी
6. श्री प्रवीण शर्मा	नीमच	सदस्य	- मुख्य चुनाव अधिकारी
7. श्री प्रभुदयाल जांगिड	इंदौर	सदस्य	- प्रदेश अध्यक्ष मध्यप्रदेश
8. श्री गिरधारी लाल जांगिड	धारूहेड़ा रेवाड़ी	सदस्य	- संरक्षक महासभा
9. श्री बसंत कुमार जांगिड	ब्यावर	सदस्य	- मुख्य चुनाव प्रभारी राजस्थान

शुभकामनाओं सहित ।

प्रतिलिपि :- सम्मानीय समस्त कमेटी सदस्यों को सूचनार्थ
एवं अविलम्ब आवश्यक कार्यवाही शुरू करने हेतु ।

रामपाल शर्मा

(रामपाल जांगिड)
राष्ट्रीय प्रधान - महासभा

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस का महत्व

महासभा के पूर्व प्रधान, कैलाश चंद्र बरनेला

मानव जीवन के लिए भोजन उतना ही आवश्यक है जितना कि वायु और जल। किंतु केवल भोजन प्राप्त होना ही पर्याप्त नहीं है, उसका सुरक्षित, स्वच्छ और गुणवत्तापूर्ण होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। यदि भोजन दूषित, मिलावटी या असुरक्षित हो तो वह स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन सकता है। इसी महत्वपूर्ण विषय के प्रति विश्व समुदाय को जागरूक करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 7 जून को **विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस (World Food Safety Day)** मनाया जाता है।

यह दिवस **संयुक्त राष्ट्र और विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)** के सहयोग से खाद्य सुरक्षा के महत्व को रेखांकित करता है। खाद्य सुरक्षा केवल स्वास्थ्य का विषय नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास, सामाजिक कल्याण, कृषि उत्पादन, व्यापार और पर्यावरण से भी जुड़ी हुई है। भारत जैसे विशाल और जनसंख्या बहुल देश में खाद्य सुरक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस का इतिहास:- संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2018 में 7 जून को विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया था। इसके बाद वर्ष 2019 से यह दिवस विश्वभर में मनाया जाने लगा। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य लोगों को यह बताना है कि भोजन की सुरक्षा केवल सरकारों या खाद्य उत्पादकों की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि उत्पादन से लेकर उपभोग तक की पूरी श्रृंखला में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र का खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) इस दिवस के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। हर वर्ष एक विशेष थीम के माध्यम से खाद्य सुरक्षा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

खाद्य सुरक्षा का अर्थ:- खाद्य सुरक्षा का तात्पर्य ऐसे भोजन से है जो उपभोग के लिए सुरक्षित हो तथा उसमें किसी प्रकार के हानिकारक जीवाणु, रसायन, विषैले तत्व या अन्य दूषित पदार्थ न हों। सुरक्षित भोजन व्यक्ति को पोषण प्रदान करता है, रोगों से बचाता है और स्वस्थ जीवन जीने में सहायता करता है। भोजन की स्वच्छता, खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता, मिलावट की रोकथाम, उचित भंडारण, सुरक्षित परिवहन, खाद्य मानकों का पालन और उपभोक्ता जागरूकता खाद्य सुरक्षा के अंतर्गत शामिल हैं।

आज के समय में खाद्य सुरक्षा एक वैश्विक चिंता का विषय बन चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हर वर्ष करोड़ों लोग दूषित भोजन के कारण बीमार पड़ते हैं। अनेक मामलों में यह बीमारी गंभीर रूप धारण कर मृत्यु का कारण भी बन जाती है।

खाद्य सुरक्षा आवश्यक है क्योंकि:- 1. स्वास्थ्य की रक्षा: -असुरक्षित भोजन से फूड पॉइजनिंग, डायरिया, टाइफाइड, हैजा, हेपेटाइटिस और अन्य अनेक रोग हो सकते हैं। सुरक्षित भोजन इन बीमारियों से बचाव करता है।

2. बच्चों का विकास:-बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए पौष्टिक और सुरक्षित भोजन अत्यंत आवश्यक है। दूषित भोजन उनके स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है।

3. आर्थिक विकास:-खाद्य जनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य सेवाओं पर भारी खर्च आता है तथा कार्य क्षमता में कमी आती है। सुरक्षित खाद्य प्रणाली अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाती है।

4. अंतरराष्ट्रीय व्यापार:-आज खाद्य पदार्थों का वैश्विक व्यापार तेजी से बढ़ रहा है। यदि किसी देश के खाद्य उत्पाद सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण हैं तो उसकी अंतरराष्ट्रीय बाजार में विश्वसनीयता बढ़ती है।

खाद्य सुरक्षा के सामने चुनौतियाँ:- विश्वभर में खाद्य सुरक्षा को लेकर कई चुनौतियाँ मौजूद हैं जिनमे निम्न चुनौतियाँ मुख्य रूप से है।

मिलावट:-दूध, घी, मसाले, मिठाइयाँ और अन्य खाद्य पदार्थों में मिलावट एक गंभीर समस्या है। लाभ कमाने की लालसा में कुछ लोग खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता से समझौता करते हैं।

रासायनिक प्रदूषण:-कीटनाशकों, उर्वरकों और अन्य रसायनों का अत्यधिक उपयोग खाद्य पदार्थों को प्रभावित करता है।

जलवायु परिवर्तन:-बढ़ते तापमान, बाढ़ और सूखे जैसी परिस्थितियाँ खाद्य उत्पादन और सुरक्षा दोनों को प्रभावित करती हैं।

अस्वच्छ भंडारण:-भोजन को उचित तापमान और स्वच्छ वातावरण में न रखने से उसमें जीवाणु पनप सकते हैं।

जागरूकता की कमी:-कई बार उपभोक्ता स्वयं खाद्य सुरक्षा के नियमों की जानकारी नहीं रखते, जिससे स्वास्थ्य संबंधी जोखिम बढ़ जाते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका:- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। संगठन विभिन्न देशों को तकनीकी सहायता प्रदान करता है तथा खाद्य जनित रोगों की रोकथाम के लिए दिशा-निर्देश जारी करता है। WHO का मानना है कि खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए **"फार्म से थाली तक" (Farm to Fork)** दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। अर्थात् कृषि उत्पादन से लेकर उपभोक्ता तक पहुँचने की पूरी प्रक्रिया सुरक्षित होनी चाहिए।

भारत में खाद्य सुरक्षा का महत्व:- भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र और प्रमुख कृषि प्रधान देश है। यहाँ विशाल जनसंख्या के लिए सुरक्षित भोजन उपलब्ध कराना एक बड़ी जिम्मेदारी है। देश में प्रतिदिन करोड़ों लोग विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों का उपभोग करते हैं। ऐसे में खाद्य सुरक्षा का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है।

भारत में खाद्य सुरक्षा केवल स्वास्थ्य का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और आर्थिक विकास से भी जुड़ी हुई है। गरीब और कमजोर वर्गों तक गुणवत्तापूर्ण भोजन पहुँचाना राष्ट्र की प्राथमिकता है।

भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI):- भारत सरकार ने खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए **Food Safety and Standards Authority of India (FSSAI)** की स्थापना की है। FSSAI के प्रमुख कार्य हैं—**खाद्य मानकों का निर्धार, खाद्य उद्योगों को लाइसेंस प्रदान करना, गुणवत्ता की निगरानी, खाद्य पदार्थों की जांच, उपभोक्ताओं को जागरूक बनाना और मिलावट रोकने के लिए अभियान चलाना।** इसके अलावा FSSAI समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रमों और अभियानों के माध्यम से खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाता है।

भारत सरकार की प्रमुख पहलें:-

ईट राइट इंडिया अभियान:-यह अभियान लोगों को स्वस्थ और सुरक्षित भोजन अपनाने के लिए प्रेरित करता है। इसका उद्देश्य खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ संतुलित आहार को बढ़ावा देना है।

खाद्य परीक्षण प्रयोगशालाएँ:-देशभर में आधुनिक प्रयोगशालाओं की स्थापना की गई है जहाँ खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की जांच की जाती है।

स्वच्छ भारत अभियान से जुड़ाव:-स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा का सीधा संबंध है। स्वच्छ भारत अभियान ने खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली:-सरकार गरीब वर्गों तक सुरक्षित खाद्यान्न पहुँचाने के लिए विभिन्न योजनाएँ संचालित करती है।

भारतीय परंपरा और खाद्य सुरक्षा:-भारतीय संस्कृति में भोजन को केवल आहार नहीं बल्कि **"अन्नपूर्णा"** और **"प्रसाद"** के रूप में सम्मान दिया गया है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में शुद्ध और सात्विक भोजन पर विशेष बल दिया गया है। आयुर्वेद में कहा गया है कि भोजन तभी लाभदायक होता है जब वह—ताजा हो, स्वच्छ हो, संतुलित हो, उचित मात्रा में ग्रहण किया जाए। भारतीय परिवारों में भोजन बनाने से पहले स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने की परंपरा रही है। यह परंपरा आधुनिक खाद्य सुरक्षा सिद्धांतों के अनुरूप है।

खाद्य सुरक्षा में नागरिकों की भूमिका:- खाद्य सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। प्रत्येक नागरिक को भी अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

उपभोक्ता क्या करें- पैक्ड खाद्य पदार्थ खरीदते समय निर्माण एवं समाप्ति तिथि देखें। FSSAI लाइसेंस नंबर की जांच करें। खुले और संदिग्ध खाद्य पदार्थों से बचें। भोजन को स्वच्छ स्थान पर रखें। हाथ धोकर भोजन करें। खाद्य पदार्थों को उचित तापमान पर संग्रहित करें।

परिवार की भूमिका:- घर में स्वच्छ रसोई, शुद्ध जल और संतुलित भोजन की व्यवस्था खाद्य सुरक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

विद्यालयों और संस्थानों की भूमिका:-विद्यालयों में बच्चों को खाद्य सुरक्षा के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए। मध्याह्न भोजन योजना, छात्रावासों और कैंटीनों में गुणवत्ता और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में खाद्य सुरक्षा विषयक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं ताकि युवा पीढ़ी इस विषय के महत्व को समझ सके।

खाद्य सुरक्षा और सतत विकास:- संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने में खाद्य सुरक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। सुरक्षित भोजन— भूख समाप्त करने में सहायता करता है। बेहतर स्वास्थ्य सुनिश्चित करता है। गरीबी कम करने में मदद करता है। सतत कृषि को प्रोत्साहित करता है। यदि दुनिया के सभी लोगों को सुरक्षित और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जाए तो अनेक सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान संभव है।

भविष्य की दिशा:- भविष्य में खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए निम्न कदम आवश्यक हैं। आधुनिक तकनीक का उपयोग, खाद्य परीक्षण सुविधाओं का विस्तार, किसानों को प्रशिक्षण, उपभोक्ता जागरूकता अभियान, मिलावट के विरुद्ध कठोर कार्रवाई, सुरक्षित कृषि पद्धतियों को बढ़ावा और डिजिटल निगरानी प्रणाली का विकास। भारत में तेजी से बढ़ती जनसंख्या और बदलती जीवनशैली को देखते हुए खाद्य सुरक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाए रखना आवश्यक है।

विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह मानव स्वास्थ्य और कल्याण से जुड़ा एक वैश्विक अभियान है। सुरक्षित भोजन प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है और इसे सुनिश्चित करना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है।

भारत ने खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, किंतु अभी भी मिलावट, जागरूकता की कमी और गुणवत्ता नियंत्रण जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं। सरकार, उद्योग, किसान, वैज्ञानिक और उपभोक्ता मिलकर ही एक सुरक्षित खाद्य व्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं। 7 जून का यह दिवस हमें यह संकल्प लेने का अवसर प्रदान करता है कि हम स्वयं भी सुरक्षित भोजन अपनाएँगे और समाज में खाद्य सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाएँगे। स्वस्थ नागरिक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करते हैं, और सुरक्षित भोजन उस स्वस्थ राष्ट्र की आधारशिला है।

****

सेवा संगठन संस्कार

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा

प्रदेश सभा – मध्यप्रदेश

पंजीकरण संख्या : एस – 27 / 1919
प्रादेशिक कार्यालय :- मैसर्स डेल्टा कोच बिल्डर्स, पाल नगर, देवास - भोपाल बाइपास, आगरा - बोम्बे रोड़, देवास (मध्यप्रदेश) पिन - 455111

प्रभुदयाल जांगिड (बरनेला)
अध्यक्ष (प्रदेश सभा म.प्र.)
9826174822

अनिल शर्मा
महामंत्री
9303109547

श्रीमती माया शर्मा
अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ म.प्र.
9425123058

प्रधुमन कुमार रतावजिया
मुख्य चुनाव प्रभारी
9827814339

रतन लाल जांगिड
कोषाध्यक्ष
9630705878

क्रमांक:-ABJBM/PS/MP/2026 /04 दिनांक :- 22/06/2026

***हरदा जिलाध्यक्ष पद हेतु चुनाव अधिसूचना ***

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली की प्रदेश सभा मध्यप्रदेश के हरदा जिले के सम्मानित सदस्यों को सूचित किया जाता है कि 24 मई 2026 रविवार को मंदसोर में सम्पन्न हुई कार्यकारिणी की बैठक में पारित प्रस्ताव का पालन करते हुए प्रदेशसभा मध्यप्रदेश के अंतर्गत हरदा जिले के "जिला अध्यक्ष पद के निर्वाचन हेतु अधिसूचना जारी की जाती है । जिला अध्यक्ष के चुनाव में महासभा का **15 जुलाई, 2026** तक बना हुआ किसी भी श्रेणी का सदस्य भाग ले सकता है उम्मीदवार की उम्र दिनांक **30 जून 2026 को 30 वर्ष** से अधिक होनी चाहिए । जिला अध्यक्ष पद के चुनाव के सम्बन्ध में समय समय पर महासभा द्वारा जारी दिशा-निर्देश एवं **चुनाव निर्देशिका - जुलाई, 2024** के अनुसार होंगें जिनका सभी को पालन करना अनिवार्य है ।

चुनाव कार्यक्रम

चुनाव अधिसूचना दिनांक	:	22 जून 2026, सोमवार
सदस्य बनने की अंतिम दिनांक	:	15 जुलाई, 2026
मतदाता सूचि का प्रकाशन	:	18 जुलाई, 2026
मतदाता सूचि में संशोधन	:	22 जुलाई, 2026
संशोषित मतदाता सूचि का प्रकाशन	:	25 जुलाई, 2026
नामांकन दिनांक `	:	**02 अगस्त, 2026, रविवार,**
नामांकन स्थान	:	**श्री विश्वकर्मा मन्दिर- नेमावर**
नामांकन का समय	:	प्रातः 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक
नामांकन पत्रों की जांच	:	दोपहर 1.0 बजे से 2.0 बजे तक
नाम वापसी	:	दोपहर 2.0 बजे से 3.0 बजे तक
अंतिम प्रत्याशियों की घोषणा	:	सांय 4 बजे
चुनाव चिन्ह आवंटन	:	सांय 4.30 बजे
मतदान दिनांक एवं समय	:	**9 अगस्त, 2026 रविवार**
मतदान का समय	:	**प्रातः 9 बजे से 5 बजे तक**

नोट :- 1. यदि आवश्यक हुआ तो मतदान बूथ के स्थान कि घोषणा नामांकन तारीख के दिन मतदान अधिकारियों द्वारा कर डी जाएगी ।

नोट :- 2. चुनाव चिन्ह आवंटन के समय चुनाव प्रत्याक्षी को व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होना अनिवार्य है अन्यथा अनुपस्थित प्रत्याक्षी का फॉर्म निरस्त कर दिया जायेगा ।

(प्रधुमन कुमार रतावजिया)
मुख्य चुनाव प्रभारी
प्रदेश सभा - मध्यप्रदेश - इंदौर

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री विश्वकर्मणे नमः ॥

(Reg. No. S-27/1919)

(अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा–दिल्ली)

जांगिड़ ब्राह्मण प्रदेश सभा-गुजरात

कार्यकाल 2025-2028

प्रदेशाध्यक्ष	कार्यकारीअध्यक्ष	महामंत्री	कोषाध्यक्ष	चुनाव अधिकारी
राजेन्द्रकुमार शर्मा (नडियाद)	प्रमोद जांगिड़ (सुरत)	मानाराम सुथार (नवसारी)	प्रेम प्रकाश (आणद)	बनवारी लाल (बडौदा)
97129 29486	98985 41000	99093 11411	99092 54735	98253 17345

R. G. Sharma, Suprim Enterprises, Near Shyam Villa Dabhan, Nadiad Road, Dabhan-387320, NADIAD-Gujarat (Dabhan-Surat-Navsari)

क्रमांक: अ. भा. जा. ब्रा म./ प्र.स. गुज./ 61 दिनांक - 01-06-2026

अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा (प्रदेश सभा - गुजरात)

आदरणीय भावनगर ज़िले के सभी महासभा सदस्यों !

विषय: भावनगर ज़िला सभा - जिलाध्यक्ष पद हेतु अधिसूचना ,

आदरणीय भावनगर ज़िले के सभी महासभा सदस्यों को सूचित किया जाता है कि भावनगर ज़िला सभा में अब तक महासभा का जिला अध्यक्ष पद रिक्त है। प्रदेश सभा के अध्यक्ष महोदय द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि भावनगर ज़िला सभा के जिलाध्यक्ष का चुनाव आयोजित किया जाए।

अतः अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा के संविधान के प्रावधानों के अंतर्गत, प्रदेश सभा - गुजरात द्वारा भावनगर ज़िलाध्यक्ष चुनाव हेतु यह अधिसूचना जारी की जाती है। संबंधित प्रक्रिया एवं तिथियों की सूचना निचे दिये गए हैं ।

कं.सं.	जिला नाम	अधिसूचना जारी करने की तारीख़	सदस्यता की अंतिम तिथि	अध्यक्ष पद नामांकन तिथि	मतदान तिथि (यदि आवश्यक हुआ तो)	नामांकन स्थल का पता	नियुक्त चुनाव अधिकारी	स्थानीय प्रभारी
1	भावनगर	01-06 -2026	22-06-2026	28- 06-2026	25-07-2026	अन्नपूर्णा मेटालॉयज़ पता: प्लॉट नं.: 2149/B/1, 'स्वरा बियॉन्ड', ऑफिस नं.: 601, भावनगर, गुजरात	श्री महेन्द्र कुमार अंकलेश्वर फ़ोन 97236 22828	श्री सरदार मलजी फ़ोन नंबर- 9426917725

1- नामांकन दाखिल करते समय आवश्यक दस्तावेज:-

प्रत्येक को अ भा जां ब्रा महासभा के संविधानुसार प्रदेशसभा गुजरात द्वारा 2024 को पारित ज़िला/ब्लॉक/शाखा सभा चुनाव नियमावली का समर्पुण पालन करना आवश्यक रहेगा ।

नामांकन भरने वाले को प्रदेश सभा से अदेयता प्रमाण पत्र (NOC) लेना आवश्यक है, एवं महा सभा के पदाअधिकारी हैं तो महा सभा से (NOC) लेना अवश्यक हैं, अदेयता (NOC) आवेदन नामांकन के लिए निर्धारित समय से 48 घंटे पुर्व करना होगा ।

चुनाव से संबंधित दिशा निर्देश सूचना व नियम तथा अदेयता प्रमाण हेतु आवेदन प्रदेश सभा द्वारा नियुक्त उपरोक्त स्थानीय चुनाव प्रभारी के पास उपलब्ध रहेगा ।

2- नामांकन आवेदन पत्र का शुल्क :- जिला सभा ज़िलाध्यक्ष के पद हेतु - रुपए 250/-

3- नामांकन हेतु चुनाव व्यवस्था शुल्क :- 5000/-

ज़िलाध्यक्ष प्रत्याशी के लिए निर्धारित शुल्क 5000/- का बैंक ड्राफ़्ट (डी डी) "अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा प्रदेशसभा गुजरात" - "AKHIL BHARTIYA JANGID BRAHMIN MAHASABHA PRADESH SABHA GUJARAT" के नाम का बनाकर नामांकन पत्र के साथ जमा करवाना आवश्यक है ।

3- चुनाव व्यवस्था शुल्क:- नामांकन आवेदन पत्र के साथ जमा की गई चुनाव व्यवस्था शुल्क किसी भी परिस्थिति में वापस योग्य नहीं होगा । अतः प्रत्याशी इसका ध्यान रखते हुए ही नामांकन आवेदन पत्र दाखिल करें।

नामांकन के दौरान सरकार से संबंधित सरकारी गाईड लाईन कोई हो तो उसका समर्पुण पालन आवश्यक रहेगा ।

महासभा के संविधान के अनुसार कोई भी व्यक्ति जिला,तहसील,ब्लॉक अध्यक्ष पद पर दो बार से अधिक समय नहीं रह सकता है।

बनवारी लाल जांगिड

प्रदेश चुनाव प्रभारी

समाज और संगठन के सशक्त समन्वय का गौरवपूर्ण अवसर -

भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान द्वारा श्री भंवरलाल जांगिड को प्रदेश महामंत्री, (ओबीसी मोर्चा) मनोनीत करने पर समाज बंधुओं द्वारा भव्य अभिनंदन

भारतीय जनता पार्टी राजस्थान द्वारा समाजसेवी, कुशल संगठनकर्ता एवं जन सरोकारों से जुड़े वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री भंवरलाल जी जांगिड (बीकानेर) को प्रदेश महामंत्री, ओबीसी मोर्चा का महत्वपूर्ण दायित्व प्रदान किए जाने पर सम्पूर्ण जांगिड समाज में हर्ष एवं गौरव का वातावरण व्याप्त है। यह नियुक्ति उनकी संगठनात्मक दक्षता, सामाजिक प्रतिबद्धता एवं दीर्घकालीन जनसेवा का सम्मान है, साथ ही समाज के युवाओं, शिक्षित वर्ग एवं समर्पित कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्रोत भी है।

जयपुर से बीकानेर प्रवास के दौरान रींगस एवं बालाजी रिसोर्ट, गोरिया में समाज बंधुओं द्वारा उनका गरिमामय एवं आत्मीय स्वागत किया गया। समारोह में उपस्थित महासभा महामंत्री सांवरमल जांगिड, जिला अध्यक्ष सीकर बनवारी लाल खंडेलसर एवं वरिष्ठजनों, पदाधिकारियों एवं समाज प्रतिनिधियों ने साफा, दुपट्टा, माल्यार्पण एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर उनका अभिनंदन किया तथा नवीन दायित्व के सफल निर्वहन हेतु शुभकामनाएँ व्यक्त कीं।

इस अवसर पर जिला सभा प्रवक्ता सुनील पलसाना ने स्वागत उद्बोधन में सभी अतिथियों का परिचय कराते हुए भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश नेतृत्व एवं ओबीसी मोर्चा के शीर्ष नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जब समाज के योग्य, अनुभवी एवं समर्पित व्यक्तित्वों को नेतृत्व की जिम्मेदारी मिलती है, तब समाज की अपेक्षाएँ और संभावनाएँ दोनों सशक्त होती हैं।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में महासभा महामंत्री सांवरमल जांगिड ने श्री भंवरलाल जांगिड बीकानेर को उनके इस मनोनयन एवं भावी यशस्वी कार्यकाल के लिए शुभकामनाए देते हुए समाज की एकता, संगठनात्मक सुदृढ़ता एवं सामाजिक समरसता के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व ही नहीं, बल्कि शिक्षा, संस्कार, कौशल विकास, युवा सशक्तिकरण एवं सामाजिक जागरूकता को भी समान प्राथमिकता दिए जाने की आवश्यकता है।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि श्री भंवर लाल जी अपने नवीन दायित्व के माध्यम से सरकार और समाज के मध्य एक प्रभावी सेतु की भूमिका निभाते हुए जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि श्री भंवरलाल जांगिड ने महासभा में दो बार जिलाअध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए समाजहित में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनके नेतृत्व में संगठनात्मक एकता, सहयोग एवं सामाजिक विकास की भावना को निरंतर मजबूती प्राप्त हुई है। साथ ही उन्होंने युवाओं को उच्च शिक्षा, तकनीकी दक्षता, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, स्वरोजगार एवं राष्ट्रनिर्माण से जुड़े कार्यों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

इसी क्रम में महासभा के राजस्थान प्रदेश प्रभारी हरिनारायण जांगिड ने अपने उद्बोधन में समाज की एकता, सुरक्षा एवं संगठनात्मक मजबूती को वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताया। उन्होंने कहा कि समाज की वास्तविक शक्ति उसके संसाधनों में नहीं, बल्कि उसके सदस्यों के बीच पारस्परिक विश्वास, सहयोग एवं आत्मीयता में निहित होती है। उन्होंने समाज के प्रत्येक व्यक्ति से आग्रह किया कि वह सामाजिक संगठनों को सशक्त बनाने में सक्रिय भूमिका निभाए।

अपने उद्बोधन में श्री भंवरलाल जांगिड ने सभी के स्नेह, सम्मान एवं विश्वास के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज की सामूहिक शक्ति, एकता और विश्वास का प्रतीक है। उन्होंने आश्वस्त किया कि वे समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषकर युवाओं, विद्यार्थियों, महिलाओं एवं जरूरतमंद परिवारों के हितों के लिए निरंतर कार्यरत रहेंगे तथा समाज और सरकार के मध्य सकारात्मक संवाद एवं सहयोग को और अधिक सुदृढ़ बनाने का प्रयास करेंगे।

इस अवसर पर विश्वकर्मा कल्याण समिति द्वारा प्रकाशित स्मारिका 2025 की एक प्रति भी श्री भंवरलाल जांगिड को भेंट की गई। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता भंवरलाल सूटोट, जिला अध्यक्ष बनवारी लाल खंडेलसर, महिला प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष श्रीमती संतोष जांगिड, महासभा पत्रिका के सह-संपादक प्रहलादराय, जिला सभा कार्यकारी अध्यक्ष बाबूलाल पालड़ी, मुख्य सलाहकार विश्वनाथ पनलावा, शिक्षा प्रकोष्ठ प्रभारी नवरंगलाल पालड़ी, शिवदयाल भादवासी, जिला मंत्री सांवरमल लदोया, कोषाध्यक्ष शंकरलाल लदोया, सीताराम मुंडवाड़ा, प्रहलादराय मुंडवाड़ा, बजरंगलाल सांवलोदा, मक्खनलाल कोटड़ी, मूलचंद रींगस सहित अनेक गणमान्य वरिष्ठजन एवं समाज बंधु उपस्थित रहे।

सुनील पलसाना – प्रवक्ता, जिलासभा सीकर

11 फरवरी 2027 को होगा शेखावाटी जांगिड समाज का प्रथम सामूहिक विवाह सम्मेलन - सामाजिक समरसता, संस्कार, शिक्षा और संगठन सशक्तिकरण की दिशा में जिला सभा सीकर का महत्वपूर्ण निर्णय

सीकर, 15 जून 2026, अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा जिला सभा सीकर की कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक में समाज में बढ़ती आर्थिक एवं सामाजिक विषमताओं को कम करने तथा सामाजिक समरसता को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से 11 फरवरी 2027 को सामूहिक विवाह सम्मेलन आयोजित करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। यह प्रस्ताव जिला अध्यक्ष बनवारी लालजी खंडेलसर द्वारा सभा पटल पर रखा गया, जिसका उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने सर्वसम्मति से अनुमोदन किया।

सम्मेलन को सफल बनाने एवं सुव्यवस्थित आयोजन करने के लिए विवाह योग्य युवक-युवतियों के पारस्परिक परिचय एवं संवाद हेतु 11 नवम्बर, 2026 को परिचय सम्मेलन आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया। सम्मेलन को बाल विवाह-मुक्त एवं सामाजिक समरसता का आदर्श उदाहरण बनाने पर विशेष बल दिया गया।

बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष बनवारीलाल खंडेलसर ने की। जांगिड रत्न शंकरलाल लदोया, महासभा महामंत्री सांवरमल जांगिड, जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्रीमती संतोष राजेन्द्र जांगिड, चेतना मंच के अध्यक्ष भंवर लाल सुटोट बतौर विशिष्ट अतिथि मंचासीन रहे। कार्यक्रम का प्रभावी संचालन राधेश्यामजी मांडण ने किया।

बैठक में समाज की वर्तमान चुनौतियों पर गंभीर मंथन करते हुए शिक्षा, संस्कार, संगठन एवं सामाजिक जागरूकता को समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बताया गया। अपने विचार व्यक्त करते हुए, महासभा महामंत्री सांवरमल जांगिड ने महासभा दिल्ली के दिशा निर्देशों का खुलासा करते हुए, महासभा संगठन को मजबूती प्रदान करने के लिए सदस्यता अभियान चलाने एवं सामाजिक उत्थान के लिए सामूहिक विवाह सम्मेलन का सफल आयोजन करने के लिए जिला सभा के बैनर तले एक कमेटी का गठन करने का सुझाव दिया। साथ ही समाज के समस्त भामाशाह / उद्योगपतियों को समाज के इस विशाल एवं भव्य कार्यक्रम में जोड़ कर इस पावन कार्य को संपन्न करके शेखावाटी में एक नई मिशाल स्थापित करने पर बल दिया।

लव जिहाद विषय पर बोलते हुये जिला प्रवक्ता सुनील कुमार पलसाना ने कहा कि संयुक्त परिवार व्यवस्था का विखंडन, पारिवारिक संवाद में कमी, संस्कारों का क्षरण तथा अनियमित जीवनशैली सामाजिक पतन के प्रमुख कारण बनते जा रहे हैं। उन्होंने विशेष रूप से युवाओं एवं बेटियों के मार्गदर्शन, सुरक्षा तथा संस्कारयुक्त शिक्षा के लिए परिवारों को अधिक सजग एवं उत्तरदायी बनने का आह्वान किया। साथ ही परिवारों में निरंतर संवाद, नैतिक मूल्यों की स्थापना और सामाजिक जिम्मेदारियों के निर्वहन पर बल दिया। मातृ शक्ति को विशेष तौर पर सजग रहने का सन्देश भी दिया।

बैठक में प्रतिभावान बच्चों के प्रतिभा सम्मान समारोह तहसील स्तर पर करने का निर्णय लिया गया जिससे बच्चों एवं समाज बन्धुओं की ज्यादा उपस्थिति हो सके। आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को शिक्षा सहायता उपलब्ध कराने, प्रतियोगी परीक्षाओं एवं प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी करने वाले युवाओं को प्रोत्साहित करने तथा समाज की राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्रों में भागीदारी बढ़ाने का संकल्प भी दोहराया गया।

समाज को जमीनी स्तर पर संगठित करने के लिए 21 जून 2026 से पलसाना नगर पालिका क्षेत्र से शाखा सभा का गठन करने एवं सदस्यता अभियान प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया जिसे पूरे जिले में चरणबद्ध रूप से संचालित किया जाएगा। जिला महामंत्री सांवरमल लदोया एवं जिला कोषाध्यक्ष शंकर लाल लदोया ने इस कार्य हेतु रुपरेखा तैयार कर सभा पटल पर उसका अनुमोदन करवाया।

बैठक में जगदीशप्रसाद जांगिड, विश्वनाथ जांगिड, प्रहलादराय दूजोद, सीताराम मुंडवाड़ा, प्रहलादराय मुंडवाड़ा, प्रभुदयाल पलसाना, बोदूराम दिनारपुरा, लालचंद सबलपुरा, जिला महिला प्रकोष्ठ उपाध्यक्ष श्रीमती संतोष प्रहलादराय, राजेंद्रकुमार सीकर, मोहनलाल जैतूसर सहित अनेक पदाधिकारियों एवं समाजबंधुओं ने अपने विचार व्यक्त करते हुए सामूहिक विवाह सम्मेलन, सामाजिक समरसता, शाखा सभा गठन, शिक्षा प्रोत्साहन, युवाओं के मार्गदर्शन तथा राष्ट्र निर्माण में समाज की सक्रिय भूमिका पर जोर दिया।

बैठक का समापन इस संकल्प के साथ हुआ कि शिक्षा, संस्कार, सामाजिक समरसता, संगठन विस्तार एवं राष्ट्रसेवा के माध्यम से जांगिड समाज को नई ऊँचाइयों तक पहुंचाया जाए तथा आने वाली पीढ़ी के लिए एक सशक्त, संगठित और संस्कारित समाज का निर्माण हो। जिलासभा कार्यकारिणी पदाधिकारियों व समस्त समाज बन्धुओं से अपील की गई कि किसी भी सामाजिक कार्यक्रम, मीटिंग आदि की सूचना व्हाट्सप्प से मिलने पर भी मान्य की जानी चाहिये।

सुनील पलसाना प्रवक्ता - जिला सभा सीकर

महासभा प्रधान जी द्वारा सदस्यता मिशन डेढ़ लाख अभियान का सहप्रभारी बनाये जाने पर महासभा प्रधान जी का बहुत-बहुत आभार और धन्यवाद

प्रिय समाज बन्धुओं,

हम समाज की उन महान विभूतियों के सदियों तक ऋणी रहेंगें जिनके अथक प्रयासों तथा कठिन तपस्या के परिणाम स्वरूप हमारी महासभा का गठन 27 दिसंबर सन् 1907 को हुआ। सबसे बड़ी ऐतिहासिक बात यह है कि इस महासभा का रजिस्ट्रेशन सन् 1919 में लाहौर में करवाया गया था। इससे स्पष्ट होता है कि हमारे समाज में आज से सौ-सवासौ साल पहले ही उन्नत्ति एवं जागृति के बीज प्रस्फुलिटत होने शुरू हो गए थे।

महासभा के इतिहास को आगे बढ़ाने में महासभा के आज तक के सभी 38 प्रधानों ने, अपने-अपने सिद्धांतों, नीतियों एवं तत्कालीन उपलब्ध संसाधनों तथा समाज के सहयोग से सेवा करते हुए हमारी महासभा रूपी संगठन के संख्या बल को इस मुकाम पर लाकर खड़ा किया हैं। जिसके लिए हमारे समस्त पूर्व प्रधान और उनकी कार्यकारिणी के पदाधिकारी गण तथा प्रबुद्ध समाज बंधु धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इस महायज्ञ में अपनी श्रद्धा अनुसार तन, मन एवं धन की आहुति डाल कर योगदान किया।

वर्तमान महासभा प्रधान, श्री रामपाल जांगिड की सोच, समाज व संगठन के प्रति सकारात्मक रही है क्योंकि उनका मानना है, कि हमारे समाज के संगठन में जितना संख्या बल अधिक होगा, संगठन उतना ही मजबूत होगा जिससे राजनीति मे भी भागीदारी के द्वार खुलेगें।

प्रधान श्री रामपाल शर्मा ने जिस समय 3 जनवरी 2022 को समाज के एक मुख्य सेवक के रूप में पदभार ग्रहण किया था, उस समय महासभा में प्लेटेनिम सदस्यों की संख्या केवल मात्र 68 थी, जो बढ़कर 191 हो गई है। इस प्रकार 123 नए प्लेटिनम सदस्य महासभा परिवार में शामिल किए गए हैं। इसका श्रेय प्रधान रामपाल शर्मा की कार्य शैली, समाज का विश्वास एवं ईमानदार छवि के साथ साथ उनकी कर्मठ पदाधिकारियों की टीम को भी जाता है, जिन्होंने दानदाताओं को इस महायज्ञ में आहूति देने हेतु आग्रह किया और वे इसमे सफल भी रहे।

इसी प्रकार महासभा के सदस्यों की कुल संख्या लगभग 87 हजार थी जो मई 2026 तक बढ़कर 1 लाख 22 हजार तक पहुंच गई है। इस प्रकार पिछले लगभग साढ़े चार वर्षो के कार्यकाल में लगभग 35 हजार नये सदस्य महासभा परिवार में शामिल हुए हैं। इसके लिए मैं महासभा परिवार के सभी सम्मानित महानुभावों का ह्रदय से आभार एवं अभिनंदन व्यक्त करता हूँ।

5 अप्रैल, 2026 को फरीदाबाद में हुई महासभा की त्रैमासिक बैठक में, महासभा प्रधान जी द्वारा मुझे भी महासभा के सदस्यता मिशन डेढ़ लाख के अभियान का सहप्रभारी नियुक्त किया गया। सदस्यता मिशन डेढ़ लाख प्रभारी श्री रामजीलाल जांगिड के साथ मिलकर मैं मेरा सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करूंगा। श्री रामजी लाल ने जब से उनको प्रभारी बनाया गया है तब से वह अथक प्रयास कर रहे हैं लेकिन अब क्योंकि हम एक से दो हो गए हैं तो और अधिक उत्साह से सदस्य संख्या मे बढ़ोतरी होगी।

मैं महासभा प्रधान और कार्यकारिणी के सभी महानुभावों का ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझ पर विश्वास और भरोसा जताया और मुझे यह दायित्व सौंपा है। साथ ही मैं प्रधान जी को विश्वास दिलाता हूँ कि जो दायित्व मुझे आपके द्वारा सौंपा गया है, उस पर मैं खरा उतरने का हर सम्भव प्रयास करुंगा। मैं महासभा परिवार के सदस्यों की संख्या में उत्तरोत्तर अभिवृद्धि करने के लिए हर संभव प्रयास करूंगा एवं महासभा सदस्यता अभियान मिशन के प्रभारी, श्री रामजी लाल जांगिड जयपुर के साथ मिलकर महासभा में प्लेटिनम, स्वर्ण और रजत सदस्यों के साथ ही सभी तरह के सदस्यों की संख्या में आशातीत अभिवृद्धि के सतत् प्रयास करूंगा।

मैंने समाज सेवा हेतु सन् 2008 में महासभा की सदस्यता ग्रहण की थी। उसके उपरांत महासभा के प्रधानों एवं प्रदेश अध्यक्षों ने मुझे विभिन्न पदों पर समाज सेवा करने का मौका प्रदान किया जिनमे मुख्यत: जिला अध्यक्ष, वरिष्ठ जिला मंत्री, जिला कोषाध्यक्ष के पद पर कार्य करने के साथ ही प्रदेश सभा राजस्थान में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए राजस्थान के सभी जिलों के चुनाव शांतिपूर्ण संपन्न करवाने के दायित्व का भली भांति निर्वहन किया। इसके साथ ही महासभा में चुनाव प्रभारी का कार्य करते हुए मैंने प्रदेश सभा-पंजाब, प्रदेश सभा - दिल्ली व प्रदेश-सभा उत्तराखंड के चुनाव भी शांति पूर्वक संपन्न कराए,

किसी भी सामाजिक संगठन की मजबूती उसके सक्रिय सदस्यों की संख्या पर निर्भर करती है। जितने अधिक सदस्य होंगे, वह संगठन उतना ही प्रभावशाली, सशक्त और जन हितकारी होगा। हमारी प्रतिष्ठित महासभा का गौरवशाली इतिहास लगभग 119 वर्षों से अधिक का रहा है, लेकिन यह भी निर्विवाद रूप से सत्य है कि वर्तमान समय में हमारी सदस्य संख्या उस स्तर तक नहीं पहुँच पाई है, जहाँ इसे होना चाहिए था...!

लेकिन अब समय आ गया है कि हम सभी मिलकर इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दें , और सदस्यता विस्तार को एक जन-अभियान के रूप में सब मिलकर आगे बढ़ाएं तभी हमारे महापुरुषों का सपना साकार होगा।

अतः मैं महासभा कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारियों, प्रदेशाध्यक्षो, जिलाध्यक्षों, तहसील अध्यक्षों और शाखा अध्यक्षों से विनम्र अपील करता हूँ कि आप सभी मिलकर इस विषय पर गंभीरता से विचार करें और इस महायज्ञ में अपनी आहूति डालने के लिए अपने-अपने क्षेत्रों में सदस्यता बढ़ाने के लिए ठोस एवं प्रभावी कदम उठाएं। आपका सहयोग और समर्पण ही इस महासभा रुपी संगठन को नई ऊचाइयों तक ले जा सकता है। मुझे विश्वास है कि प्रधान श्री रामपाल जांगिड ने, मुझ पर और श्री रामजीलाल जांगिड पर जो भरोसा किया है, हम उस भरोसे पर खरा उतरने की हर संभव कोशिश करेंगे और उनके विश्वास को कभी भी टूटने नहीं देंगे तथा इस दिशा में सतत और अनवरत प्रयास जारी रखेंगे।

आइए, हम सब मिलकर, महासभा को और अधिक सशक्त, संगठित और प्रभावशाली बनाने में अपनी महत्ती भूमिका निभाने का अपना सर्वोच्च दायित्व पूरा करते हुए, समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास करें।

विपुल धन्यवाद ....

ब्रह्म देव शर्मा – सहप्रभारी
मिशन डेढ लाख सदस्यता अभियान

****

बधाई और शुभकामनाएं।

दिनांक 14 जून, 2026 को सम्पन्न हुए चुनाव मे साबरकांठा जिला सभा मे मुकेश कुमार जांगिड, हिम्मतनगर को निर्विरोध जिला अध्यक्ष पद पर चुना गया। आपको बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

दिनांक 14 जून, 2026 को सम्पन्न हुए चुनाव मे अहमदाबाद जिला सभा मे रविदत्त जांगिड को चुनाव मे जीत दर्ज करने पर जिला अध्यक्ष पद पर चुना गया। आपको बहुत - बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

दिनांक 14 जून, 2026 को सम्पन्न हुए चुनाव मे सागरपुर शाखा सभा मे हरीराम शर्मा कानपुरा को निर्विरोध अध्यक्ष पद पर चुना गया। आपको बहुत - बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

राजनीतिक नियुक्तियों मे समाज बन्धुओ का वर्चस्व .....

बधाई एवं शुभकामना संदेश

श्री रोहिताश जांगड़ा
भारतीय जनता पार्टी, हरियाणा
"अध्यक्ष - हरियाणा श्रम कल्याण बोर्ड, हरियाणा सरकार"

श्री भँवरलाल जांगिड
भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान
"प्रदेश महासचिव ओबीसी मोर्चा"

श्री खीमाराम सुथार
भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान
"उपाध्यक्ष"

श्री दिनेश जांगिड
भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान
"प्रदेश प्रवक्ता"

श्री नेमीचन्द जांगिड
भारतीय जनता पार्टी, राजस्थान
"आई.टी. सह संयोजक ओबीसी मोर्चा"

यह नियुक्ति आप सभी के संगठनात्मक कौशल, समाजसेवा के प्रति समर्पण एवं पार्टी के प्रति निष्ठा का सम्मान हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन करते हुए संगठन को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे तथा समाज और राष्ट्रहित में उल्लेखनीय योगदान देंगे।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आप सभी को उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं निरंतर सफलता प्रदान करें। शुभकामनाओं सहित,

रामपाल शर्मा, प्रधान- महासभा

जीवन जीने की कला-आओ सीखें प्रकृति से

ईश्वर ने जब इस संसार की रचना की तो उसने मनुष्य को बनाने से पहले प्रकृति को बनाया और जीवन के आदर्शों को उसमें समाहित किया। प्रकृति मूक होती है पर गति उसमें भी होती है, परिवर्तन उसमें भी होते हैं, ये परिवर्तन और गति मनुष्य के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करते हैं। कैसा जीवन जीया जायें, यह हमें प्रकृति अच्छी तरह से समझाती है।

नदी बहती हैं, और सतत बहना उसकी प्रवृत्ति होती है। वह अपना पानी स्वयं नहीं पीती, वह दूसरों के लिये बहती हैं। नदी मानव जीवन के लिये आदर्श हैं। नदी हमें सिखाती हैं कि हमें दूसरों के लिये जीना चाहिये। यह जीवन की अग्रगामी प्रकृति को बताती है। नदी का रुकना उसके विनाश की निशानी है। उसी प्रकार जीवन में रुकना मनुष्य के भी विनाश का कारण होता है। नदी जब किनारे छोड़ती है तो वह विनाश का कारण बनती है। जब मनुष्य अपनी सीमाओं को छोड़ देता है तो वह परिवार समाज और देश के लिये हानिप्रद होता है।

किनारों के बीच बहती नदी और अनुशासित जीवन दोनों सुन्दरता को जन्म देते हैं। इसलिये नदी प्रकृति का सबसे आदर्श रूप हैं। हमें जीवन में नदी से संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती हैं। कितनी चट्टानों से टकराती हुई, कितने अवरोधों को पार करती हुई, वह सदैव अपनी राह स्वयं बनाती है। नदी हमें जीवन में संघर्ष करने की प्रेरणा देती हैं।

सूरज रोज सुबह पूरब से उगकर संसार को प्रकाशित करता है। उसे उगने में कभी देर नहीं होती है और न वह कभी उगना भूलता है। प्रकृति का यह रूप हमें अनुशासित रूप से कार्य करने की प्रेरणा देता है। सूर्य प्रकाश देने में किसी के साथ भेदभाव नहीं करता, वह सबके साथ समानता का व्यवहार करता है। कितना आदर्श रूप है, यह कर्तव्यपरायणता का।

लोक व्यवहार में सागर हमें गहरा और गंभीर दोनों की शिक्षा देता है। कहा जाता है कि नदी और नाले थोड़ी सी बारिश होने पर उफनने लगते हैं, क्योंकि वे उथले होते हैं। जिन मुनष्यों की प्रकृति उथली होती है, वे जल्दी उबल जाते हैं, जल्दी अपनी सीमाएं खो देते हैं, ठीक नदी नालों की तरह, परंतु सागर मे कभी उफान नहीं आता क्योंकि वह गहरा होता है। इसलिये गंभीर व्यक्तियों को सागर की उपमा दी जाती है।

कितनी नदियां सागर में जाकर मिलती है। वह सबको शरण देता है और अपने में मिला लेता है। इतनी विविधता को अपने में समेटे हुए वह हमेशा गंभीर रहता है, उसकी गंभीरता को उसकी लहरे व्यक्त करती है।

ये प्रकृति के वह तत्व हैं जो स्वयं जीवन रखते हैं, और मानव को आदर्श स्वरूप प्रदान करने की सीख देते है। प्रकृति का सबसे सुन्दर रूप है वृक्ष। वृक्ष हमें आदर्श जीवन के कुछ पहलू बताते हैं। फलों से लदी शाखाएं झुक जाती है। उनका यह झुकना बताता है कि जो सम्पन्न होते है उन्हें विनम्र होना चाहिए। लोक व्यवहार की पराकाष्ठा यह कि पत्थर मारने पर भी वृक्ष फल ही देते हैं। सहनशीलता की यह पराकाष्ठा केवल वृक्षों में ही मिलती है। कोई हमें शूल दें, फिर भी हम उसे फूल देने का प्रयास करें। निश्चय ही एक दिन उसे अपना व्यवहार बदलना पड़ेगा। वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते, वे दूसरों के लिये ही फल उत्पन्न करते हैं। हमें वृक्षो की भांति दूसरो के हितों को संरक्षित करना चाहिए।

अंग्रेजी के प्रसिद्ध प्रकृतिवादी कवि वुड्सवर्थ ने लिखा है कि प्रकृति हमें सुकून देती है। प्रकृति हमारी शिक्षक हैं। वह हमें कुछ पलों में ऐसा अनुभव दे देती है, जो हम वर्षो में प्राप्त नहीं कर पाते हैं। प्रकृति हमें प्रेरणा देती है। हमारी संस्कृति में प्रकृति के तत्वों के लिये विशेष आदर है। हम उनकी पूजा करते हैं, क्योंकि वे हमें जीवन के आदर्श को पढ़ाते हैं। वे हमें जीवन की एक नई परिभाषा देते हैं। प्रकृति न केवल हमें जीवन के साधन उपलब्ध कराती है वरन् हमें एक उच्च स्तरीय जीवन जीना सिखाती है। जीवन में यदि हम सफलताओं के शिखर को छूना चाहते हैं तो हमें प्रकृति के तत्वों से बहुत सीखना होगा।

प्रवीण शर्मा - नीमच

अहंकार और गुस्सा मानवता के दुश्मन

मनुष्य को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा गया है। इसका कारण केवल उसका शारीरिक बल नहीं, बल्कि उसकी बुद्धि, संवेदनशीलता, विवेक, प्रेम, दया, करुणा, सहनशीलता और नैतिकता है। मानवता का अर्थ केवल मनुष्य होना नहीं, बल्कि दूसरों के सुख-दुख को समझना, सहानुभूति रखना, प्रेम और सम्मान देना तथा समाज में शांति और सद्भाव बनाए रखना है। किंतु जब मनुष्य के भीतर अहंकार और गुस्सा प्रवेश कर जाते हैं, तब उसकी मानवता कमजोर होने लगती है। ये दोनों अवगुण मनुष्य की सोच, व्यवहार और संबंधों को प्रभावित करते हैं तथा समाज में अशांति, द्वेष और संघर्ष पैदा करते हैं। इसलिए कहा जाता है कि अहंकार और गुस्सा मानवता के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

अहंकार मनुष्य को अपनी सीमाओं का ज्ञान नहीं होने देता, जबकि गुस्सा उसकी बुद्धि को नष्ट कर देता है। अहंकारी व्यक्ति स्वयं को श्रेष्ठ समझता है और दूसरों को तुच्छ मानने लगता है। वहीं क्रोधी व्यक्ति अपनी भावनाओं पर नियंत्रण खो बैठता है और ऐसे निर्णय लेता है जिनका परिणाम अक्सर विनाशकारी होता है। यदि मानवता को बचाना है, समाज में प्रेम और भाईचारा बनाए रखना है, तो अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण आवश्यक है। अहंकार का सामान्य अर्थ है, अपने आपको दूसरों से श्रेष्ठ समझना। जब व्यक्ति को अपने ज्ञान, धन, पद, शक्ति, सुंदरता, जाति, परिवार या उपलब्धियों पर अत्यधिक गर्व हो जाता है, तब वह अहंकार का शिकार बन जाता है। ऐसा व्यक्ति अपनी गलतियों को स्वीकार नहीं करता और दूसरों की राय को महत्व नहीं देता। अहंकार मनुष्य को वास्तविकता से दूर कर देता है। वह यह भूल जाता है कि जीवन में कोई भी वस्तु स्थायी नहीं है। धन, पद, शक्ति और यश सब समय के साथ बदल सकते हैं। इतिहास गवाह है कि बड़े-बड़े राजा, साम्राज्य और शक्तिशाली व्यक्ति अपने अहंकार के कारण पतन का शिकार हुए। अहंकार कई रूपों में दिखाई देता है:-

धन का अहंकार – जब व्यक्ति अपने पैसे के कारण दूसरों को छोटा समझने लगे। **ज्ञान का अहंकार** – जब कोई अपने ज्ञान को अंतिम सत्य मानकर दूसरों की बातों को महत्व न दे। **पद और शक्ति का अहंकार** – जब व्यक्ति अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने लगे। **सुंदरता का अहंकार** – जब बाहरी रूप को श्रेष्ठता का आधार बना लिया जाए। **जाति और परिवार का अहंकार** – जब कोई अपने जन्म या वंश के कारण दूसरों को नीचा समझे। इन सभी रूपों में अहंकार मानवता को चोट पहुँचाता है क्योंकि यह समानता, सम्मान और प्रेम की भावना को समाप्त करता है।

गुस्से का अर्थ और प्रकृति:- गुस्सा एक स्वाभाविक मानवीय भावना है। जब किसी व्यक्ति की इच्छा पूरी नहीं होती, उसे अपमान महसूस होता है, अन्याय दिखाई देता है या किसी बात से मानसिक पीड़ा होती है, तब गुस्सा उत्पन्न होता है। सीमित और नियंत्रित गुस्सा कभी-कभी गलतियों को सुधारने की प्रेरणा बन सकता है, लेकिन अनियंत्रित गुस्सा विनाशकारी होता है। गुस्से की अवस्था में व्यक्ति का विवेक कमजोर हो जाता है। वह जल्दबाजी में ऐसे शब्द बोल देता है या ऐसे कार्य कर बैठता है जिन पर बाद में पछताना पड़ता है। यही कारण है कि कहा जाता है, क्रोध मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। गुस्से का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि यह रिश्तों को तोड़ देता है। एक कठोर शब्द, एक अपमानजनक व्यवहार या आवेश में लिया गया निर्णय कई वर्षों के संबंध समाप्त कर सकता है।

अहंकार और गुस्से का आपसी संबंध- अहंकार और गुस्सा एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। अक्सर गुस्से की जड़ अहंकार ही होता है। जब किसी व्यक्ति का अहंकार आहत होता है, तब वह तुरंत क्रोधित हो उठता है। यदि कोई उसकी बात न माने, उसकी आलोचना करे या उसे गलत ठहराए, तो वह सहन नहीं कर पाता। उदाहरण के लिए, एक अहंकारी व्यक्ति यदि अपने अधीन काम करने वाले किसी व्यक्ति की सलाह सुनता है, तो उसे यह अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध लग सकता है। परिणामस्वरूप वह क्रोधित होकर प्रतिक्रिया देता है। इस प्रकार अहंकार और गुस्सा मिलकर व्यक्ति के भीतर विनाशकारी प्रवृत्ति पैदा करते हैं।

मानवता पर अहंकार के दुष्प्रभाव:-1. संबंधों में दूरी - अहंकारी व्यक्ति अपने आसपास के लोगों को सम्मान नहीं देता। वह स्वयं को श्रेष्ठ समझता है, जिसके कारण परिवार, मित्र और सहकर्मी उससे दूरी बनाने लगते हैं। 2. सीखने की क्षमता का नष्ट होना - जो व्यक्ति स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझता है, वह सीखना बंद कर देता है। उसे लगता है कि उसे सब कुछ आता है। परिणामस्वरूप उसका विकास रुक जाता है। 3. समाज में भेदभाव - अहंकार समाज में असमानता और भेदभाव को जन्म देता है। लोग जाति, धर्म, धन और शक्ति के आधार पर दूसरों को नीचा समझने लगते हैं। 4. मानवता का ह्रास - जहाँ अहंकार होता है, वहाँ दया, करुणा और संवेदनशीलता कम होने लगती है। व्यक्ति दूसरों के दु:ख-दर्द को महत्व नहीं देता।

गुस्से के दुष्प्रभाव:-1. निर्णय क्षमता कमजोर होना - गुस्से में व्यक्ति सोचने-समझने की शक्ति खो देता है और गलत निर्णय ले लेता है। **2. मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर असर** - अत्यधिक गुस्सा तनाव, चिंता, रक्तचाप, अनिद्रा और हृदय संबंधी समस्याओं को बढ़ा सकता है। **3. रिश्तों में टूटन** - गुस्से में कहे गए शब्द दिलों पर गहरा घाव छोड़ते हैं। पति-पत्नी, माता-पिता, मित्र और सहकर्मियों के बीच तनाव बढ़ता है। **4. हिंसा और अपराध** - अनेक अपराध क्षणिक गुस्से में किए जाते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े, मारपीट और हिंसा गुस्से के परिणाम हैं। सभी धर्मों और नैतिक शिक्षाओं में अहंकार और गुस्से को बुरा बताया गया है। विनम्रता, क्षमा, धैर्य और सहनशीलता को श्रेष्ठ गुण माना गया है। धार्मिक ग्रंथों में बताया गया है कि अहंकार मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है। वहीं गुस्से को नियंत्रित करने वाले व्यक्ति को श्रेष्ठ माना गया है।

परिवार और समाज पर प्रभाव:- परिवार प्रेम और सहयोग का स्थान होता है। लेकिन जब परिवार में कोई व्यक्ति अहंकारी या क्रोधी हो जाता है, तो तनाव बढ़ने लगता है। पति-पत्नी के बीच अहंकार हो तो संवाद समाप्त हो जाता है। माता-पिता यदि हर समय गुस्से में रहें तो बच्चों के मानसिक विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है। समाज में भी यही स्थिति देखने को मिलती है। छोटी-छोटी बातों पर झगड़े, सड़क पर हिंसा, सोशल मीडिया पर कटुता और समुदायों के बीच तनाव गुस्से और अहंकार के परिणाम हैं।

युवाओं पर प्रभाव:- आज की युवा पीढ़ी तेज प्रतिस्पर्धा, तनाव और सामाजिक दबाव का सामना कर रही है। ऐसे में गुस्सा जल्दी आना और अहंकार बढ़ना आम समस्या बनती जा रही है। सोशल मीडिया ने भी तुलना और दिखावे की प्रवृत्ति को बढ़ाया है। लोग अपनी सफलता दिखाकर दूसरों से श्रेष्ठ दिखना चाहते हैं। इससे अहंकार बढ़ता है और असफलता मिलने पर गुस्सा। युवाओं को चाहिए कि वे आत्मसंयम, संवाद और सहनशीलता को अपनाएँ। इतिहास साक्षी है, रावण का पतन उसके अहंकार के कारण ही हुआ। उसने अपनी शक्ति, ज्ञान और भक्ति का गर्व कर लिया और मर्यादा का उल्लंघन किया। परिणामस्वरूप उसका पूरा लंका साम्राज्य नष्ट हो गया।

दुर्योधन ने भी अपने अहंकारवश पांडवों के साथ अन्याय किया। उसका घमंड इतना बढ़ गया कि अंततः महाभारत का युद्ध हुआ और उसका वंश समाप्त हो गया। अहंकार अंधा बना देता है। यह व्यक्ति को दूसरों की अच्छाइयाँ देखने से रोक देता है। वह न तो ईश्वर को मानता है और न ही दूसरों के विचारों का सम्मान करता है। जब तक व्यक्ति में नम्रता नहीं आती, तब तक उसे सच्ची सफलता नहीं मिल सकती। क्रोध भी अहंकार की तरह विनाशकारी भावना है। गुस्से में इंसान अपनी सोचने-समझने की क्षमता खो देता है। वह ऐसे शब्द बोल देता है या ऐसे कर्म कर बैठता है जिनका पछतावा बाद में जीवन भर रहता है। गुस्सा आग की तरह है अगर इसे समय रहते नियंत्रित न किया जाए, तो यह सब कुछ जला देता है, रिश्ते, सम्मान और मन की शांति।

महर्षि दुर्वासा अपने क्रोध के लिए प्रसिद्ध थे। उनके गुस्से से कई बार निर्दोष लोगों को भी दुख झेलना पड़ा। स्वयं उन्होंने भी बाद में पछतावा किया। महर्षि दुर्वासा भगवान शिव के अंशावतार थे, जो अपने प्रचंड क्रोध और तुरंत श्राप देने के लिए प्रसिद्ध थे, लेकिन वे सिद्ध योगी भी थे। उन्होंने अहंकारवश देवराज इंद्र और राजा अंबरीश को श्राप दिया था। हालाँकि, अंबरीश की विष्णु भक्ति और सुदर्शन चक्र के भय से उन्हें अंततः झुकना पड़ा और माफी मांगकर अपना अहंकार दूर करना पड़ा। दुर्वासा ने इंद्र को परिजात माला दी, जिसे इंद्र ने अहंकार में हाथी को पहना दिया। अपमान से क्रोधित होकर उन्होंने देवताओं के राजा इंद्र को श्री (वैभव) विहीन होने का श्राप दिया, जिससे देवता निर्बल हो गए। राजा अंबरीश के एकादशी व्रत के बाद भोजन करने से पहले ही, जब ऋषि दुर्वासा ने भोजन करने की मांग की, तो भोजन अस्वीकार होने पर वे क्रोधित हो गए और राक्षस उत्पन्न कर दिया। बाद में विष्णु के सुदर्शन चक्र के सामने उन्हें भागना पड़ा और अपनी गलती का अहसास हुआ।

जब सुदर्शन चक्र ने दुर्वासा का पीछा किया, तो वे ब्रह्मा और शिव के पास गए, लेकिन किसी ने रक्षा नहीं की। अंततः भगवान विष्णु ने उन्हें अंबरीश के पास माफी मांगने की सलाह दी। जब ऋषि ने राजा अंबरीश से क्षमा मांगी, तब जाकर उनका क्रोध शांत हुआ। इससे सिद्ध हुआ कि अहंकार और क्रोध के सामने भगवान के भक्त की भक्ति सर्वोपरि है। उन्होंने महसूस किया कि उनका क्रोध, जिसे वे तपस्या से नियंत्रित मानते थे, वास्तव में एक अहंकार था, जो सत्य के सामने नहीं टिक सका। दुर्वासा का चरित्र यह सिखाता है कि अत्यधिक ज्ञान और सिद्धियों के बाद भी अहंकार विनाश का कारण बनता है।

अहंकार और गुस्से पर नियंत्रण के उपाय:-1. आत्मचिंतन - अपने व्यवहार का विश्लेषण करें। अपनी गलतियों को स्वीकारना सीखें। **2. धैर्य का अभ्यास -** गुस्सा आने पर तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय कुछ समय शांत रहें। **3. विनम्रता अपनाएँ -** दूसरों का सम्मान करें और यह समझें कि हर व्यक्ति में कुछ न कुछ विशेषता होती है। **4. सकारात्मक सोच -** नकारात्मक विचार गुस्से को बढ़ाते हैं। सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने से मन शांत रहता है। **5. संवाद की आदत -** समस्याओं को बातचीत से सुलझाने का प्रयास करें। **6. क्षमा की भावना -** क्षमा करने से मन हल्का होता है और रिश्ते मजबूत बनते हैं।

मानवता की रक्षा में प्रेम और सहनशीलता का महत्व- मानवता तभी सुरक्षित रह सकती है जब समाज में प्रेम, दया, सहयोग और सहनशीलता हो। यदि हर व्यक्ति अहंकार और गुस्से से ऊपर उठकर दूसरों को सम्मान देना सीखे, तो समाज अधिक शांतिपूर्ण और समृद्ध बन सकता है। सच्चा महान वही है जो दूसरों को हराकर नहीं, बल्कि स्वयं के अहंकार और गुस्से पर विजय पाता है।

अंततः यह स्पष्ट है कि अहंकार और गुस्सा मानवता के सबसे बड़े दुश्मन हैं। अहंकार व्यक्ति को अंधा बना देता है और गुस्सा उसकी बुद्धि छीन लेता है। दोनों मिलकर व्यक्ति के संबंधों, मानसिक शांति, सामाजिक जीवन और मानवता को नुकसान पहुँचाते हैं।

मनुष्य को चाहिए कि वह विनम्रता, धैर्य, प्रेम, सहनशीलता और क्षमा को अपने जीवन का हिस्सा बनाए। जब हम अपने भीतर के अहंकार और गुस्से को नियंत्रित कर लेंगे, तभी सच्चे अर्थों में मानवता की रक्षा कर पाएँगे और एक बेहतर समाज का निर्माण संभव होगा। **श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था, "क्रोध से मोह उत्पन्न होता है, मोह से स्मृति भ्रंश, और स्मृति भ्रंश से बुद्धि का नाश होता है, और बुद्धि का नाश होने पर व्यक्ति का पतन निश्चित है।"** यह वचन आज भी उतना ही सत्य है। .....

प्रहलादराय शर्मा (जांगिड) सह संपादक

(1 जून) अन्तर्राष्ट्रीय माता पिता दिवस के पुनीत अवसर पर अभिभावकों की सेवा का संकल्प लें।

रमेश शर्मा, आनन्द पर्वत,दिल्ली

माता-पिता भगवान का स्वरूप हैं और यह परम्परा युगों से चली आ रही है। इसके अनेक अद्वितीय उदाहरण हमारे सामने हैं। अपने माता - पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित और त्याग करने वाले भगवान श्री राम का अनूठा और अद्वितीय उदाहरण आज हजारों वर्षों के बाद भी हमारा पथ आलोकित कर रहा है, जिन्होंने एक आदेश पर राजसिंहासन का परित्याग करके, त्याग का अनूठा उदाहरण समाज के सामने प्रस्तुत किया। श्रवण कुमार, जिनको अपने माता-पिता को तीर्थ यात्रा करवाने के लिए उनको अपने कंधों पर उठाकर घुमना पड़ा। इसी प्रकार भगवान श्री गणेश जिन्होंने अपनी माँ पार्वती की आज्ञा और आदेश का पालन करने के लिए , भगवान शिव को अन्दर जाने से रोक दिया और इससे क्रोधित होकर भगवान शिव ने गणेश जी महाराज का सिर काट दिया। बाद मे श्री गणेश महाराज को हाथी का सिर लगाकर जीवित किया गया। इसी प्रकार नचिकेता ने भी माता-पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए अपना सर्वस्व परित्याग कर दिया।

माता-पिता का नाम सामने आते ही, मेरा सिर श्रद्धा से झुक जाता है। सच्च कहूँ तो प्रत्येक दिवस ही मेरे लिए एक माता - पिता दिवस है। मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि सन् **2012 में अन्तर्राष्ट्रीय माता - पिता दिवस के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने घोषित किया था** कि भारतीय संस्कृति में हर दिन माता-पिता व परिवार दिवस होता है, जिसका इतिहास श्रवण कुमार व भगवान श्री राम जी के आदर्श जीवन मूल्यों से सदैव ही अभिप्रेरित रहता है। जीवन एक सागर के समान है और इस भवसागर में माता - पिता रुपी किश्ती पर सवार होकर इस संसार सागर से पार हो सकतें हैं।

हालांकि माता-पिता के लिये जितना भी लिखा जाए, वह बहुत ही कम है, उनके त्याग और समर्पण की भावना का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है। त्याग की प्रतिमूर्ति, नि:स्वार्थ प्रेम की देवी और ममता की मूर्त और अनेक कष्ट सहकर, इस संसार में जन्म देकर हमारे अस्तित्व का अहसास करवाने वाली उस माँ तथा पिता के चरणों में ही चारों धाम विराजमान हैं। भगवान शिव जी भी कहते हैं, कि जिन्होंने अपने माता - पिता की सेवा का संकल्प ले लिया है, उनको किसी भी तीर्थ पर जाने की जरूरत नहीं है। सभी तीर्थ और धाम मात - पिता के चरणों में ही बसते हैं। हालांकि आज मेरे पिता मेरे पास नहीं हैं और यह कमी मुझे हमेशा ही खलती रही है, लेकिन मुझे याद है कि मेरी माँ ने ही मुझे पंख दिए और पिता ने , उन सपनों को उड़ान दी और मुझे इस बात को स्वीकार करने में कोई भी गुरेज नहीं है कि आज मै जो कुछ भी हूँ और जो कुछ भी हासिल किया है, वह उनके आशीर्वाद का ही प्रतिफल है। आज भी, जिस समय कोई विपरीत परिस्थिति आती है तो, मैं उनसे प्रेरणा लेकर, उनके द्वारा दिखलाए गए रास्ते पर चलते हुए ही जीवन में ,अपने सार्थक उदेश्य को हासिल करने के लिए प्रयासरत हूँ।

वास्तव में माता पिता का प्यार और माता-पिता की गोद में बैठकर जो सुकून और असीम आनन्द की अनुभूति होती है, उसका सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है। मेरी इज्जत, मेरी शोहरत और मेरा मान सम्मान सब माता- पिता का प्रसाद है। जिस माँ ने मुझे जन्म दिया और पिता ने जग में मुझे नाम दिया उसके लिए मैं कृतकृतज्ञ हूँ। माँ वास्तव में मेरे लिए उस बैंक के समान है, जिसमे मैं अपने सारे दु:ख दर्द जमा कर सकता हूँ और पिता उस क्रेडिट कार्ड के समान है जिनके पास बैलेंस न होते हुए भी उन्होंने मेरे सपने पूरे करने की कोशिश की। काश ,मेरी तकदीर लिखने का हक मेरी माँ को होता तो आज मुझे कोई गम नही होता।

माता पिता को नमन करूँ मैं बारम्बार । उनके आशीर्वाद से फले फूले संसार।

इस जीवन में वह बच्चे बड़े ही सौभाग्यशाली हैं, जिनके सिर पर माँ बाप का हाथ है और इसीलिए कहा गया है कि माता-पिता का साथ जीवन की सबसे बड़ी सौगात है। लेकिन आज बदलते हुए परिवेश में पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के दुष्प्रभाव में आकर, परिवारों में बढ़ती हुई एकल परिवार की अवधारणा से माता-पिता के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो गया है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि **भारतीय सभ्यता और संस्कृति में जहाँ पर माता - पिता को देवो भव:** का दर्जा प्राप्त था, आज के इस भौतिकवादी युग में उनको नजर लग गई है। पहले जहाँ एक पिता 10 बच्चों को पालता था, आज 10 बच्चों द्वारा एक माता पिता को

पालना दुभर हो गया है और यही कारण है कि आज देश में वृद्धाश्रमों की संख्या में निरंतर अभिवृद्धि हो रही है। भविष्य में यह परिस्थिति और भी भयावह होने वाली है, क्योंकि आज परिवार का अर्थ केवल पति पत्नी और उसके बच्चे हो गया है और यह हमारे समाज में नैतिक मूल्यों के अभाव के कारण ही हो रहा है।

आज विश्व माता-पिता दिवस के अवसर पर मैं केवल इतना ही कहना चाहताहूँ कि,माता का आंचल है, जीवन की सबसे बड़ी सुरक्षा और पिता का साथ है, जीवन की सबसे बड़ी रक्षा। वह लोग भाग्यशाली हैं,जिनके सिर पर माँ बाप का साया है और ऐसे लोगों के घर में ही तीर्थ है। अगर जीवन में खुश रहना हो तो, इस माता - पिता दिवस के अवसर पर संकल्प लें, कि जब तक प्राण हैं माता पिता को रोटी पहले और अपने परिवार को बाद में और जिस दिन यह अवधारणा पैदा हो गई उस दिन देश में वृद्धाश्रमों की संख्या कम होने लगेगी। आओ हम सब मिलकर, इस सपने को साकार करें और माता-पिता की यथा सम्भव सेवा करने का संकल्प ले। हर बेटे कर्तव्य है कि वह , अपने माता-पिता की वृद्धावस्था में पूरी श्रद्धा और भक्ति पूर्वक सेवा करें, जैसे उन्होंने आपके बचपन में आपकी सेवा की है, यदि आप माता-पिता के साथ ऐसा करेंगे तभी आप वास्तव में मनुष्य कहलाने के सच्चे हकदार होंगे। जीवन में पढ़ने लिखने का यही फल है कि आप एक अच्छे इंसान बनकर ,अपने माता-पिता की वृद्धावस्था में सेवा करे। आप अपने जीवन में कितना भी धन कमालो, कितनी ही बड़ी गाड़ी खरीद लो और कितना ही बड़ा मकान रहने के लिए बना लो, यदि माता-पिता का आशीर्वाद आपके साथ नहीं है तो सब बेकार है। एक दिन जब आप माँ - बाप बनेंगे और आपकी वृद्धावस्था मे बच्चे आपसे कहेंगे कि माता पिता ने हमारे लिए किया ही क्या है, तब आपको समझ में आएगा कि हमने क्या ग़लती की थी। इसलिए समय रहते अपनी ग़लती को सुधार लो और अपनी ग़लती के लिए उनसे क्षमा याचना मांग ले, माता-पिता का दिल समुद्र से भी बड़ा होता है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि माँ -बाप को आपके पैसे की जरूरत नहीं होती, वह केवल आपके मुख से दो शब्द प्यार के सुनने के लिए आतुर रहते हैं।

मुझे उद्योगपती की एक कहानी याद आती है। उसने न्यायालय में अपने बेटे के खिलाफ मुकदमा किया, कि मुझे गुजारा भत्ता दिलवाया जाए। जज साहब ने पूछा कि आपको कितना पैसा चाहिए तो, उस उद्योगपती ने जबाब दिया, कि सिर्फ एक रुपया महीना। जज ने कहा बस इतना ही, तो उसने जवाब दिया, कि साहब इस एक रुपए के बहाने बेटे के एक महीने में कम से कम एक दिन तो दर्शन हो जाएंगे। यह सुनकर जज साहब भी भावुक हो गए। मेरा कहने का अर्थ यह है कि इस आधुनिक युग में, जिस प्रकार से आपस में सम्बन्ध विच्छेद हो रहें हैं और मानसिक तनाव बढ़ रहा है, उसका एक ही ईलाज है, कि अपने माता-पिता को भगवान समझकर अपनी, चिन्ताओं को उनको समर्पित कर दो। फिर देखना आपकी चिंताओं का बोझ माता-पिता उठाएंगे, क्योंकि वह दया के सागर हैं और उनमें , ब्रह्मा , विष्णु और महेश तीनों ही मौजूद हैं। आज जरूरत सिर्फ पहचान करने और उनका मान सम्मान करने के साथ साथ उनका आशीर्वाद लेने की है।

इस दुनिया में सिर्फ माँ बाप ही ऐसे होते हैं, जो अपने बच्चों का कभी भी बुरा नहीं चाहते हैं। **मात - पिता की सेवा में चारों तीर्थ होय, माता-पिता को भूलकर खुख न पाता कोय।** इसलिए कभी भी भूखा रहने की नौबत आए , तो खुद भूखे रह जाना, लेकिन अपने माँ बाप की आंखों में कभी भी आंसू नहीं आने देना, तभी आपका जीवन सार्थक होगा और विशेष आनन्द की अनुभूति तथा मानसिक शांति मिलेगी।

****

10वीं और 12वीं बोर्ड परीक्षा 2026 में सर्वश्रेष्ट परिणाम प्राप्त करने वाले छात्र और छात्राएं

पूजा जांगिड, 12वीं
नई आबादी रेवाड़ी, 97.4%

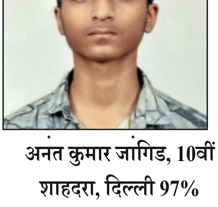

अनंत कुमार जांगिड, 10वीं
शाहदरा, दिल्ली 97%

हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं

राजस्थान के नागौर जिले की जायल तहसील के गाँव ज्याणी से **कुमारी अर्चना जांगिड** का चयन भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के प्रतिष्ठित **'युविका मिशन' (युवा वैज्ञानिक कार्यक्रम)** के लिए हुआ है, जो पूरे समाज के लिए गौरव की बात है। अर्चना वर्तमान मे महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय कठौती की छात्रा है। अर्चना जांगिड ने अपनी मेहनत और प्रतिभा के दम पर इस बड़ी उपलब्धि को हासिल किया है।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने अर्चना को महासभा की समस्त कार्यकारिणी की ओर से शुभकामना देते हुए उसके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

वाव-थराद जिला सभा कार्यकारिणी शपथ ग्रहण समारोह – रिपोर्ट

दिनांक 24-05-2026 को प्रातः 10:00 बजे अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, प्रदेश सभा गुजरात के तत्वावधान में श्री विश्वकर्मा मंदिर सुथार समाज धर्मशाला, ढीमा के प्रांगण में वाव-थराद जिला सभा की कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह एवं समस्त सुथार समाज सेवा समिति कल्याण संस्था (राजस्थान-गुजरात) का भव्य शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुजरात प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार जांगिड ने की।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथि महानुभावों द्वारा भगवान श्री विश्वकर्मा मंदिर में माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। सर्वप्रथम मंचासीन अतिथियों एवं दूर-दराज से पधारे समाजबंधुओं का माला एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। इसके पश्चात् वाव-थराद जिला सभा अध्यक्ष शान्तिलाल को प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार द्वारा शपथ दिलाई गई। इसके बाद जिला अध्यक्ष शान्तिलाल द्वारा नवगठित जिला कार्यकारिणी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई।

वाव-थराद जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष के रूप में श्रीमती कमी देवी को मनोनीत कर प्रदेश महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्रीमती रीमा देवी जी द्वारा पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। सभी उपस्थित महानुभावों ने नव-नियुक्त पदाधिकारियों को शुभकामनाएँ एवं बधाइयाँ प्रदान कीं। अतिथियों में राजेन्द्र कुमार, मोहनलाल जांगिड, रायमल सुथार, छगनलाल जालोर, श्रीमती कमी देवी आदि ने प्रेरणादायी उद्बोधन देते हुए समाज को संगठित रहने, बच्चों की उच्च शिक्षा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देने का संदेश दिया।

प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि प्रत्येक सदस्य पाँच-पाँच नए सदस्य जोड़ने का संकल्प ले, तो महासभा एक विशाल संगठन का रूप धारण कर सकती है। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष कैलाशचंद ने कहा कि वर्ष 2024 में गुजरात प्रदेश सभा को महासभा द्वारा प्राप्त सम्मान , सम्पूर्ण गुजरात प्रदेश के लिए गौरव का विषय है।

प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष प्रमोदकुमार (सूरत) द्वारा बच्चों की उच्च शिक्षा हेतु आर्थिक सहयोग एवं सेवा कार्यों की सराहना करते हुए, समाज द्वारा उनका तालियों से अभिनंदन किया गया। थराद सुथार/जांगिड़ समाज द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम अत्यंत अनुशासित, भव्य एवं प्रेरणादायी रहा। इस सफल आयोजन हेतु वाव-थराद जिले के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं का प्रदेश सभा की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

कार्यक्रम में गुजरात प्रदेश प्रभारी मोहनलाल (गांधीधाम), प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष प्रमोदकुमार (सूरत), पूर्व प्रदेश अध्यक्ष जोगाराम कुलरिया (अहमदाबाद), महावीर प्रसाद (अहमदाबाद), कैलाशचंद (सूरत), प्रदेश कोषाध्यक्ष पपुराम (आणंद), वरिष्ठ उपाध्यक्ष रामावतार, भाजपा मंडल अध्यक्ष चुतराराम जी सुथार, मालचन्द (अध्यक्ष राजनीतिक प्रकोष,गुजरात), श्रीमती रीमा देवी (अध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ,गुजरात), पूर्व जिलाध्यक्ष पोपटलाल (डीसा), माधाराम सुथार (मेड़ा-जालोर), भारतीय जनता पार्टी वाव-थराद जिला उपाध्यक्ष भवरलाल (बेवटा), श्विश्वकर्मा मंदिर सुथार समाज धर्मशाला ढीमा, अध्यक्ष मोहनलाल सुथार (वागासन), हुकमाराम सुथार (अध्यक्षः श्री विश्वकर्मा मन्दिर अरणाजी तीर्थ-जोधपुर), राज गज्जर (बनास तक एडिटर), पत्रकार एसोसिएशन अध्यक्ष तथा हमीरभाई सुथार सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

इसके अतिरिक्त कई जिलों के जिला अध्यक्ष उपस्थित रहे जो इस प्रकार है। हस्तीमल (कच्छ), नेमीचंद (खेड़ा), महावीर जी (महीसागर), मगाराम जी (आणंद), दयानंद (अरावली), जिला महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्रीमती सुशीला (साबरकांठा) सहित महासभा, प्रदेश सभा एवं जिला सभा के अनेक पदाधिकारी, वरिष्ठ समाजसेवी, समाजबंधु, मातृशक्ति एवं युवा वर्ग उपस्थित रहे। अंत में वाव-थराद जिला अध्यक्ष शान्तिलाल ने सभी अतिथियों, पदाधिकारियों एवं समाजबंधुओं का आभार व्यक्त किया तथा सभी को स्नेह-भोज हेतु आमंत्रित करते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की। कार्यक्रम का प्रभावशाली संचालन पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल एवं पोपटलाल द्वारा किया गया। **"समाज की एकता ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। परिवार से ही समाज का निर्माण होता है और सशक्त समाज से उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है।"**

मानाराम सुथार

****

प्रदेश महामन्त्री - प्रदेश सभा - गुजरात

प्रदेश सभा राजस्थान द्वारा 12 जुलाई 2026 को आयोजित किए जाने वाले

"उद्यमिता एवं व्यवसाय मार्गदर्शन सेमिनार" के पोस्टर का विमोचन और जिला अध्यक्षों की मीटिंग का सार

7 जुलाई, 2026 को अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, प्रदेश सभा-राजस्थान की एक विशेष मीटिंग का आयोजन प्रदेश सभा भवन, विद्याधर नगर, जयपुर पर किया गया, जिसमें प्रदेश के समस्त जिला अध्यक्षों और प्रदेश सभा के प्रमुख पदाधिकारियों को आमंत्रित किया गया।

मीटिंग की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पंवार ने की। सर्व प्रथम प्रदेश महामंत्री कैलाश शर्मा सालीवाले ने इस मीटिंग के आयोजन की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि कई जिला अध्यक्ष, प्रदेश सभा के निर्देशों की अवहेलना करते हैं, वे महासभा द्वारा जारी निर्देशों की पालना के प्रति भी लापरवाह होते हैं, जिससे न सिर्फ उनके जिलों का सामाजिक संगठन कमजोर होता है बल्कि इसका प्रदेश सभा और महासभा तक दुष्प्रभाव पड़ता है। कई पूर्व जिला अध्यक्षों ने अभी तक चार्ज हस्तांतरित नहीं किया है और कई जिलों का पंजीयन भी महासभा से नहीं हुआ है। अधिकांश जिला सभाओं में बैंक खाते भी नहीं है। इन सब विषयों पर विस्तृत चर्चा हेतु इस मीटिंग का आयोजन किया गया है।

प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पंवार ने प्रदेश सभा द्वारा प्रस्तावित भावी कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रदेश सभा समाज के विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में तो निरंतर प्रोत्साहित करने के उल्लेखनीय कार्य करती रही है, इसी क्रम में प्रदेश सभा प्रतिवर्ष राज्यस्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित करती है। इस वर्ष का प्रतिभा सम्मान समारोह भी अक्तूबर माह में आयोजित किया जायेगा।

गत वर्ष **"प्रेरणा प्रयास और परिणाम"** की अभूतपूर्व सफलता को देखते हुए आगामी 30 अगस्त को बिरला ऑडिटोरियम में एक और राज्य स्तरीय मोटिवेशनल सेमिनार का आयोजन किया जायेगा।

प्रदेश सभा समाज के युवकों को स्वरोजगार के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से 12 जुलाई, 2026 को प्रदेश सभा भवन के **"उमंग सभागार"** में एक अनूठी कार्यशाला **"उद्यमिता एवं व्यवसाय मार्गदर्शन सेमिनार"** का आयोजन करेगी जिसमें उद्योगपतियों को भी आमंत्रित किया जायेगा। इस सेमिनार में नया उद्योग शुरू करने, बिजनेस ग्रोथ करने, सरकारी योजनाओं की जानकारी और सफल उद्योगपतियों के अनुभव से लक्ष्य प्राप्ति के टिप्स बताये जायेंगे।

प्रसिद्ध उद्योगपति और मोटिवेशनल स्पीकर प्रोफेसर आर. एस. चोयल इस सेमिनार को संबोधित करेंगे। मीटिंग में इस कार्यक्रम के पोस्टर का विमोचन भी किया गया।

प्रदेश अध्यक्ष द्वारा महासभा संविधान में वर्णित सभी प्रदेश सभाओं द्वारा अपने कार्यकाल में एक आम सभा करने के सुझाव पर सभी जिला अध्यक्षों की राय मांगी गयी। उन्होंने बताया कि यदि सभी जिलों का समर्थन और सहयोग मिला और महासभा से स्वीकृति मिली तो इस आम सभा के आयोजन पर विचार किया जायेगा।

मीटिंग में समस्त जिला अध्यक्षों ने अपने जिलों में किए जा रहे समाज हित के विकास कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। वे अपने जिलों में शिक्षा को बढ़ावा देने और समाज में व्याप्त कुरीतियां दूर करने के लिए प्रयासरत हैं। उन्होंने प्रदेश सभा के प्रस्तावित कार्यक्रमों में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया।

जिला अध्यक्षों ने अपनी समस्याएं भी बताई, जिनमें प्रमुख है, बैंकों में हमारी जिला सभाओं के खाते नहीं खुल पा रहें हैं। दूसरा, तहसील सभाएं अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन करती है तो राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली प्रोत्साहन राशि नहीं देती है, क्योंकि तहसीलों का प्रदेश स्तर पर पंजीयन नहीं होता है। उनका पंजीयन महासभा का होता है जो दिल्ली प्रदेश का है, इसलिए दूसरी सामूहिक विवाह संस्थाएं राज्य सरकार से पंजीयन करवाकर इसका फायदा उठाती है। इन दोनों समस्याओं का समाधान महासभा द्वारा किया जाना चाहिए।

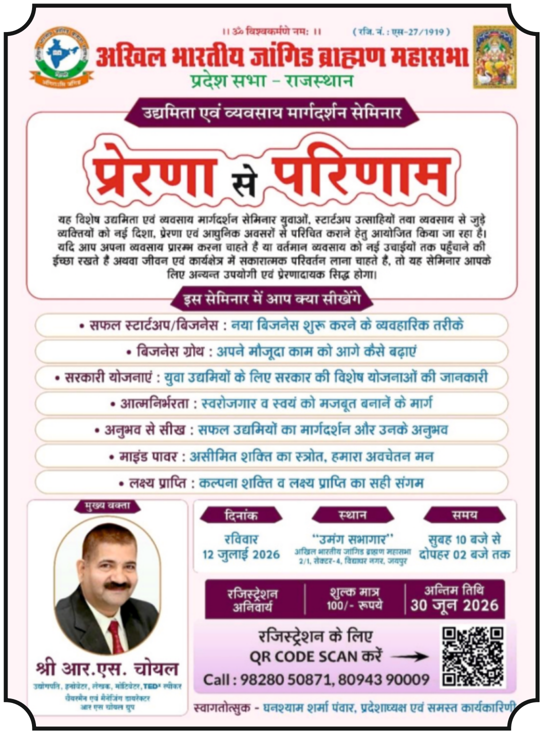

मीटिंग में राजस्थान भाजपा के ओबीसी मोर्चे के प्रदेश महामंत्री बनने पर बीकानेर जिला अध्यक्ष भंवर लाल जांगिड का सम्मान किया गया। नवनिर्वाचित जिला अध्यक्षों का भी सम्मान किया गया। विश्वकर्मा टुडे के संपादक, पत्रकार नरेश शर्मा का सम्मान किया गया। भारत की क्रिकेट टीम में श्री गंगानगर के मानव सुथार को शामिल किये जाने पर खुशी जाहिर की और उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गयी।

मीटिंग में प्रदेश पदाधिकारियों में युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष धर्मवीर जांगिड, कोषाध्यक्ष मुकेश कुमार, वरिष्ठ मंत्री हर्ष जिठावा, छात्रावास प्रभारी रामशरण जांगिड, प्रदेश प्रवक्ता महेश जांगिड, मुख्य चुनाव प्रभारी बसंतलाल गेपाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुरेन्द्र कासलीवाल के अलावा महासभा के राष्ट्रीय प्रवक्ता राधेश्याम मांडण, मिशन डेढ़ लाख सदस्य प्रभारी रामजी लाल, जयपुर जिला अध्यक्ष मुकेशकुमार झाझवाड, सीकर जिला अध्यक्ष बनवारी लाल खंडेलसर, भीलवाडा जिला अध्यक्ष महावीर प्रसाद, चुरू जिला अध्यक्ष नीरज रोलीवाल, बाड़मेर जिला अध्यक्ष हरजीराम सुथार, बीकानेर जिला अध्यक्ष भंवर लाल जांगिड, चित्तोडगढ जिला अध्यक्ष गोटूलाल सुथार, दौसा जिला अध्यक्ष चेतन प्रकाश शर्मा, डीग जिला अध्यक्ष जगदीश प्रसाद शर्मा, झुंझुनू जिला अध्यक्ष सुनील कुमार सीदड़, कोटपुतली जिला मंत्री सत्यप्रकाश, राजसमंद जिला अध्यक्ष दिनेश बाबूलाल, उदयपुर जिला अध्यक्ष नारायण लाल, जोधपुर जिला अध्यक्ष राजेंद्र कुमार जांगिड, बालोतरा जिला अध्यक्ष सवाईराम कुलरिया आदि ने अपने विचार रखे।

अंत में प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम शर्मा पंवार ने जिला अध्यक्षों की समस्याओं के समाधान का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रदेश महामंत्री कैलाश शर्मा सालीवाले ने किया । सभी जिला अध्यक्षों ने इस मीटिंग को बहुत सार्थक और सफल बताया।

कैलाश शर्मा सालीवाले, प्रदेश महामंत्री

****

विश्व पर्यावरण दिवस 2026 : "प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करें"

थीम के साथ प्लास्टिक प्रदूषण की रोकथाम के लिए एक सार्थक प्रयास

मानव सभ्यता का विकास प्रकृति की गोद में हुआ है। पृथ्वी, जल, वायु, वन, पर्वत, नदियाँ और जैव विविधता मानव जीवन के आधार स्तंभ हैं। यदि पर्यावरण संतुलित है तो मानव जीवन सुरक्षित और समृद्ध है, लेकिन जब पर्यावरण असंतुलित होता है तो उसके दुष्परिणाम पूरे विश्व को भुगतने पड़ते हैं। आज जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, वनों की कटाई, जल संकट, प्रदूषण और जैव विविधता के क्षरण जैसी समस्याएँ मानव अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। इन चुनौतियों के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष **5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है।**

विश्व पर्यावरण दिवस केवल एक दिवस नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति वैश्विक संकल्प का प्रतीक है। वर्ष 2026 में भी यह दिवस पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान और सतत विकास के संदेश के साथ मनाया गया। इस वर्ष की प्रमुख थीम **"प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करें" (Beat Plastic Pollution)** रही, जिसका उद्देश्य विश्वभर में बढ़ते प्लास्टिक कचरे के संकट से निपटना है।

विश्व पर्यावरण दिवस का इतिहास - विश्व पर्यावरण दिवस की शुरुआत वर्ष 1972 में हुई जब स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानव पर्यावरण पर पहला वैश्विक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसी सम्मेलन के बाद संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। वर्ष 1974 में पहली बार इसका आयोजन किया गया।

तब से लेकर आज तक यह दिवस पर्यावरण संरक्षण के लिए विश्व का सबसे बड़ा जन-जागरूकता अभियान बन चुका है। प्रत्येक वर्ष किसी विशेष विषय या थीम पर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिससे लोगों का ध्यान उस समस्या की ओर आकर्षित किया जा सके।

वर्ष 2026 की थीम : "प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करें"

प्लास्टिक आधुनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। पानी की बोतलों से लेकर पैकेजिंग, घरेलू वस्तुओं और उद्योगों तक प्लास्टिक का व्यापक उपयोग होता है। लेकिन इसकी सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह आसानी से नष्ट नहीं होता। एक प्लास्टिक बैग को पूरी तरह विघटित होने में सैकड़ों वर्ष लग सकते हैं। आज विश्व में प्रतिवर्ष करोड़ों टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न हो रहा है, जिसका बड़ा हिस्सा समुद्रों, नदियों, जंगलों और भूमि में पहुँचकर पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रहा है। सूक्ष्म प्लास्टिक **(Microplastics)** अब भोजन, पेयजल और यहाँ तक कि मानव शरीर में भी पाए जाने लगे हैं।

इसलिए इस वर्ष की थीम का मुख्य संदेश है:- "प्लास्टिक का कम उपयोग करें, पुनः उपयोग करें और पुनर्चक्रण को बढ़ावा दें।" प्लास्टिक प्रदूषण एक वैश्विक संकट आज विश्व के लगभग सभी देशों में प्लास्टिक प्रदूषण गंभीर समस्या बन चुका है। **संयुक्त राष्ट्र के अनुसार** प्रतिवर्ष लाखों टन प्लास्टिक समुद्रों में पहुँच जाता है। इससे समुद्री जीवों, पक्षियों और अन्य जीव-जंतुओं का जीवन खतरे में पड़ जाता है। भूमि की उर्वरता में कमी, जल स्रोतों का प्रदूषण, समुद्री जीवन को खतरा,पशुओं द्वारा प्लास्टिक खाने से मृत्य, मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव, जल निकासी व्यवस्था में बाधा, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में वृद्धि आदि प्लास्टिक प्रदूषण के प्रमुख दुष्प्रभाव है। आज प्लास्टिक केवल पर्यावरणीय समस्या नहीं बल्कि स्वास्थ्य और आर्थिक समस्या भी बन चुकी है।

भारत में पर्यावरण की वर्तमान स्थिति: भारत विश्व की सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। भारत जिन प्रमुख पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहा है, उनमें निम्न समस्याए शामिल है।

1. वायु प्रदूषण:- विश्व के अनेक प्रदूषित शहर भारत में स्थित हैं। वाहनों, उद्योगों, निर्माण कार्यों और पराली जलाने से वायु गुणवत्ता प्रभावित होती है। **2. जल प्रदूषण:-** नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट और घरेलू गंदगी के कारण जल स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं। गंगा, यमुना सहित कई नदियों को स्वच्छ बनाने के लिए बड़े स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। **3. प्लास्टिक कचरा:-**भारत प्रतिदिन हजारों टन प्लास्टिक कचरा उत्पन्न करता है। इसका बड़ा हिस्सा खुले में फेंक दिया जाता है। **4. वन क्षेत्र पर दबाव:-** हालाँकि भारत में वन क्षेत्र बढ़ाने के प्रयास हुए हैं, फिर भी विकास परियोजनाओं और बढ़ती आबादी के कारण वनों पर दबाव बना हुआ है। **5. जलवायु परिवर्तन:-** अनियमित वर्षा, अत्यधिक गर्मी, सूखा और बाढ़ जैसी घटनाएँ जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को दर्शाती हैं।

भारत पर प्लास्टिक प्रदूषण का प्रभाव

1. प्लास्टिक कचरा खेतों में पहुँचकर मिट्टी की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। इससे मिट्टी की जल धारण क्षमता कम होती है और उत्पादन प्रभावित होता है। 2. नालियों और नदियों में प्लास्टिक जमा होने से जल प्रवाह बाधित होता है। बरसात में इससे जलभराव और बाढ़ की समस्या बढ़ जाती है। 3. ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गाय तथा अन्य पशु कूड़े में पड़ी प्लास्टिक खा लेते हैं, जिससे उनकी मृत्यु तक हो जाती है। 4. प्लास्टिक कचरे से समुद्र तट, पर्वतीय क्षेत्र और धार्मिक स्थल प्रदूषित होते हैं, जिससे पर्यटन उद्योग प्रभावित होता है। 5. प्लास्टिक के सूक्ष्म कण भोजन और पानी के माध्यम से मानव शरीर में पहुँच रहे हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार यह भविष्य में अनेक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है।

प्लास्टिक प्रदूषण के व्यापक दुष्प्रभाव को देखते हुए भारत सरकार ने पर्यावरण संरक्षण के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। **1. एकल उपयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध:** भारत सरकार ने सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को सीमित करने के लिए विभिन्न प्रतिबंध लागू किए हैं। **2. स्वच्छ भारत अभियान:** यह अभियान स्वच्छता और कचरा प्रबंधन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। **3. नमामि गंगे परियोजना:** गंगा नदी की स्वच्छता और संरक्षण के लिए यह एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है। **4. राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम:** इसका उद्देश्य शहरों में वायु प्रदूषण को कम करना है। **5. हरित ऊर्जा को बढ़ावा:** भारत सौर और पवन ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इससे जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम हो रही है।

6. मिशन लाइफ (LiFE): प्रधानमंत्री द्वारा प्रारंभ किया गया **Lifestyle for Environment (LiFE)** अभियान पर्यावरण अनुकूल जीवनशैली को बढ़ावा देता है।

पर्यावरण संरक्षण में नागरिकों की भूमिका- सरकार के प्रयास तभी सफल हो सकते हैं जब आम नागरिक भी अपनी जिम्मेदारी समझें। प्रत्येक व्यक्ति निम्न कार्य कर सकता है। कपड़े या जूट के थैले का उपयोग, प्लास्टिक बोतलों का कम उपयोग, कचरे का पृथक्करण, अधिक से अधिक वृक्षारोपण, पानी और बिजली की बचत, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, पर्यावरण अनुकूल उत्पादों को अपनाना, प्लास्टिक मुक्त कार्यक्रमों का आयोजन। भारत दुनिया का सबसे युवा देशों में से एक है। युवाओं की भागीदारी पर्यावरण संरक्षण को जन आंदोलन बना सकती है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में पर्यावरण क्लब स्थापित किए जाएँ। वृक्षारोपण अभियान चलाए जाएँ। प्लास्टिक मुक्त परिसर बनाए जाएँ। जल संरक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। युवा सोशल मीडिया के माध्यम से भी व्यापक जागरूकता फैला सकते हैं।

भारतीय संस्कृति और पर्यावरण- भारतीय संस्कृति में प्रकृति को देवतुल्य माना गया है। हमारे यहाँ नदियों को माता, वृक्षों को पूजनीय और पृथ्वी को धारण करने वाली देवी माना गया है। ऋग्वेद, उपनिषद और पुराणों में प्रकृति संरक्षण का संदेश मिलता है। पीपल, बरगद, तुलसी और नीम जैसे वृक्षों की पूजा केवल धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी है। महात्मा गांधी ने कहा था: **"पृथ्वी प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, लेकिन किसी एक व्यक्ति के लालच की नहीं।"** यह कथन आज के पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है।

भविष्य की चुनौतियाँ - यदि वर्तमान गति से प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जारी रहा तो भविष्य में अनेक गंभीर समस्याएँ सामने आ सकती हैं। जल संकट में वृद्धि। खाद्य सुरक्षा पर खतरा। जैव विविधता का क्षरण। समुद्र स्तर में वृद्धि। प्राकृतिक आपदाओं की संख्या में बढ़ोतरी। मानव स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव। इन चुनौतियों का समाधान केवल सरकारों के प्रयासों से नहीं होगा, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग को अपनी भूमिका निभानी होगी। विश्व पर्यावरण दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि पृथ्वी केवल हमारी नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की भी धरोहर है। **वर्ष 2026 की थीम "प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करें"** वर्तमान समय की सबसे बड़ी पर्यावरणीय चुनौतियों में से एक पर केंद्रित है। भारत जैसे विशाल और जनसंख्या बहुल देश के लिए यह विषय और भी अधिक महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी नीति नहीं, बल्कि जीवनशैली का हिस्सा बनना चाहिए। यदि हम प्लास्टिक का उपयोग कम करें, वृक्षारोपण को बढ़ावा दें, जल एवं ऊर्जा की बचत करें और प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनें, तो एक स्वच्छ, हरित और सुरक्षित भविष्य का निर्माण संभव है।

विश्व पर्यावरण दिवस का वास्तविक संदेश यही है कि **"प्रकृति की रक्षा ही मानवता की रक्षा है।"** जब हम पर्यावरण को बचाएँगे, तभी विकास, समृद्धि और जीवन की निरंतरता सुनिश्चित हो सकेगी। इसलिए आइए संकल्प लें कि हम स्वयं भी पर्यावरण मित्र बनेंगे और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। यही विश्व पर्यावरण दिवस की सार्थकता है।

*****

आने वाला समय क्या कुंवारेपन का युग होगा?
- मॉर्गन स्टेनली के एक अध्ययन का सार भविष्य के लिए एक अलार्म

मानव सभ्यता का आधार परिवार रहा है। परिवार से समाज बनता है, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से संस्कृति का विकास होता है। भारतीय संस्कृति में विवाह केवल सामाजिक अनुबंध नहीं बल्कि एक संस्कार माना गया है। हिन्दू धर्म में सोलह संस्कारों में विवाह संस्कार का विशेष महत्व है। यही कारण है कि भारतीय समाज में परिवार व्यवस्था हजारों वर्षों से सामाजिक स्थिरता का प्रमुख आधार रही है। किन्तु 21वीं सदी में तेजी से बदलते सामाजिक और आर्थिक परिवेश ने विवाह संस्था के सामने नई चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। हाल के वर्षों में अनेक शोध और सर्वेक्षण इस बात की ओर संकेत कर रहे हैं कि दुनिया भर में विवाह की आयु बढ़ रही है, अविवाहित रहने वालों की संख्या बढ़ रही है तथा जन्मदर में गिरावट आ रही है। मॉर्गन स्टेनली के एक चर्चित अध्ययन में यह अनुमान व्यक्त किया गया कि 2030 तक 25 से 44 वर्ष आयु वर्ग की बड़ी संख्या में महिलाएँ अविवाहित रह सकती हैं।

यद्यपि यह अध्ययन मुख्य रूप से अमेरिकी समाज के संदर्भ में था, फिर भी इसके संकेत भारत सहित विश्व के अनेक देशों में दिखाई देने लगे हैं। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या आने वाला समय वास्तव में **"कुंवारेपन का युग"** होगा? यदि ऐसा हुआ तो इसके सामाजिक, सांस्कृतिक और जनसंख्या संबंधी क्या प्रभाव होंगे? विशेष रूप से हिन्दू समाज को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है?

आज विवाह में युवाओं की रूचि घट रही है इसका मुख्य कारण है कि आज का युवा वर्ग पहले की तुलना में अधिक शिक्षित और आर्थिक रूप से स्वतंत्र है। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़े हैं। इससे उनके जीवन के लक्ष्य भी बदले हैं। महिलाओं में करियर, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता देने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इसीलिए..........

1. आज की लड़कियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है और करियर को प्राथमिकता दे रही हैं।

2. वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही हैं और किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहती हैं।

3. आज की महिलाओं को स्वतंत्रता प्रिय है और वे अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेना चाहती हैं।

4. विवाह, मातृत्व और पारिवारिक बंधनों को वे अक्सर अपनी प्रगति में बाधा मानने लगी हैं।

इन कारणों से विवाह की आयु लगातार बढ़ रही है और कुछ लोग विवाह से पूरी तरह दूरी भी बना रहे हैं। कई माता पिता लड़कियों के रिश्ते तो ढूंढ रहे हैं, पर स्वयं लड़की को विवाह में रूचि नहीं होती। जिसके कारण हर रिश्ता नकारा जा रहा है।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी हैं जैसे विवाह की बढ़ती आर्थिक लागत। महानगरों में जीवनयापन का महँगा होना। करियर की प्रतिस्पर्धा। सोशल मीडिया और डिजिटल जीवनशैली। तलाक की बढ़ती घटनाओं से उत्पन्न आशंकाएँ। व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सर्वोच्च महत्व देना।

यदि यह प्रवृति बनी रही तो भारतीय पारंपरिक परिवार प्रणाली और सामाजिक संरचना बिखर सकती हैं। जनसंख्या में गिरावट, कुंवारे लड़को और लड़कियों की संख्या में वृद्धि और वृद्धावस्था में अकेलेपन की समस्याएँ सामने आ सकती हैं। प्रश्न यह भी उठता है कि प्रगति, पद और पैसा किस काम आएंगे, जब जीवन के अंत में साथ देने वाला कोई जीवण साथी नही होगा?

हिन्दू समाज के लिए जनसंख्या संबंधी चुनौती

हिन्दू दर्शन में परिवार केवल निजी व्यवस्था नहीं बल्कि धर्म, संस्कृति और संस्कारों के संरक्षण का माध्यम है। यदि विवाह और संतानोत्पत्ति की दर में निरंतर कमी आती है तो भविष्य में जनसंख्या संतुलन प्रभावित हो सकता है। विश्व के कई विकसित देशों जैसे जापान और दक्षिणी कोरिया में जन्मदर अत्यंत निम्न स्तर पर पहुँच चुकी है। वहाँ सरकारें लोगों को विवाह और संतानोत्पत्ति के लिए प्रोत्साहित करने हेतु विशेष योजनाएँ चला रही हैं। भारत में अभी जनसंख्या अपेक्षाकृत युवा है, लेकिन महानगरों और शिक्षित वर्ग में देर से विवाह तथा कम बच्चों की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई दे रही है। यदि यह प्रवृत्ति अत्यधिक बढ़ती है तो आने वाले दशकों में वृद्धजन आबादी का अनुपात बढ़ सकता है।

परिवार व्यवस्था पर प्रभाव

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी शक्ति संयुक्त परिवार और पारिवारिक सहयोग रहा है। परिवार केवल आर्थिक इकाई नहीं बल्कि भावनात्मक सुरक्षा का केंद्र भी है। यदि अविवाहित रहने की प्रवृत्ति व्यापक हो जाती है तो अकेले रहने वालों की संख्या बढ़ेगी। वृद्धावस्था में देखभाल की समस्या बढ़ सकती है। पारिवारिक संस्कारों का हस्तांतरण कमजोर हो सकता है। सामाजिक संबंध अधिक औपचारिक हो सकते हैं। आज भी अनेक देशों में अकेलेपन को सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या माना जाने लगा है। बढ़ती एकाकी जीवनशैली मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकती है।

हिन्दू संस्कृति और विवाह का महत्व

हिन्दू धर्म में विवाह केवल पति-पत्नी का संबंध नहीं है। इसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की यात्रा का महत्वपूर्ण चरण माना गया है। राम और सीता, शिव और पार्वती, तथा अन्य अनेक आदर्श दम्पत्तियों के उदाहरण भारतीय संस्कृति में इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे परिवार, कर्तव्य और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करते हैं। विवाह का उद्देश्य केवल संतानोत्पत्ति नहीं बल्कि सामाजिक स्थिरता, सांस्कृतिक निरंतरता, पारिवारिक उत्तरदायित्व, और आध्यात्मिक उन्नति भी माना गया है।

क्या आर्थिक प्रगति परिवार का विकल्प बन सकती है?

आधुनिक समाज में धन और करियर को सफलता का प्रमुख मापदंड माना जाता है। लेकिन केवल आर्थिक समृद्धि जीवन की सम्पूर्ण संतुष्टि नहीं दे सकती। मानव जीवन में प्रेम, अपनापन, सहयोग और भावनात्मक सुरक्षा की भी आवश्यकता होती है। इसलिए यह मान लेना कि विवाह अप्रासंगिक हो जाएगा, शायद अतिशयोक्ति होगी। इतिहास बताता है कि सामाजिक संस्थाएँ समय के साथ बदलती हैं, समाप्त नहीं होतीं। विवाह संस्था भी बदल सकती है, लेकिन उसका पूर्णतः समाप्त होना निकट भविष्य में संभव नहीं लगता।

युवाओं के सामने वास्तविक चुनौती

आज के युवाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती संतुलन की है। एक ओर करियर और आत्मनिर्भरता आवश्यक हैं, दूसरी ओर परिवार और सामाजिक उत्तरदायित्व भी महत्वपूर्ण हैं। यदि युवा केवल आर्थिक सफलता को लक्ष्य बनाएँगे तो जीवन का भावनात्मक पक्ष कमजोर पड़ सकता है। वहीं यदि वे केवल पारंपरिक सोच तक सीमित रहेंगे तो आधुनिक अवसरों का लाभ नहीं उठा पाएँगे। इसलिए आवश्यकता संतुलित दृष्टिकोण की है।

वैवाहिक और पारिवारिक परंपरा को बचाने के लिये समाज क्या कर सकता है?

विवाह को बोझ नहीं बल्कि संस्कार के रूप में प्रस्तुत करे। दहेज और अनावश्यक खर्च जैसी कुप्रथाओं को समाप्त करे। युवाओं को करियर और परिवार के बीच संतुलन का संदेश दे। पारिवारिक मूल्यों को आधुनिक संदर्भों में पुनः स्थापित करे। महिलाओं और पुरुषों दोनों के सम्मान एवं समान अवसरों को सुनिश्चित करे। विवाह और परिवार के प्रति सकारात्मक सामाजिक वातावरण बनाए।

"आने वाला समय कुंवारेपन का युग होगा" यह कथन पूर्ण सत्य नहीं कहा जा सकता, लेकिन यह अवश्य है कि दुनिया भर में विवाह और परिवार की पारंपरिक धारणाएँ तेजी से बदल रही हैं। मॉर्गन स्टेनली के अध्ययन ने इसी परिवर्तन की ओर ध्यान आकर्षित किया है। हिन्दू समाज के लिए यह समय चिंता से अधिक चिंतन का विषय है। आवश्यकता किसी वर्ग को दोष देने की नहीं, बल्कि उन सामाजिक और आर्थिक कारणों को समझने की है जिनके कारण विवाह की प्रवृत्तियाँ बदल रही हैं।

यदि हम आधुनिकता और पारिवारिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित कर सकें, तो भविष्य की चुनौतियों का समाधान संभव है। परिवार भारतीय संस्कृति की आत्मा है, और यही आत्मा आने वाले समय में भी समाज को स्थिरता, संस्कार और दिशा प्रदान कर सकती है।

******

अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा, दिल्ली
पंजीकरण संख्या एस. – 27/1919
प्रदेश सभा उत्तर प्रदेश
कार्यालय : 40 ए, वृन्दावन गार्डन, साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ0प्र0)–201005
Website: www.abjbmahasabha.com

अशोक कुमार शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष, मो0: 99999457648
सुनील कुमार शर्मा, महामंत्री, मो0: 9810190386
रमेशचन्द्र जांगिड़, कोषाध्यक्ष, मो0: 9818332844

पत्रांक .... दिनांक ....

चुनाव अधिसूचना – जिलाध्यक्ष पद बागपत

अधिसूचना क्रमांक यू.पी./02/2026 जारी दिनांक 15 जून 2026

(अध्यक्ष प्रदेश सभा उ.प्र. के पत्रांक ABJBUP/29-2026 dt. 27-04-2026 के अनुपालन में जारी)

अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा, जिला सभा-बागपत के अध्यक्ष पद का चुनाव प्रस्तावित है। उक्त जिले के चुनाव हेतु प्रदेश सभा उत्तर प्रदेश द्वारा चुनाव अधिसूचना उपरोक्त पत्रांक अनुसार जारी की जा रही है।

उपरोक्त जिले के जिलाध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्यगण, महासभा - प्रदेश सभा कार्यकारिणी सदस्य, तहसील - शाखा, सभा अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्यगण सभी अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझते हुए चुनाव अधिसूचना का व्यापक प्रचार प्रसार पेम्पलेट, समाचार पत्र, सोशल मीडिया आदि के माध्यम से पूरे जिले में करावें व सभी सदस्यों तक सूचना पहुचाएं तथा अपने जिले में महासभा के अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य बनाने का प्रयास करें।

जारी अधिसूचना के अन्तर्गत बागपत जिले का चुनाव कार्यक्रम निम्नानुसार रहेगा-

जिला	सदस्यता मान्य	नामांकन तिथि	नामांकन का स्थान	मतदान तिथि
बागपत	15 जुलाई 2026 तक	19 जूलाई 2026 रविवार	257, गायत्रीपुरम, ICICI बिल्डिंग, दिल्ली रोड, बागपत	26 जुलाई 2026 रविवार

उक्त चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न कराने हेतु श्री रमेश चन्द शर्मा, मोबाइल नंबर 8178240258 को चुनाव अधिकारी जिला बागपत नियुक्त किया जाता है।

चुनाव अधिसूचना जारी तिथि	-	15 जून 2026 सोमवार।
नामांकन आवेदन	-	नामांकन तिथि को प्रातः 10:00 बजे मध्यान्ह 1:00 बजे तक।
नामांकन पत्रों की जांच	-	नामांकन तिथि को माध्यान्ह 1:00 बजे से 1:30 बजे तक।
नाम वापसी	-	नामांकन तिथि को मध्यान्ह 1:30 बजे से सायं 3:30 बजे तक।
(सर्वसम्मति व एक ही नामांकन प्राप्त होने पर जिलाध्यक्ष पद की घोषणा एवं शपथ समयानुसार की जावेगी)		
अंतिम प्रत्याशियों के नामों की घोषणा	-	नामांकन तिथि को सायं 3:45 बजे।
चुनाव चिन्ह आवंटन	-	नामांकन तिथि को सायं 4:00 बजे।
मतदान आवश्यक होने पर मतदान तिथि को प्रातः 10:00 बजे से सायं 5:00 बजे तक।		
मतगणना	-	मतदान समाप्ति के पश्चात्।

मुख्य चुनाव प्रभारी
(धर्मपाल शर्मा)
अ.भा. जांगिड़ ब्राह्मण महासभा
प्रदेश सभा उत्तर प्रदेश

अखिल भारतीय जांगिड़ ब्राह्मण महासभा रजि०क्र०–27-1919 प्रदेश सभा–उ0प्र0

धर्मपाल शर्मा
मुख्य चुनाव प्रभारी
प्रदेश सभा–उत्तर प्रदेश
मो०–9761077508

(ॐ) ओम् शब्द का अर्थ और स्वरूप

ओम् (ॐ) भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का सबसे पवित्र, प्राचीन और दिव्य मंत्र माना जाता है। इसे प्रणव मंत्र, एकाक्षर ब्रह्म तथा नाद ब्रह्म भी कहा जाता है। हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और योग परंपरा में ओम् का विशेष महत्व है। यह केवल एक शब्द नहीं, बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि, चेतना और परमात्मा का प्रतीक माना गया है। भारतीय ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व यह अनुभव किया कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड एक सूक्ष्म ध्वनि से संचालित होता है और उस मूल ध्वनि का प्रतीक **"ॐ"** है। इसी कारण ओम् को सभी मंत्रों का मूल तथा आध्यात्मिक साधना का आधार माना गया है।

ओम् तीन अक्षरों - अ, उ और म से मिलकर बना है। इन तीनों अक्षरों में सम्पूर्ण सृष्टि का रहस्य समाहित माना गया है। **अ** सृष्टि के निर्माण का प्रतीक है। **उ** सृष्टि के पालन का प्रतीक है। **म** सृष्टि के संहार अथवा परिवर्तन का प्रतीक है। इन तीनों अक्षरों के बाद जो मौन आता है, वह परम शांति और परम सत्य का प्रतीक माना जाता है। इस प्रकार ओम् सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय का प्रतिनिधित्व करता है।

वेदों और उपनिषदों में ओम्- भारतीय धर्मग्रंथों में ओम् का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वेदों में इसे परमात्मा का प्रतीक बताया गया है। विशेष रूप से **माण्डूक्य उपनिषद** में ओम् की विस्तृत व्याख्या मिलती है। वहाँ कहा गया है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड और समस्त काल, भूत, वर्तमान तथा भविष्य, ओम् में समाहित हैं।

भगवद्गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं: **"अक्षराणाम् अकारोऽस्मि"** अर्थात अक्षरों में मैं **"अ"** हूँ। गीता में ओम् को ब्रह्म का प्रतीक और ईश्वर प्राप्ति का साधन बताया गया है।

ओम् और ब्रह्म- भारतीय दर्शन में ब्रह्म को निराकार, अनंत और सर्वव्यापी माना गया है। उस निराकार ब्रह्म को किसी रूप में व्यक्त करना कठिन है। इसलिए ऋषियों ने ओम् को ब्रह्म का ध्वनि-स्वरूप माना। जब साधक ओम् का जप करता है तो वह अपने मन को उस परम चेतना से जोड़ने का प्रयास करता है। आदि शंकराचार्य ने भी ओम् को ब्रह्म का प्रत्यक्ष प्रतीक बताया है। उनके अनुसार ओम् का चिंतन साधक को आत्मज्ञान की ओर ले जाता है।

आध्यात्मिक दृष्टि से ओम् का महत्व

1. आत्मा और परमात्मा का सेतु: ओम् का जप व्यक्ति को बाहरी संसार से हटाकर अपने भीतर की चेतना से जोड़ता है। यह आत्मा और परमात्मा के बीच सेतु का कार्य करता है।

2. मन की एकाग्रता: आधुनिक जीवन में मन अत्यंत चंचल हो गया है। ओम् के नियमित उच्चारण से मन शांत होता है और ध्यान में एकाग्रता बढ़ती है।

3. सकारात्मक ऊर्जा का संचार: आध्यात्मिक मान्यता है कि ओम् की ध्वनि सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करती है और नकारात्मक विचारों को दूर करती है।

4. आत्मज्ञान की प्राप्ति: योग और वेदांत दर्शन में ओम् का ध्यान आत्मज्ञान प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन माना गया है। इसके माध्यम से साधक अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने का प्रयास करता है।

ओम् और योग: योगशास्त्र में ओम् का विशेष स्थान है। अधिकांश योग सत्रों की शुरुआत और समाप्ति ओम् के उच्चारण से की जाती है। पतंजलि योगसूत्र में ईश्वर के वाचक रूप के रूप में प्रणव अर्थात ओम् का उल्लेख मिलता है। योगियों का मानना है कि ओम् का जप शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करता है। जब व्यक्ति गहरी श्वास लेकर ओम् का उच्चारण करता है तो उसके शरीर में कंपन उत्पन्न होता है। यह कंपन मानसिक तनाव को कम करने तथा ध्यान की अवस्था को गहरा करने में सहायक माना जाता है।

ओम् और ध्यान: ध्यान की अनेक पद्धतियों में ओम् का उपयोग किया जाता है। साधक जब बार-बार ओम् का जप करता है तो उसका मन धीरे-धीरे शांत होने लगता है। ध्यान के दौरान ओम् का जप मन को स्थिर करता है। विचारों की गति को नियंत्रित करता है। मानसिक तनाव को कम करता है। आत्मिक शांति प्रदान करता है। आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है।

ओम् और विज्ञान: आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी ध्वनि और कंपन के प्रभावों पर अनेक अध्ययन किए हैं। शोधों में पाया गया है कि गहरी और लयबद्ध ध्वनि का उच्चारण मानसिक तनाव कम करने तथा तंत्रिका तंत्र को शांत करने में सहायक हो सकता है। ओम् का उच्चारण

करते समय शरीर में उत्पन्न कंपन विशेष रूप से छाती, गले और मस्तिष्क क्षेत्र में अनुभव किया जाता है। इससे व्यक्ति को शांति और संतुलन की अनुभूति हो सकती है। हालाँकि आध्यात्मिक दावों और वैज्ञानिक निष्कर्षों के बीच अंतर है, फिर भी यह व्यापक रूप से माना जाता है कि ओम् का जप ध्यान और मानसिक एकाग्रता में सहायक होता है।

ओम् और भारतीय संस्कृतिः भारतीय संस्कृति में किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत प्रायः **"ॐ"** लिखकर या बोलकर की जाती है। धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पाठ, संस्कार और मंत्रोच्चार में ओम् का विशेष महत्व है। मंदिरों में, आश्रमों में तथा आध्यात्मिक आयोजनों में ओम् की ध्वनि वातावरण को पवित्र और शांत बनाने का माध्यम मानी जाती है। भारतीय कला, वास्तुकला और साहित्य में भी ओम् का व्यापक उपयोग दिखाई देता है। यह केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण अंग है।

ओम् और त्रिदेवः ओम् के तीन अक्षरों को सृष्टि के तीन प्रमुख देवताओं से भी जोड़ा जाता है। **अ- ब्रह्मा** (सृष्टि के रचयिता)। **उ - विष्णु** (पालनकर्ता)। **म - महादेव शिव** (संहारकर्ता)। इस प्रकार ओम् में सृष्टि की संपूर्ण प्रक्रिया समाहित मानी जाती है।

ओम् और चेतना की चार अवस्थाएँ: माण्डूक्य उपनिषद के अनुसार ओम् चेतना की चार अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है। **जाग्रत अवस्था-** बाहरी संसार का अनुभव। **स्वप्न अवस्था** मानसिक जगत का अनुभव। **सुषुप्ति अवस्था** - गहरी निद्रा। **तुरीय अवस्था** परम चेतना और आत्मज्ञान की अवस्था। ओम् का ध्यान साधक को तुरीय अवस्था की ओर ले जाने का माध्यम माना गया है।

वर्तमान समय में ओम् की प्रासंगिकताः आज का मनुष्य तनाव, चिंता, प्रतिस्पर्धा और भौतिकता के दबाव से घिरा हुआ है। ऐसे समय में ओम् का संदेश अत्यंत प्रासंगिक है। यह हमें आंतरिक शांति, आत्मसंयम और आध्यात्मिक संतुलन की ओर प्रेरित करता है। ओम् का जप किसी विशेष आयु, जाति या वर्ग तक सीमित नहीं है। यह मानवता को शांति, एकता और आत्मिक विकास का संदेश देता है।

ओम् केवल एक ध्वनि या धार्मिक प्रतीक नहीं है, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक चिंतन का सार है। यह सृष्टि, चेतना और परम सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। वेदों, उपनिषदों, गीता और योग परंपरा में ओम् को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इसके जप और ध्यान से मन की शांति, आत्मिक उन्नति और आध्यात्मिक जागरण का मार्ग प्रशस्त होता है।

भारतीय संस्कृति ने सदियों से ओम् को श्रद्धा और सम्मान के साथ स्वीकार किया है। आज भी यह विश्वभर में योग, ध्यान और आध्यात्मिक साधना का महत्वपूर्ण आधार बना हुआ है। ओम् हमें यह संदेश देता है कि बाहरी संसार की चकाचौंध से ऊपर उठकर अपने भीतर स्थित दिव्य चेतना को पहचानना ही जीवन का वास्तविक उद्देश्य है।

"ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः" अर्थात हमारे भीतर, हमारे आसपास और सम्पूर्ण विश्व में शांति स्थापित हो।

****

डॉक्टर कर्ण जांगिड का समाज बंधुओं द्वारा भव्य स्वागत

नागौर जिले के मकराना शहर में डॉ. कर्ण जांगिड सुपुत्र नेमीचंद जांगिड को फिजियोथेरेपी डॉक्टर की उपाधि मिलने पर समाज बंधुओं ने स्थानीय खाती टीबा स्थित उनके निवास स्थान पर एक भव्य समारोह में गर्मजोशी के साथ स्वागत एवं सम्मान किया।

इस अवसर पर समाज के पदाधिकारियों ने डॉ. कर्ण जांगिड (डेरोलिया) को माला पहनाकर, साफा ओढ़ाकर और स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। समाज के प्रतिनिधियों ने अपने संबोधन में कहा कि डॉ. कर्ण जांगिड द्वारा चिकित्सा जैसे पवित्र पेशे में यह सर्वोच्च मुकाम हासिल करना, पूरे समाज और क्षेत्र के लिए गौरव का विषय है। समाज बंधुओं द्वारा किए गए सम्मान से अभिभूत होकर डॉ. कर्ण ने सभी समाज बंधुओं का आभार व्यक्त किया और अपने चिकित्सा करियर के माध्यम से हमेशा नि:स्वार्थ भाव से समाज और मानवता की सेवा करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में रामेश्वर लाल कंवलेचा पूर्व अध्यक्ष श्री विश्वकर्मा मंदिर विकास समिति मकराना, किस्तूर चंद सिडड अध्यक्ष श्री विश्वकर्मा मंदिर विकास समिति मकराना, शंकर लाल जांगिड (गेडा वाले), महासभा जिला डीडवाना -कुचामन के कार्यकारी अध्यक्ष, उमा शंकर बोदलिया, महासभा दिल्ली के राष्ट्रीय उपप्रधान कैलाश चन्द जाला, नेमीचन्द डेरोलिया, वेद प्रकाश लदोया, अशोक लदोया, तेजवीर जांगिड, बजरंग लाल जांगिड़,अर्जुन जांगिड, अरुण जोशी, पूनम चन्द जांगिड, जांगिड, विश्वकर्मा महिला मण्डल मकाराना अध्यक्ष प्रेमलता जांगिड, इंद्रा जांगिड, कुसुम जांगिड सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

वेदप्रकाश जांगिड़ - मकराना

सूर्य नमस्कार में सभी योगों का योग

भाग - १

सूर्य नमस्कार योगासनों में सर्वश्रेष्ठ है। यह अकेला अभ्यास ही साधक को सम्पूर्ण योग व्यायाम का लाभ पहुंचाने में समर्थ है। इसके अभ्यास से साधक का शरीर निरोग और स्वस्थ होकर तेजस्वी हो जाता है। **'सूर्य नमस्कार'** स्त्री, पुरुष, बाल, युवा तथा वृद्धों के लिए भी उपयोगी बताया गया है।

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने।
जन्मान्तरसहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते ।।

अर्थात जो लोग सूर्य को प्रतिदिन नमस्कार करते हैं, उन्हें सहस्रों जन्म दरिद्रता प्राप्त नहीं होती। सूर्य-नमस्कार को सर्वांग व्यायाम भी कहा जाता है। समस्त यौगिक क्रियाओं की भाँति सूर्य-नमस्कार के लिये भी प्रातः काल सूर्योदय का समय सर्वोत्तम माना गया है। सूर्य नमस्कार का अभ्यास सदैव मंत्र के साथ खुली हवादार जगह पर कम्बल का आसन बिछा कर खाली पेट करना चाहिये। योग का अभ्यास करते समय मन शान्त और प्रसन्न होना चाहिये तभी योग का सम्पूर्ण लाभ मिलता है। सूर्य भगवान के बारह नामो से बारह सूर्य नमस्कार के मंत्र होतें है और सूर्य नमस्कार में भी बारह स्थितियां या चरण होतें है। सूर्य नमस्कार के बारह मंत्रो के भाव –

1 ॐ मित्राय नमः (सबके मित्र को प्रणाम) - नमस्कारासन (प्रणामासन) स्थिति में समस्त जीवन के स्त्रोत को नमन किया जाता है। सूर्य समस्त ब्रह्माण्ड का मित्र है, क्योंकि इससे पृथ्वी समेत सभी ग्रहों के अस्तित्त्व के लिए आवश्यक असीम प्रकाश, ताप तथा ऊर्जा प्राप्त होती है। सूर्य को पौराणिक ग्रन्थों में मित्र कर्मो के प्रेरक, धरा-आकाश के पोषक तथा निष्पक्ष व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। प्रातःकालीन सूर्य भी दिवस के कार्यकलापों को प्रारम्भ करने का आह्वान करता है तथा सभी जीव-जन्तुओं को अपना प्रकाश प्रदान करता है।

2 ॐ रवये नमः (प्रकाशवान को प्रणाम) - "रवये" का तात्पर्य है जो स्वयं प्रकाशवान है तथा सम्पूर्ण जीवधारियों को दिव्य आशीष प्रदान करता है। द्वितीय स्थिति हस्तउत्तानासन में इन्हीं दिव्य आशीषों को ग्रहण करने के उद्देश्य से शरीर को प्रकाश के स्त्रोत की ओर ताना जाता है।

3 ॐ सूर्याय नमः (क्रियाओं के प्रेरक को प्रणाम) - यहाँ सूर्य को ईश्वर के रूप में अत्यंत सक्रिय माना गया है। प्राचीन वैदिक ग्रंथों में सात घोड़ों के जुते रथ पर सवार होकर सूर्य के आकाश गमन की कल्पना की गई है। ये सात घोड़े परम चेतना से निकलने वाले सप्त किरणों के प्रतीक है। जिनका प्रकटीकरण चेतना के सात स्तरों में होता है **- भू (भौतिक), भुवः (मध्यवर्ती, सूक्ष्म (नक्षत्रीय), स्वः (सूक्ष्म, आकाशीय), मः (देव आवास), जनः (उन दिव्य आत्माओं का आवास जो अहं से मुक्त है), तपः (आत्मज्ञान, प्राप्त सिद्धों का आवास) और सप्तम् (परम सत्य)।** सूर्य स्वयं सर्वोच्च चेतना का प्रतीक है तथा चेतना के सभी सात स्वरों को नियंत्रित करता है। देवताओं में सूर्य का स्थान महत्वपूर्ण है। वेदों में वर्णित सूर्य देवता का आवास आकाश में है उसका प्रतिनिधित्त्व करने वाली अग्नि का आवास भूमि पर है।

4 ॐ भानवे नमः (प्रदीप्त होने वाले को प्रणाम) - सूर्य भौतिक स्तर पर गुरू का प्रतीक है। इसका सूक्ष्म तात्पर्य है कि गुरू हमारी भ्रांतियों के अंधकार को दूर करता है - उसी प्रकार जैसे प्रातः वेला में रात्रि का अंधकार दूर हो जाता है। अश्व संचालनासन की स्थिति में हम उस प्रकाश की ओर मुँह करके अपने अज्ञान रूपी अंधकार की समाप्ति हेतु प्रार्थना करते हैं।

5 ॐ खगाय नमः (आकाशगामी को प्रणाम) - समय का ज्ञान प्राप्त करने हेतु प्राचीन काल से सूर्य यंत्रों (डायलों) के प्रयोग से लेकर वर्तमान कालीन जटिल यंत्रों के प्रयोग तक के लंबे काल में समय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आकाश में सूर्य की गति को ही आधार माना गया है। हम इस शक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं जो समय का ज्ञान प्रदान करती है तथा उससे जीवन को उन्नत बनाने की प्रार्थना करते हैं।

6 ॐ पूष्णे नमः (पोषक को प्रणाम) - सूर्य सभी शक्तियों का स्त्रोत है। एक पिता की भाँति वह हमें शक्ति, प्रकाश तथा जीवन देकर हमारा पोषण करता है। साष्टांग नमस्कार की स्थिति में हमे शरीर के सभी आठ केन्द्रों को भूमि से स्पर्श करते हुए उस पालनहार को अष्टांग प्रणाम करते हैं। तत्त्वतः हम उसे अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को समर्पित करते है तथा आशा करते हैं कि वह हमें शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करें।

7 ॐ हिरण्यगर्भाय नमः (स्वर्णिम् विश्वात्मा को प्रणाम) - हिरण्यगर्भ, स्वर्ण के अण्डे के समान सूर्य की तरह देदीप्यमान, ऐसी संरचना है जिससे सृष्टिकर्ता ब्रह्म की उत्पत्ति हुई है। हिरण्यगर्भ प्रत्येक कार्य का परम कारण है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, प्रकटीकरण के पूर्व अन्तर्निहित अवस्था में हिरण्यगर्भ के अन्दर निहित रहता है। इसी प्रकार समस्त जीवन सूर्य (जो महत् विश्व सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है) में अन्तर्निहित है। भुजंगासन में हम सूर्य के प्रति सम्मान प्रकट करते है तथा यह प्रार्थना करते है कि हममें रचनात्मकता का उदय हो।

8 ॐ मरीचये नमः (सूर्य रश्मियों को प्रणाम) - मरीच ब्रह्मपुत्रों में से एक है। परन्तु इसका अर्थ मृग मरीचिका भी होता है। हम जीवन भर सत्य की खोज में उसी प्रकार भटकते रहते हैं जिस प्रकार एक प्यासा व्यक्ति मरूस्थल में (सूर्य रश्मियों से निर्मित) मरीचिकाओं के जाल में फँसकर जल के लिए मूर्ख की भाँति इधर-उधर दौड़ता रहता है। पर्वतासन की स्थिति में हम सच्चे ज्ञान तथा विवके को प्राप्त करने के लिए नतमस्तक होकर प्रार्थना करते हैं जिससे हम सत् अथवा असत् के अन्तर को समझ सकें।

9 ॐ आदित्याय नमः (अदिति-सुत को प्रणाम) - विश्व जननी (महाशक्ति) के अनन्त नामों में एक नाम अदिति भी है। वहीं समस्त देवों की जननी, अनन्त तथा सीमारहित है। वह आदि रचनात्मक शक्ति है जिससे सभी शक्तियाँ निःसृत हुई हैं। अश्व संचलानासन में हम उस अनन्त विश्व-जननी को प्रणाम करते हैं।

10 ॐ सवित्रे नमः (सूर्य की उद्दीपन शक्ति को प्रणाम) - सवित्र उद्दीपक अथवा जागृत करने वाला देव है। इसका संबंध सूर्य देव से स्थापित किया जाता है। सवित्री उगते सूर्य का प्रतिनिधि है जो मनुष्य को जागृत करता है और क्रियाशील बनाता है। **"सूर्य"** पूर्ण रूप से उदित सूरज का प्रतिनिधित्त्व करता है। जिसके प्रकाश में सारे कार्यकलाप होते है। सूर्य नमस्कार की हस्तपादासन स्थिति में सूर्य की जीवनदायनी शक्ति की प्राप्ति हेतु सवित्र को प्रणाम किया जाता है।

11 ॐ अर्काय नमः (प्रशंसनीय को प्रणाम) - अर्क का तात्पर्य है, उर्जा। सूर्य विश्व की शक्तियों का प्रमुख स्त्रोत है। हस्तउत्तानासन में हम जीवन तथा उर्जा के इस स्त्रोत के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते है।

12 ॐ भास्कराय नमः (आत्मज्ञान-प्रेरक को प्रणाम) - सूर्य नमस्कार की अंतिम स्थिति प्रणामासन (नमस्कारासन) में अनुभवातीत तथा आध्यात्मिक सत्यों के महान प्रकाशक के रूप में सूर्य को अपनी श्रद्धा समर्पित की जाती है। सूर्य हमारे चरम लक्ष्य-जीवनमुक्ति के मार्ग को प्रकाशित करता है। प्रणामासन में हम यह प्रार्थना करते हैं कि वह हमें यह मार्ग दिखायें। इस प्रकार सूर्य नमस्कार पद्धति में बारह मंत्रों का अर्थ सहित भावों का समावेश किया जा रहा है।

इस तरह सूर्य नमस्कार के बारह चरणों के बारह मंत्रों का भाव दिया गया है। अगले चरण मे इसके बारह चरणों के बारह अभ्यास के बारे मे विस्तार से बताया गया है।

क्रमशः – भाग -2 अगले अंक मे

अनिल कुमार शर्मा (अध्यापक), अलवर राजस्थान Mob.—9588027845

विश्व बाल श्रम निषेध दिवस:
भारतीय परिपेक्ष में बाल श्रम और इसे रोकने की चुनौतियाँ

प्रत्येक वर्ष 12 जून को विश्व बाल श्रम निषेध दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य बाल श्रम जैसी गंभीर सामाजिक समस्या के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना तथा बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षित बचपन का अधिकार दिलाने के लिए समाज, सरकार और विभिन्न संस्थाओं को प्रेरित करना है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके बच्चों पर निर्भर करता है। यदि बच्चे विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के बजाय कारखानों, होटलों, ढाबों, ईंट-भट्टों, खदानों और घरेलू कामों में लगे रहेंगे, तो राष्ट्र का सर्वांगीण विकास बाधित होगा। इसलिए बाल श्रम केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक, नैतिक और मानवीय चुनौती भी है।

भारत विश्व की सबसे बड़ी युवा आबादी वाले देशों में से एक है। यहाँ बच्चों को राष्ट्र की अमूल्य धरोहर माना जाता है। भारतीय संस्कृति में बालकों को ईश्वर का स्वरूप माना गया है। इसके बावजूद आज भी देश के अनेक भागों में बाल श्रम की समस्या विद्यमान है। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और सामाजिक असमानता के कारण अनेक बच्चे अपना बचपन खोकर श्रम करने के लिए विवश हो जाते हैं। ऐसे में विश्व बाल श्रम निषेध दिवस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हम अपने बच्चों को कैसा भविष्य देना चाहते हैं।

बाल श्रम का अर्थ

जब 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से ऐसे कार्य कराए जाते हैं जो उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और मानसिक विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं, तो उसे बाल श्रम कहा जाता है। कई बार बच्चे ऐसे खतरनाक कार्यों में भी लगाए जाते हैं जिनसे उनके जीवन और स्वास्थ्य को गंभीर खतरा होता है। यह स्थिति बच्चों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। बाल श्रम का सबसे दुखद पहलू यह है कि इससे बच्चों का बचपन छिन जाता है। खेलने, पढ़ने और सपने देखने की उम्र में वे जीविका कमाने के लिए संघर्ष करने लगते हैं। इससे उनका शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास प्रभावित होता है।

भारत में बाल श्रम की स्थिति

भारत ने पिछले कुछ दशकों में बाल श्रम कम करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है, फिर भी यह समस्या पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्यों, ईंट-भट्टों और छोटे उद्योगों में बच्चों की भागीदारी अधिक दिखाई देती है। वहीं शहरी क्षेत्रों में होटल, ढाबे, चाय की दुकानें, घरेलू कार्य, कचरा बीनने तथा छोटे कारखानों में बाल श्रमिक देखे जा सकते हैं। कई बार बाल श्रम दिखाई नहीं देता क्योंकि वह घरेलू कामों या असंगठित क्षेत्र में होता है। ऐसे बच्चों का शोषण अधिक होता है और वे कानून की निगरानी से भी दूर रहते हैं।

बाल श्रम के प्रमुख कारण

1. गरीबी: बाल श्रम का सबसे बड़ा कारण गरीबी है। जब परिवार की आय पर्याप्त नहीं होती तो माता-पिता बच्चों को भी काम पर भेज देते हैं। परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बच्चे कम उम्र में श्रम करने लगते हैं।
2. अशिक्षा: अशिक्षित माता-पिता शिक्षा के महत्व को पूरी तरह नहीं समझ पाते। वे बच्चों को स्कूल भेजने की अपेक्षा काम पर लगाना अधिक उपयोगी समझते हैं। इससे बाल श्रम का दुष्चक्र चलता रहता है।
3. बेरोजगारी और आर्थिक असुरक्षा: जब परिवार के वयस्क सदस्यों को रोजगार नहीं मिलता या आय अनिश्चित होती है, तब बच्चों को श्रम के लिए भेजा जाता है। यह स्थिति विशेष रूप से गरीब और प्रवासी परिवारों में देखने को मिलती है।
4. सामाजिक असमानता: समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के बच्चे बाल श्रम का अधिक शिकार होते हैं। जातीय, आर्थिक और सामाजिक विषमताएँ भी इस समस्या को बढ़ाती हैं।
5. सस्ते श्रमिकों की मांग: कुछ उद्योग और व्यवसाय कम मजदूरी पर काम करवाने के लिए बच्चों को रोजगार देते हैं। बच्चों से अधिक समय तक काम लिया जाता है और उन्हें उचित पारिश्रमिक भी नहीं मिलता।

बाल श्रम के दुष्परिणाम: शिक्षा से वंचित होना: बाल श्रम बच्चों को विद्यालय से दूर कर देता है। शिक्षा के अभाव में उनका भविष्य सीमित हो जाता है और वे जीवनभर आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हैं।

स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव: खतरनाक परिस्थितियों में काम करने से बच्चों का शारीरिक विकास प्रभावित होता है। धूल, धुआँ, रसायन और भारी मशीनों के संपर्क में आने से अनेक बीमारियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

मानसिक और भावनात्मक क्षति: अत्यधिक कार्यभार, शोषण और प्रताड़ना के कारण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक

प्रभाव पड़ता है। वे तनाव, भय और असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हो सकते हैं।

गरीबी का दुष्चक्र: जब बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं तो भविष्य में उन्हें बेहतर रोजगार नहीं मिल पाता। इससे गरीबी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बनी रहती है।

बाल श्रम रोकने के लिए भारत सरकार के प्रयास: भारत सरकार ने बाल श्रम उन्मूलन के लिए अनेक कानून और योजनाएँ लागू की हैं।

बाल श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) संशोधन अधिनियम: इस कानून के अनुसार 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को किसी भी व्यवसाय में रोजगार देना प्रतिबंधित है। साथ ही किशोरों को खतरनाक उद्योगों में काम पर लगाने पर रोक लगाई गई है।

शिक्षा का अधिकार: शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत 6 से 14 वर्ष तक के प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार दिया गया है।

मध्याह्न भोजन योजना: विद्यालयों में मिलने वाले भोजन से गरीब परिवारों के बच्चों का विद्यालयों की ओर आकर्षण बढ़ा है तथा विद्यालय छोड़ने की दर में कमी आई है।

राष्ट्रीय बाल श्रम परियोजना: इस परियोजना के माध्यम से बाल श्रमिकों को श्रम से मुक्त कराकर शिक्षा, प्रशिक्षण और पुनर्वास की सुविधा प्रदान की जाती है।

समाज की भूमिका: केवल सरकार के प्रयासों से बाल श्रम समाप्त नहीं किया जा सकता। इसके लिए समाज की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

जागरूकता बढ़ाना: लोगों को यह समझना होगा कि बाल श्रम केवल कानून का उल्लंघन नहीं बल्कि मानवता के विरुद्ध अपराध है। यदि कोई बच्चा श्रम करते हुए दिखाई दे तो संबंधित अधिकारियों को सूचना देनी चाहिए।

शिक्षा को बढ़ावा देना: समाज के सक्षम वर्गों को गरीब बच्चों की शिक्षा में सहयोग करना चाहिए। पुस्तकें, वर्दी और अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराकर बच्चों को विद्यालय से जोड़ा जा सकता है।

बाल श्रमिकों को रोजगार न देना: यदि लोग अपने घरों, दुकानों और प्रतिष्ठानों में बच्चों को काम पर रखना बंद कर दें तो बाल श्रम स्वतः कम हो जाएगा।

सामाजिक संगठनों की भूमिका: स्वयंसेवी संस्थाएँ बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य और संरक्षण प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। कई संस्थाएँ बाल श्रमिकों के पुनर्वास के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रही हैं।

परिवार की जिम्मेदारी: परिवार बाल श्रम रोकने की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। माता-पिता को समझना चाहिए कि बच्चे परिवार की आय का साधन नहीं बल्कि भविष्य की पूंजी हैं। उन्हें बच्चों की शिक्षा और विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए। सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाकर परिवार आर्थिक कठिनाइयों का समाधान खोज सकते हैं। बच्चों को विद्यालय भेजना ही उनके उज्ज्वल भविष्य की सबसे बड़ी गारंटी है।

नई चुनौतियाँ: डिजिटल युग में बाल श्रम के नए रूप भी सामने आ रहे हैं। ऑनलाइन कार्य, असंगठित घरेलू उत्पादन और प्रवासी श्रमिक परिवारों के बच्चों की समस्याएँ विशेष ध्यान मांगती हैं। इसलिए कानूनों के साथ-साथ आधुनिक परिस्थितियों के अनुरूप निगरानी व्यवस्था भी विकसित करनी होगी।

बाल श्रम मुक्त भारत का संकल्प: भारत यदि विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है तो उसे अपने प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना होगा। बाल श्रम उन्मूलन केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं बल्कि राष्ट्रीय आंदोलन बनना चाहिए। प्रत्येक नागरिक को यह संकल्प लेना होगा कि वह किसी भी बच्चे को श्रम के लिए प्रोत्साहित नहीं करेगा और उसके शिक्षा के अधिकार का समर्थन करेगा।

विश्व बाल श्रम निषेध दिवस हमें यह संदेश देता है कि बच्चों का स्थान विद्यालय, खेल का मैदान और परिवार का स्नेहपूर्ण वातावरण है, न कि कारखानों और श्रमस्थलों पर। भारत ने बाल श्रम रोकने की दिशा में उल्लेखनीय कदम उठाए हैं, परंतु अभी भी बहुत कार्य किया जाना शेष है। सरकार, समाज, परिवार, विद्यालय और स्वयं बच्चों के संयुक्त प्रयासों से ही बाल श्रम मुक्त भारत का सपना साकार हो सकता है। जब प्रत्येक बच्चा शिक्षित, सुरक्षित और स्वस्थ होगा, तभी भारत का भविष्य वास्तव में उज्ज्वल बनेगा। आइए, हम सभी यह संकल्प लें कि किसी भी बच्चे का बचपन मजदूरी की भेंट नहीं चढ़ने देंगे और उसे उसके अधिकारों से युक्त सम्मानजनक जीवन प्रदान करने में अपना योगदान देंगे। यही विश्व बाल श्रम निषेध दिवस का वास्तविक उद्देश्य और सबसे बड़ा संदेश है।

*****

गायत्री जयंती : भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और मानव कल्याण का दिव्य पर्व

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और महानतम संस्कृतियों में से एक है। इस संस्कृति की आत्मा वेद हैं और वेदों का सार गायत्री महामंत्र को माना गया है। गायत्री मंत्र केवल एक धार्मिक मंत्र नहीं, बल्कि मानव चेतना को जागृत करने वाला सार्वभौमिक संदेश है। इसी कारण इसे **"वेदमाता गायत्री"** का मंत्र कहा जाता है। प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी के अवसर पर गायत्री जयंती मनाई जाती है। इस वर्ष में **गायत्री जयंती 26 जून** को मनाई गई। यह पर्व भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में विशेष महत्व रखता है और आत्मशुद्धि, ज्ञान, विवेक तथा सदाचार की प्रेरणा प्रदान करता है।

गायत्री जयंती का स्वरूप- गायत्री जयंती उस दिव्य शक्ति के प्राकट्य का उत्सव है जिसे सनातन धर्म में वेदमाता, ज्ञान की अधिष्ठात्री तथा समस्त सृष्टि की कल्याणकारिणी शक्ति माना गया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इसी दिन देवी गायत्री का अवतरण हुआ था। इसलिए इस दिन गायत्री मंत्र का जप, हवन, यज्ञ, साधना तथा आध्यात्मिक अनुष्ठान विशेष रूप से किए जाते हैं। गायत्री जयंती केवल पूजा-पाठ का पर्व नहीं है, बल्कि यह आत्मविकास और आत्मजागरण का अवसर भी है। यह मनुष्य को अज्ञान से ज्ञान की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा असत्य से सत्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है।

गायत्री मंत्र का उदगम: गायत्री मंत्र का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। इस मंत्र के द्रष्टा महान ऋषि विश्वामित्र माने जाते हैं। उन्होंने कठोर तपस्या के माध्यम से इस दिव्य मंत्र का साक्षात्कार किया और इसे मानव कल्याण के लिए प्रदान किया। गायत्री मंत्र इस प्रकार है।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

इस मंत्र का भावार्थ है कि हम उस परम दिव्य प्रकाश का ध्यान करें जो समस्त जगत का सृजनकर्ता है और वह हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग की ओर प्रेरित करे।

यह मंत्र किसी विशेष जाति, वर्ग या समुदाय तक सीमित नहीं है। इसका संदेश सम्पूर्ण मानवता के लिए है। यही कारण है कि इसे विश्व के महानतम आध्यात्मिक मंत्रों में गिना जाता है।

गायत्री मंत्र का आध्यात्मिक महत्व: गायत्री मंत्र को आध्यात्मिक उन्नति का आधार माना गया है। भारतीय ऋषियों का विश्वास था कि मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसकी बुद्धि और विवेक है। यदि बुद्धि सही दिशा में कार्य करे तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी का कल्याण संभव है। गायत्री मंत्र का मुख्य उद्देश्य बुद्धि को प्रकाशमान बनाना है। यह मंत्र मनुष्य के भीतर छिपी दिव्य संभावनाओं को जागृत करता है और उसे आत्मबोध की ओर ले जाता है। सनातन धर्म में कहा गया है कि **"गायन्तं त्रायते इति गायत्री"** अर्थात् **जो जप करने वाले की रक्षा करे, वही गायत्री है।**

इस मंत्र के नियमित जप से मन में शांति, एकाग्रता, आत्मविश्वास और सकारात्मकता का विकास होता है। यही कारण है कि हजारों वर्षों से यह मंत्र भारतीय साधना परंपरा का अभिन्न अंग बना हुआ है।

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में कुछ ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने केवल धार्मिक उपदेश ही नहीं दिए, बल्कि समाज को नई दिशा प्रदान की। ऐसे ही युगद्रष्टा संतों में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने गायत्री साधना को जन-जन तक पहुंचाकर आध्यात्मिकता को जीवनोपयोगी बनाया तथा समाज निर्माण के लिए एक व्यापक आंदोलन खड़ा किया। उनके द्वारा स्थापित अखिल विश्व गायत्री परिवार आज विश्व के अनेक देशों में सक्रिय है और मानवता के उत्थान का कार्य कर रहा है।

गायत्री मंत्र को सर्वसुलभ बनाने मे आचार्य श्रीराम शर्मा का योगदान: गायत्री मंत्र के बारे मे हमारे देश मे कई तरह की भ्रांतियाँ थी कई लोग मानते थे कि यह मंत्र शापित है। इसका जप हर कोई नहीं कर सकता है। यह भी मान्यता थी कि महिलाओं के लिए यह मंत्र वर्जित है। इन सभी धारणाओं को दूर करते हुए पंडित श्री राम शर्मा ने इस मंत्र को सर्व सुलभ करवाया और लोगों को यह दृढ़ विश्वास दिलवाया कि गायत्री मंत्र सभी के लिए है।

आचार्य श्रीराम शर्मा का विश्वास था कि मनुष्य के भीतर अपार शक्ति विद्यमान है। यदि उसे सही दिशा मिले तो वह स्वयं के साथ समाज और राष्ट्र का भी कल्याण कर सकता है। इसी विचार ने आगे चलकर एक विराट जनआंदोलन का रूप लिया। आचार्य श्रीराम शर्मा ने गायत्री मंत्र को किसी विशेष वर्ग तक सीमित न मानकर सम्पूर्ण मानवता का मंत्र बताया। **उन्होंने कहा कि गायत्री सद्बुद्धि, विवेक और आत्मजागरण की शक्ति है। उनके प्रयासों से लाखों लोगों ने गायत्री साधना को अपनाया और अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन अनुभव किया।**

उन्होंने गायत्री मंत्र के आध्यात्मिक, नैतिक और वैज्ञानिक पक्षों को सरल भाषा में समझाया। उनके साहित्य ने आम जनमानस को यह विश्वास दिलाया कि अध्यात्म केवल संन्यासियों के लिए नहीं, बल्कि गृहस्थ जीवन में भी उतना ही उपयोगी है।

भारतीय संस्कृति में गायत्री का स्थान: भारतीय संस्कृति में गायत्री को वेदमाता कहा गया है। चारों वेदों का ज्ञान जिस चेतना से उत्पन्न हुआ, उसे गायत्री शक्ति माना गया है। इसलिए गायत्री केवल देवी का स्वरूप नहीं, बल्कि ज्ञान, विवेक और चेतना का प्रतीक है।

भारत की प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था में विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ गायत्री मंत्र का अभ्यास कराया जाता था। उपनयन संस्कार के समय गायत्री मंत्र की दीक्षा देना एक महत्वपूर्ण परंपरा रही है। गायत्री भारतीय संस्कृति के उन मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है जो सत्य, करुणा, संयम, सेवा और आत्मानुशासन पर आधारित हैं। इसलिए गायत्री जयंती केवल धार्मिक अनुष्ठान का अवसर नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी पर्व है।

गायत्री और वेदों का संबंध: वेदों को भारतीय ज्ञान-विज्ञान का आधार माना जाता है। वेदों का सार गायत्री मंत्र में समाहित है। इस मंत्र में सूर्य के दिव्य प्रकाश के माध्यम से मानव बुद्धि के विकास की प्रार्थना की गई है। वेदों में सूर्य को केवल भौतिक प्रकाश का स्रोत नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ऊर्जा और चेतना का प्रतीक माना गया है। गायत्री मंत्र उसी दिव्य चेतना का ध्यान करने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार गायत्री मंत्र वेदों के ज्ञान, दर्शन और आध्यात्मिकता का संक्षिप्त एवं सारगर्भित रूप है।

गायत्री जयंती मनाने की परंपरा: गायत्री जयंती के अवसर पर देशभर में विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इस दिन श्रद्धालु प्रातःकाल स्नान करके गायत्री माता की पूजा करते हैं और मंत्र जप करते हैं। मुख्य कार्यक्रमों में शामिल हैं- गायत्री मंत्र का सामूहिक जप, यज्ञ और हवन, धार्मिक प्रवचन, वेदपाठ, सत्संग, वृक्षारोपण, सेवा कार्य और गरीबों को भोजन और वस्त्र वितरण। कई स्थानों पर अखंड गायत्री मंत्र जाप का आयोजन भी किया जाता है। इन आयोजनों का उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठान करना नहीं, बल्कि समाज में नैतिक और आध्यात्मिक चेतना का प्रसार करना होता है।

गायत्री साधना का वैज्ञानिक पक्ष: आधुनिक युग में भी गायत्री मंत्र के महत्व पर अनेक शोध हुए हैं। वैज्ञानिकों और मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि नियमित मंत्रोच्चार से मन की एकाग्रता बढ़ती है तथा तनाव कम होता है। जब कोई व्यक्ति श्रद्धा और एकाग्रता के साथ मंत्र जप करता है, तो उसके मन में सकारात्मक विचारों का संचार होता है। इससे मानसिक संतुलन और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। यद्यपि आध्यात्मिक अनुभव व्यक्तिगत होते हैं, फिर भी यह स्पष्ट है कि नियमित ध्यान और मंत्र जप मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।

आधुनिक युग में गायत्री मंत्र की प्रासंगिकता: आज का युग भौतिक प्रगति का युग है, लेकिन इसके साथ ही तनाव, प्रतिस्पर्धा, नैतिक संकट और मानसिक अशांति भी बढ़ी है। ऐसे समय में गायत्री मंत्र का संदेश अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह मंत्र मनुष्य को बाहरी उपलब्धियों के साथ-साथ आंतरिक विकास का भी मार्ग दिखाता है। यह बताता है कि वास्तविक प्रगति केवल आर्थिक उन्नति में नहीं, बल्कि श्रेष्ठ विचारों और श्रेष्ठ चरित्र में निहित है। यदि व्यक्ति अपनी बुद्धि को विवेकपूर्ण दिशा में उपयोग करे तो समाज में शांति, सद्भाव और नैतिकता की स्थापना संभव है। गायत्री मंत्र इसी आदर्श की प्रेरणा देता है।

युवा पीढ़ी के लिए गायत्री का संदेश: भारत विश्व का सबसे युवा राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है। ऐसे में युवाओं के चरित्र निर्माण का महत्व और बढ़ जाता है। गायत्री मंत्र युवाओं को निम्नलिखित प्रेरणाएँ देता है। **ज्ञान अर्जित करो। सत्य का अनुसरण करो।** आत्मविश्वास विकसित करो। अनुशासित जीवन जियो। राष्ट्र और समाज के प्रति उत्तरदायी बनो। सकारात्मक सोच अपनाओ। यदि युवा पीढ़ी इन मूल्यों को अपनाए तो भारत का भविष्य और अधिक उज्ज्वल हो सकता है।

गायत्री जयंती और राष्ट्र निर्माण: भारत की सांस्कृतिक चेतना सदैव ज्ञान और नैतिकता पर आधारित रही है। गायत्री मंत्र इसी राष्ट्रीय चरित्र का प्रतीक है। राष्ट्र निर्माण केवल आर्थिक संसाधनों से नहीं होता, बल्कि श्रेष्ठ नागरिकों से होता है। जब व्यक्ति का चरित्र मजबूत होता है, तभी समाज और राष्ट्र भी सशक्त बनते हैं। गायत्री जयंती हमें यह स्मरण कराती है कि ज्ञान, विवेक और सदाचार ही किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति हैं।

गायत्री जयंती 2026 केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक चेतना और मानव कल्याण का महान उत्सव है। गायत्री महामंत्र मानव बुद्धि को प्रकाशमान करने, जीवन को श्रेष्ठ बनाने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का संदेश देता है।

आज जब संसार अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब गायत्री मंत्र का यह सार्वभौमिक संदेश और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि मनुष्य अपनी बुद्धि को सत्य, न्याय और कल्याण के मार्ग पर लगाए। यही गायत्री की साधना है और यही उसका वास्तविक उद्देश्य है। 26 जून 2026 को मनाई जाने वाली गायत्री जयंती हमें आत्मचिंतन, आत्मशुद्धि और आत्मविकास का अवसर प्रदान करती है। यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि ज्ञान ही सबसे बड़ा प्रकाश है और वही मानव जीवन को सार्थक बना सकता है। गायत्री माता की कृपा से समस्त मानवता के जीवन में सद्बुद्धि, शांति, समृद्धि और कल्याण का प्रकाश फैले, यही इस पावन पर्व का संदेश है।******

हल्दीघाटी युद्ध के 450 वर्ष : स्वाभिमान, साहस और स्वतंत्रता चेतना का अमर अध्याय

भारत के इतिहास में कुछ घटनाएँ ऐसी हैं जो केवल युद्ध नहीं होतीं, बल्कि वे राष्ट्र की आत्मा, स्वाभिमान और संघर्ष की प्रेरणा बन जाती हैं। 18 जून 1576 को लड़ा गया हल्दीघाटी का युद्ध ऐसा ही एक ऐतिहासिक प्रसंग है। वर्ष 2026 में इस युद्ध के 450 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। यह अवसर केवल एक युद्ध की स्मृति का नहीं, बल्कि उस अदम्य साहस, आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की भावना को नमन करने का है, जिसका प्रतिनिधित्व मेवाड़ के महान शासक महाराणा प्रताप ने किया। हल्दीघाटी का युद्ध भारतीय इतिहास में वीरता, त्याग और मातृभूमि के प्रति समर्पण का ऐसा उदाहरण है, जिसकी गूँज आज भी राजस्थान की धरती पर सुनाई देती है। यह युद्ध केवल दो सेनाओं के बीच का संघर्ष नहीं था, बल्कि स्वतंत्रता और अधीनता, स्वाभिमान और समर्पण, तथा राष्ट्रधर्म और साम्राज्य विस्तार के बीच की टक्कर थी।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि- 16वीं शताब्दी में मुगल सम्राट अकबर उत्तर भारत में अपना साम्राज्य विस्तार कर रहा था। अनेक राजपूत राज्यों ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। परन्तु मेवाड़ एक ऐसा राज्य था जिसने अपनी स्वतंत्रता और गौरव को सर्वोपरि माना। मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप ने मुगल सत्ता के समक्ष झुकने से स्पष्ट इनकार कर दिया। महाराणा प्रताप का मानना था कि मातृभूमि की स्वतंत्रता किसी भी समझौते से अधिक मूल्यवान है। अकबर ने कई बार संधि के प्रयास किए। राजपूत सरदारों और मुगल दूतों को समझौते के लिए भेजा गया, किन्तु महाराणा प्रताप अपने सिद्धांतों पर अडिग रहे। जब कूटनीतिक प्रयास विफल हो गए, तब युद्ध अपरिहार्य हो गया। परिणामस्वरूप 18 जून 1576 को अरावली पर्वतमाला के मध्य स्थित हल्दीघाटी में दोनों सेनाएँ आमने-सामने आ गईं।

हल्दीघाटी का भूगोल- हल्दीघाटी राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित एक संकरा पर्वतीय दर्रा है। इसकी मिट्टी का रंग हल्दी के समान पीला होने के कारण इसका नाम हल्दीघाटी पड़ा। यह स्थान मेवाड़ की सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। अरावली की पहाड़ियों से घिरे इस क्षेत्र का चयन महाराणा प्रताप ने रणनीतिक दृष्टि से किया था। संकरे मार्ग के कारण विशाल मुगल सेना को अपनी पूरी शक्ति के साथ युद्ध करने में कठिनाई हो सकती थी।

दोनों सेनाओं की तैयारी महाराणा प्रताप की सेना संख्या में अपेक्षाकृत कम थी। उनकी सेना में राजपूत योद्धाओं के साथ भील समुदाय के वीर धनुर्धर भी शामिल थे। भीलों के सरदार राणा पूँजा ने इस संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दूसरी ओर मुगल सेना का नेतृत्व आमेर के राजा मानसिंह कर रहे थे। मुगल सेना संख्या, संसाधन और शस्त्रों की दृष्टि से अधिक शक्तिशाली थी। यद्यपि दोनों सेनाओं की वास्तविक संख्या को लेकर इतिहासकारों में मतभेद हैं, लेकिन यह निर्विवाद है कि महाराणा प्रताप की सेना अपेक्षाकृत छोटी थी और उसे एक विशाल साम्राज्य की शक्ति का सामना करना था।

युद्ध का आरंभ- 18 जून 1576 की सुबह युद्ध प्रारंभ हुआ। महाराणा प्रताप स्वयं अपने प्रिय अश्व चेतक पर सवार होकर रणभूमि में उतरे। राजपूतों ने अत्यंत साहस और पराक्रम का प्रदर्शन किया। युद्ध के प्रारंभिक चरण में मेवाड़ की सेना ने जबरदस्त आक्रमण किया। राजपूत योद्धाओं के शौर्य से मुगल सेना के कई दल पीछे हटने को विवश हो गए। रणभूमि में तलवारों की टंकार, घोड़ों की टापें और वीरों के जयघोष गूँजने लगे। **अबुल फजल ने अकबरनामा मे लिखा है** कि महाराणा प्रताप जब राजा मानसिंह की तरफ बढ़े उस समय मानसिंह की हरावल का नेतृत्वकर्ता उसका इक्का उज़्बेक बहलोल खाँ, माधोसिंह के साथ था। वह मानसिंह की रक्षा के लिए आगे बढ़ा और महाराणा प्रताप के सामने आ गया। इस पर महाराणा प्रताप ने बहलोल खाँ के सिर पर तलवार से एक भरपूर वार किया। इसमें बहलोल खाँ जिरह - बख्तर और घोड़े सहित दो भागों में कट गया। बहलोल खां अकबर की सेना का सबसे शक्तिशाली उज़्बेक सैनिक था। बहलोल खाँ का वध करके चेतक पर सवार महाराणा प्रताप तेजी से मानसिंह की तरफ बढ़े। इस बीच डोड़िया भीमसिंह अपना भाला लेकर मानसिंह के हाथी की ओर लपका और घोड़े से उछल कर उसने मानसिंह पर भाले से प्रबल प्रहार किया और कहा **" बच मानसिंह मै आया डोड़िया भीम।"** मानसिंह ने नीचे झुककर अपना बचाव किया। वहीं भीमसिंह घोड़े से नीचे गिर कर मुगल सैनिकों से घिर गया और प्रबल पराक्रम दिखा कर वीर गति को प्राप्त हुआ। वहीं महाराणा प्रताप के स्वामिभक्त अश्व चेतक ने अपने अगले दोनों पैर मानसिंह के हाथी की सूंड पर टिकाकर अपने स्वामी को हमला करने के लिए एक अच्छी स्थिति मे ला दिया। महाराणा प्रताप ने गर्जना करते हुए मानसिंह को कहा कि तुमसे जहाँ तक हो सके बहादुरी दिखाओ प्रतापसिंह आ पहुँचा है। यह कहकर महाराणा प्रताप ने

मानसिंह पर भाले का वार किया, किन्तु मानसिंह हमले से बचने के लिए हाथी के हौदे के पीछे झुक गया जिससे मानसिंह बच गया, लेकिन डर के मारे उसका महावत हाथी को घुमाकर मानसिंह को युद्ध क्षेत्र से बाहर ले गया। महाराणा ने मानसिंह को मरा समझ कर घोड़े को पीछे ले लिया। माधोसिंह कच्छावा से लड़ते समय महाराणा पर तीरों की बोछार हो गयी और हकीम खाँ सूर जो सैयदों से लड़ रहा था, भागकर महाराणा के नजदीक आ गया, संघर्ष अपने चरम पर पहुँच गया। अकबर की राजपूत टुकड़ी घबराकर करीब एक कोस पीछे हट गयी जिससे मेवाड़ी योद्धाओं का उत्साह और बढ़ गया था।

झाला मान का अद्वितीय बलिदान- अब तक महाराणा प्रताप के सात घाव लग चुके थे और युद्ध के दौरान एक समय ऐसा आया जब महाराणा प्रताप चारों ओर से घिर गए। उस संकट की घड़ी में मेवाड़ के वीर सरदार झाला बीदा (मानसिंह) ने अद्वितीय त्याग का परिचय दिया। उन्होंने महाराणा का राजचिह्न और मुकुट स्वयं धारण कर लिया ताकि शत्रु उन्हें ही महाराणा समझे। परिणामस्वरूप मुगल सेना का ध्यान उनकी ओर चला गया और महाराणा प्रताप सुरक्षित निकल सके। झाला मान ने अपने प्राणों का बलिदान देकर मेवाड़ की स्वतंत्रता की ज्योति को बुझने नहीं दिया।

चेतक की स्वामिभक्ति- हल्दीघाटी युद्ध का उल्लेख चेतक के बिना अधूरा है। चेतक केवल एक घोड़ा नहीं था, बल्कि स्वामिभक्ति और साहस का प्रतीक था। युद्ध के दौरान चेतक गंभीर रूप से घायल हो गया था, फिर भी उसने अपने स्वामी महाराणा प्रताप को सुरक्षित स्थान तक पहुँचाया। कहा जाता है कि उसने एक चौड़े नाले को छलांग लगाकर पार किया और उसके बाद अपने प्राण त्याग दिए। राजस्थान की लोककथाओं और जनश्रुतियों में चेतक की स्वामिभक्ति आज भी अमर है। उसकी कहानी मनुष्य और पशु के बीच निष्ठा के सर्वोच्च उदाहरणों में गिनी जाती है।

युद्ध का परिणाम हल्दीघाटी युद्ध का तत्काल परिणाम किसी निर्णायक विजय के रूप में सामने नहीं आया। मुगल सेना रणभूमि पर नियंत्रण स्थापित करने में सफल रही, किन्तु वह महाराणा प्रताप को बंदी बनाने या मेवाड़ को पूर्णतः अधीन करने में असफल रही। महाराणा प्रताप ने संघर्ष जारी रखा। उन्होंने अरावली के दुर्गम क्षेत्रों से गुरिल्ला युद्ध की नीति अपनाई और धीरे-धीरे मेवाड़ के अधिकांश क्षेत्रों पर पुनः अधिकार स्थापित कर लिया। इस दृष्टि से देखा जाए तो हल्दीघाटी का युद्ध केवल एक दिन का सैन्य संघर्ष नहीं था, बल्कि स्वतंत्रता की रक्षा के लिए लंबे संघर्ष का महत्वपूर्ण अध्याय था।

महाराणा प्रताप का संघर्ष- युद्ध के बाद महाराणा प्रताप ने अत्यंत कठिन परिस्थितियों का सामना किया। उन्हें जंगलों और पहाड़ों में रहना पड़ा। परिवार और प्रजा ने भी अनेक कष्ट सहे। किन्तु उन्होंने कभी आत्मसमर्पण नहीं किया। उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति और राष्ट्रप्रेम ने उन्हें निरंतर संघर्ष के लिए प्रेरित किया। बाद में उन्होंने चावंड को अपनी राजधानी बनाया और मेवाड़ के अधिकांश भूभाग को पुनः स्वतंत्र कराया। महाराणा प्रताप का जीवन इस बात का प्रमाण है कि संसाधनों की कमी के बावजूद दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास से बड़े से बड़े साम्राज्य को चुनौती दी जा सकती है। हल्दीघाटी का युद्ध भारतीय इतिहास में अनेक कारणों से महत्वपूर्ण है। यह स्वतंत्रता और स्वाभिमान की रक्षा का प्रतीक है। इसने आने वाली पीढ़ियों को अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा दी। यह दर्शाता है कि राष्ट्रीय सम्मान किसी भी राजनीतिक लाभ से बड़ा होता है। इस युद्ध ने राजपूत वीरता और त्याग की परंपरा को अमर बना दिया। भील समुदाय और जनजातीय समाज की भूमिका को भी इतिहास में विशेष स्थान मिला।

राजस्थान की लोक संस्कृति में हल्दीघाटी युद्ध आज भी जीवंत है। लोकगीतों, कविताओं, कथाओं और नाटकों में महाराणा प्रताप की वीरता का वर्णन किया जाता है। प्रसिद्ध कवि श्यामनरायण पाण्डे की कृति हल्दी घाटी ने इस युद्ध और महाराणा प्रताप के शौर्य को जन-जन तक पहुँचाया। विद्यालयों से लेकर साहित्यिक मंचों तक महाराणा प्रताप का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है 450 वर्ष बाद भी हल्दीघाटी का युद्ध हमें अनेक महत्वपूर्ण संदेश देता है। स्वाभिमान जीवन का सर्वोच्च मूल्य है। कठिन परिस्थितियों में भी सिद्धांतों से समझौता नहीं करना चाहिए। राष्ट्रहित को व्यक्तिगत हित से ऊपर रखना चाहिए। संघर्ष और धैर्य सफलता की कुंजी हैं। नेतृत्व का वास्तविक अर्थ त्याग और समर्पण है। आज जब भारत विश्व मंच पर नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर रहा है, तब महाराणा प्रताप का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

वर्ष 2026 में हल्दीघाटी युद्ध के 450 वर्ष पूर्ण होना केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं है। यह अवसर है, अपने गौरवशाली इतिहास को याद करने का, वीर बलिदानियों को श्रद्धांजलि देने का, युवा पीढ़ी को राष्ट्रप्रेम और कर्तव्य का संदेश देने का, तथा स्वतंत्रता और स्वाभिमान के मूल्यों को पुनः स्थापित करने का।यह वर्ष हमें स्मरण कराता है कि इतिहास केवल अतीत की घटनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि भविष्य के निर्माण की प्रेरणा भी है।

हल्दीघाटी का युद्ध भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। यह युद्ध भले ही सैन्य दृष्टि से निर्णायक न रहा हो, लेकिन नैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से इसकी महत्ता अत्यंत विशाल है। महाराणा प्रताप ने सिद्ध कर दिया कि सच्चा वीर वही है जो परिस्थितियों से नहीं, अपने आदर्शों से संचालित होता है। 450 वर्ष बाद भी महाराणा प्रताप, चेतक, झाला मान और मेवाड़ के असंख्य वीरों की गाथाएँ भारतीय जनमानस को प्रेरित करती हैं। उनका संघर्ष हमें यह संदेश देता है कि स्वतंत्रता, स्वाभिमान और राष्ट्रगौरव की रक्षा के लिए किया गया त्याग कभी व्यर्थ नहीं जाता। हल्दीघाटी की पीली मिट्टी आज भी मानो यह पुकार करती है कि साहस, स्वाभिमान और मातृभूमि के प्रति समर्पण ही किसी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है। महाराणा प्रताप का जीवन और हल्दीघाटी का युद्ध आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणा का अमर स्रोत बने रहेंगे।***************

अंगिरावंशियों के स्वजातीय शिक्षा-प्रसार की अनुकरणीय गौरवगाथा

19वीं शताब्दी भारतवर्ष के इतिहास में सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक चेतना के नवजागरण का युग था। इस कालखंड में एक ओर जहाँ देश के स्वतंत्रता सेनानियों का अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष अपने चरम पर था, वहीं दूसरी ओर कई बुद्धिजीवी समाज-सुधारक भी सामाजिक कुरीतियों, निरक्षरता, रूढ़िवाद, अंधविश्वास तथा जातिगत भेदभाव के विरुद्ध जोरदार आवाज बुलंद कर रहे थे। इस नवजागरण ने विभिन्न जातियों और समुदायों में आत्म-सम्मान, स्वजाति उत्थान के संकल्प और शिक्षा के प्रति रुझान को प्रबल बनाया।

कई जांगिड ब्राह्मण समाज के बुद्धिजीवी भी सामाजिक बदलाव के इस क्रान्तिकारी अभियान से प्रभावित हुए। यद्यपि इन्हें अपने परम्परागत हस्तशिल्प, तकनीकी ज्ञान और रोजमर्रा उपयोग के यंत्र-उपकरण निर्माण कार्यों में महारत हासिल थी, लेकिन पढ़ाई-लिखाई के क्षेत्र में अन्य अगड़ी जातियों की तुलना में वह पीछे थे। जन्मजात इंजीनियर कहलाने वाले इन लोगों की आजीविका अपने-अपने गांवों के आस-पास ही चल जाती थी। लगभग 100-125 वर्ष पूर्व देश की राजधानी दिल्ली में बाहरी सूबों से आए लगभग 250-300 परिवार आबाद थे। जयपुरियों, तेजपुरियों, देशवालियों और तेलीवाड़ा की पंचायतों के चौधरी व पंच इस समाज के मुखिया हुआ करते थे। अभी तक सामाजिक मसायल से ताल्लुकात रखने वाली **'अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा'** जैसी कोई संस्था मौजूद नहीं थी।

अनेक समाज हितैषी महापुरुष तत्कालीन परिस्थितियों से भविष्य में आने वाली चुनौतियों से वाकिफ थे। वह जानते थे कि महज अपने पेशे में पारंगत होना काफी नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु उसे शिक्षित होना बेहद जरुरी है। इसलिए उन्होंने अपने समाज को शिक्षित और जागरूक बनाने का निश्चय किया। बताया जाता है कि 19वीं और 20वीं शताब्दी के संधिकाल में 2-3 शिक्षित और उदारचित् समाजबंधुओं ने तेलीवाड़ा में रात्रि में अपने स्वजाति भाईयों को साक्षर बनाने का संकल्प लिया, जो दिन में बड़ी संख्या में लकड़ी की तख्तियां, स्लेटों के फ्रेम और छाल-छलनियों के घेरे बनाने का कार्य किया करते थे। उनके प्रयास सन् 1906 में दिल्ली स्थित विश्वकर्मा मन्दिर परिसर में जांगिड समाज की प्रथम पाठशाला की शुरुआत के रूप में फलित हुए।

इस क्रम में आगामी प्रयास **'काल करे सो आज कर'** के संकल्प-स्वरूप अगले वर्ष फलीभूत हुए। दिसम्बर, 1907 में **'जांगिड जागृति आन्दोलन'** के संदर्भ में समाजसेवी पं. धनीराम अजमेर के आवास पर प्रथम बैठक का आयोजन हुआ। इसमें मुख्य प्रस्ताव **"शिक्षा के निमित सब सहायता करें, जिससे समाज की उन्नति हो सके"** करतल ध्वनि से पारित हुआ। इस बैठक में स्वजातीय उत्थान के उद्देश्य से एक संगठन बनाने की विधिवत् रूपरेखा भी तैयार की गई।

इस प्रकार शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए कुछ बाल पाठशालाऐं दिल्ली शहर - देहात एवं राजपुताना (वर्तमान राजस्थान) में स्थापित हुई। जयपुर में स्थापित 2-3 पाठशालाओं के संचालन का खर्चा वहन करने के लिए **'आटा-संग्रह'** जैसी स्वावलंबी योजनाएं भी प्रारम्भ की गई। उन महापुरुषों के स्वजाति-प्रेम का अंदाज मथुरा के बाबु गोरधनदास द्वारा राजपुताना के समाजबंधुओं को दिए गए इस वचन से लगा सकते हैं कि **'जो भी भाई अपने बच्चों को दिल्ली की पाठशालाओं में पढ़ाना चाहें, उन बच्चों के खान-पान और रहन-सहन का खर्च वह स्वयं उठाऐंगे'।** इस अभिकथन का सार-संक्षेप यह है कि समाजहितैषी बंधुओं ने अपने समाज को शिक्षित बनाने की योजनाओं के कार्यान्वयन में कोई कोर-कसर नही छोड़ी।

प्रारम्भ में कुछ पाठशालाऐं किराये के भवन से संचालित की गई। लेकिन किराया खर्च अधिक होने के मध्यनज़र अपना भवन बनाने की योजना पर विचार किया। समाज द्वारा निकाले जा रहे मासिक पत्र **'जांगिड़ा समाचार' (वर्तमान में जांगिड ब्राह्मण)** में प्रकाशित प्रेरणादायी लेखों, समाजसेवियों के व्याख्यानों के साथ-साथ अध्ययनरत छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए पारितोषिक वितरण व वित्तीय सहायता प्रदान करने से समाज में परस्पर सहयोग और विश्वास का सकारात्मक वातावरण निर्मित हुआ। परिणामस्वरूप यह अभियान और तीव्र गति से आगे बढ़ा।

मार्च, 1919 में चौधरी चत्तरुमल के सौजन्य से बवाना (दिल्ली) में आयोजित स्थानीय सम्मेलन में भारी संख्या में जांगिड बंधुओं ने शिरकत की। पं. जयकृष्ण मणीठिया, पं. दीनदयाल शर्मा और भजनोपदेशक पं. छज्जूराम उर्फ प्रेमीजी इनमें प्रमुख थे। इस सम्मेलन में प्रेरणा और प्रोत्साहन से अभिभूत पं. टीकाराम और पं. लज्जाराम ने अपने गांव बांकनेर में अपनी कृषि भूमि पाठशाला निर्माण के लिए देने की घोषणा की। अगले माह अप्रेल में **"बांकनेर गांव के देहमण परिवार के 6 बन्धुओं पं. टीकाराम, पं. लज्जाराम, पं. वानीराम, पं. हरियाराम, पं. जयलाल और पं. वलेल सिंह ने अपनी 6 बीघा 3 बिसवा भूमि का बैनामा कर उसे जांगिड ब्राह्मण महासभा को समर्पित कर दिया।**

उल्लेखनीय है कि सन् 1919 में जांगिड ब्राह्मण महासभा का 7 वां अधिवेशन बांकनेर में इसी भूमि पर आयोजित हुआ था। पं. टीकाराम देहमण इस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष थे। स्थानीय समाज बंधुओं ने परस्पर सहयोग से इस भूमि पर चार-दिवारी और पांच कमरों का निर्माण करवाया। जिसके पश्चात् किराए के भवन में चल रही दिल्ली पाठशाला को बांकनेर में स्थानांतरित कर दिया। इस प्रकार पं.

जयकृष्ण मणीठिया की जन्मभूमि ग्राम बांकनेर में जांगिड ब्राह्मण समाज का प्रथम शिक्षण संस्थान अपनी स्वयं की भूमि पर स्थापित हुआ। प्रारम्भ में इसे **'बांकनेर पाठशाला' और बाद में इसका नाम 'अंगिरस भारती पब्लिक स्कूल बांकनेर' कर दिया गया।**

इस पाठशाला के संचालन में अनेक बाधायें व उतार-चढ़ाव आये। सन् 1922 से 1927 तक यह निर्बाध गति से चलती रही, किन्तु कतिपय कारणों से सन् 1929 में यह बन्द हो गई। समुचित देखभाल के अभाव में इसके भवन को भी क्षति पहुँची। सन् 1933 में 300 रुपए की लागत से इसकी मरम्मत करवाई गई और गुरुदेव पं. जयकृष्ण मणीठिया ने स्थानीय समाजबंधुओं के सहयोग के आश्वासन पर इसे पुनः चालू किया। फलस्वरूप इसमें 20-25 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने लगे। किन्तु कुछ वर्षो पश्चात् आवश्यक आर्थिक सहयोग के अभाव में यह पाठशाला एक बार फिर बन्द हो गई। सन् 1942 में महासभा ने इस पर 500 रुपए पूंजी लगाई और व्यवस्थापक पं. श्यामसुंदर भारद्धाज के मार्गदर्शन में यह फिर सुचारु रूप से चलने लगी, जिससे पाठशाला में छात्रों की संख्या में और बढ़ोतरी हुई। सन् 1944 में महासभा के खंडेला अधिवेशन में पाठशाला संचालन के लिए 5000 रुपए स्थाई कोष की योजना बनाई गई, जिसमें समाजसेवी पं. किशनलाल शर्मा ने अकेले 1000 रुपए सहयोग राशी देने का वचन दिया। परन्तु दूसरे समाज बंधुओं की ओर से आशातीत सहयोग न मिलने के कारण स्थाई कोष की योजना सफल नही हुई और धनाभाव के कारण यह पाठशाला सन् 1945 मे बन्द हो गई।

जांगिड ब्राह्मण शाखा सभा, बांकनेर के प्रयास से जांगिड ब्राह्मण महासभा ने सन् 1986 में इसका पुनर्निमाण कराया। दानदाताओं के सहयोग से इसमें और कमरों का निर्माण करवाया एवं गुरुदेव प. जयकृष्ण मणीठिया की मूर्ति की स्थापना की। ग्राम बालन्द जिला रोहतक निवासी पं. जागेराम कालोनिया ने इस पाठशाला के लिए 1.5 एकड़ भूमि दान की तथा अपने पिता स्व. हरकेराम की स्मृति में एक स्मारक का निर्माण करवाया। यह शिक्षण संस्थान सन् 1996 से दिल्ली सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।

बांकनेर पाठशाला की स्थापना के पश्चात् समाज हितैषी बंधुओं ने परस्पर सहयोग से दूसरे कई कस्बों में विद्यालय, महाविद्यालय और शिक्षण संस्थान बनवाये, जो शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए उनके दृढ़ संकल्प एवं पुरुषार्थ को दर्शाते हैं। परन्तु अपेक्षित सहयोग के अभाव में कई शिक्षण संस्थाऐं सुचारु रूप से नहीं चल पाई। कुछ संस्थाऐं बंद हो गई, कुछ उन लोगों के कब्जे में चली गई, जिनका इनके निर्माण से कोई वास्ता नही था। पं. किशनलाल शर्मा के त्याग और सेवाभाव को देखें, जिन्होंने अपने कस्बे में एक शानदार महाविद्यालय बनवाया, लेकिन आज उस महाविद्यालय में केवल उनका नाम शेष बचा है। यह महाविद्यालय आज जिस समूह द्वारा नियंत्रित है, उससे पं. किशनलाल शर्मा के परिवार या जांगिड ब्राह्मण समाज का कोई खास वास्ता नही रहा। कई शिक्षण संस्थाओं को दो पक्षों के परस्पर अंतर्विरोध और वैमनस्य भाव ने बदहाल कर डाला।

अफसोस कि जांगिड ब्राह्मण समाज ने अपने उन बंधुओं से कोई सबक नहीं लिया, जो कभी एक ही वंश-वृक्ष की शाखाऐं हुआ करती थी, किन्तु 200-250 साल पहले अलग हो गए थे। शिक्षण संस्थाओं के कुशल प्रबंधन और शानदार रैंकिंग के लिए रामगढ़िया गर्ल्स कॉलेज, लुधियाना और रामगढ़िया समाज द्वारा पंजाब के फगवाड़ा व दूसरे शहरों में संचालित की जा रही शिक्षण संस्थाओं को उदाहरण के तौर पर देख सकते हैं।

इस वास्तविकता को स्वीकार करना होगा कि समाजसेवा केवल त्याग, समर्पण और निःस्वार्थ कर्म की अपेक्षा करती है। विडंबना यह है कि निष्काम समाजसेवी होने का दावा करने वाले अनेक लोग केवल अपनी वाह-वाही करवाना चाहते हैं। वह नींव के पत्थर बनने की भूमिका स्वीकार नहीं करना चाहते जिस पर पूरी इमारत खड़ी होती है, बल्कि कंगूरे बनकर चमकने और प्रशंशा बटोरने की आकांक्षा रखते हैं।

शिक्षण संस्थाओं की बदहाली के नेपथ्य में उन आत्ममुग्ध समाजसेवी बंधुओं की गणना की जा सकती है, जो केवल स्वयं पर, प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत सम्मान पर न्योछावर रहने लगे हैं, किन्तु समाज के प्रति सेवाभाव शून्य रखते हैं। सामाजिक संस्थाओं को उत्कृष्टता और सफलता के सर्वोच्च पायदान तक पहुँचाने के लिए पदों के अंहकार और प्रतिष्ठा की लालसा को त्यागना होता है। सामाजिक कार्यक्रमों में कारगर योजनाओं पर विचार-मंथन करने और उन पर चिंतन करना ही प्रमुख एजेंडा होना चाहिये।

जांगिड ब्राह्मण समाज का गौरवशाली इतिहास इस बात का साक्षी है कि आज जो भी कुछ हासिल है वह सब उन महापुरुषों के त्याग, तपस्या और पुरुषार्थ की बदौलत है, जिन्होंने स्वयं को नहीं, बल्कि समाजहित को सर्वोपरि रखा। जब समाज के पदाधिकारी पद और प्रतिष्ठा से उपर उठकर सेवा, सहयोग और सामूहिक हित को प्राथमिकता देंगे, तभी सामाजिक संस्थाएं सशक्त, विश्वसनीय और आदर्श बन सकेंगी।

हम सभी को समझना होगा कि अंततः शिक्षा से ही समाज का कल्याण होगा। इस संदर्भ में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित अफ्रीकी राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला ने कहा था कि 'शिक्षा ऐसा ब्रह्मास्त्र है जिसके उपयोग से आप दुनिया बदल सकते हैं'। समतामूलक समाज की स्थापना तक इस ब्रह्मास्त्र की अनिवार्यता कायम रहेगी, क्योंकि शिक्षा ही समाज के सर्वांगीण विकास का एकमात्र और अन्तिम मूल मंत्र है। अतएव शहरों से लेकर ग्रामीण अंचलों तक विद्यार्थियों के निर्बाध अध्ययन को सुनिश्चित करने और प्रत्येक प्रतिभा सम्पन्न, प्रखरबुद्धि विधार्थी को उसके अन्तिम लक्ष्य तक सामुहिक रूप से निरंतर प्रोत्साहित और प्रेरित करते रहने की परम आवश्यकता है।

कैलाश कुमार जांगिड, स्वतन्त्र लेखक, रेवाड़ी

जिला सभा चूरू के निर्देशन मे महिला प्रकोष्ट द्वारा आयोजित जिला स्तरीय "सेल्फी परिंडा अभियान 2026" सम्पन्न

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा जिला सभा चूरू के जिला अध्यक्ष नीरज रोलीवाल के निर्देशन में जिला महिला प्रकोष्ठ द्वारा जिला स्तरीय "सेल्फी परिंडा अभियान 2026" का सफल आयोजन किया गया। जिला महिला प्रकोष्ट अध्यक्ष पूजा जांगिड ने बताया कि अभियान के अंतर्गत पूरे चूरू जिले में समाज की महिलाओं, युवाओं एवं समाजबंधुओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। सभी ने अपने घरों की छतों तथा आसपास के सार्वजनिक स्थानों पर भीषण गर्मी से परेशान मूक पक्षियों के लिए परिंडे लगाए तथा उनमें नियमित रूप से पानी और चुग्गे की व्यवस्था करने का संकल्प लिया।

जिला महिला प्रभारी कल्पना जांगिड ने बताया कि चूरू जिले में पड़ रही रिकॉर्डतोड़ गर्मी को देखते हुए पक्षियों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से यह अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान सैकड़ों महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने-अपने घरों एवं मोहल्लों में 2-2, 5-5 तथा उससे अधिक परिंडे लगाए, जिससे अभियान को व्यापक सफलता मिली। उन्होंने कहा कि पक्षियों की सेवा भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है तथा गर्मी के मौसम में जल और भोजन की व्यवस्था कर हम जीव मात्र के प्रति अपनी संवेदनशीलता का परिचय देते हैं। अभियान के माध्यम से समाज में पर्यावरण संरक्षण एवं जीव-दया का संदेश भी प्रसारित हुआ।

इस अवसर पर ललिता जांगिड ने अभियान में सहयोग करने वाली सभी महिलाओं, युवाओं एवं समाजबंधुओं का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर सुजानगढ़ से ममता संचोरिया, ममता असलिया, रचना जांगिड, ललिता, सुनीता, फुला जांगिड, चूरू से कल्पना, मीनाक्षी जांगिड, रतनगढ़ से महिला अध्यक्ष सरला जांगिड, मीना, सरिता, सारिका, तारानगर से अध्यक्ष मंजू देवी, राजगढ़ से अध्यक्ष सुनीता जांगिड, बीदासर से अध्यक्ष दीपमाला जांगिड, सिद्धमुख से अध्यक्ष सुमन देवी, सरदारशहर से अध्यक्ष शालु जांगिड सहित अनेक महिलाओं, युवाओं व समाज बंधुओ ने इस अभियान को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया।

नीरज रोलीवाल, जिला अध्यक्ष, जिला सभा चूरू

हार्दिक बधाई और शुभकामना

सीकर जिले की एक और बेटी पलक शर्मा (जांगिड) बनी चार्टर्ड अकाउंटेंट (C.A.)

अपनी मेहनत और लगन से कोई भी व्यक्ति कठिन से कठिन लक्ष्य को भी हासिल कर सकता है। इस कहावत को आज हमारे समाज के होनहार बच्चे बखूबी चरितार्थ कर रहे हैं। इसी कड़ी मे दिनांक 18 जून, 2026 को सी. ए. अंतिम वर्ष का रिजल्ट घोषित किया गया जिसमे **कुमारी पलक** ने सफलता प्राप्त कर अपने माता-पिता , पूरे परिवार और समाज का नाम रोशन किया है। पलक सीकर जिले के गाँव नाड़ा चारणवास तहसील दाता- रामगढ़ की रहने वाली है। पलक, छितरमल जांगिड की सुपौत्री है। श्रीमती बिमला देवी और सीताराम जांगिड की सुपुत्री है। वर्तमान मे पलक का परिवार छतीसगढ़ के भिलाई शहर मे रह रहा है।

पलक ने इस सफलता का श्रेय खुद की मेहनत,आत्मविश्वास और अपने माता-पिता, भाई और बहिन द्वारा दिए गए अनवरत सहयोग को बताया।

महासभा प्रधान रामपाल शर्मा ने पलक को उसकी सफलता पर बधाई देते हुये व्यक्तिगत रूप से और महासभा की समस्त कार्यकारिणी की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उसके उज्जवल भविष्य की कामना की।******

पंच महायज्ञ

परमपिता परमात्मा ने सबसे सुंदर जीव मनुष्य की रचना की है। इसको बोलने की, समझने की, हंसने की कला दी है। मनुष्य को परमात्मा ने सबसे मुख्य बुद्धि दी है। जब परमात्मा ने मनुष्य को इतना सुंदर शरीर दिया है और इतनी विशाल बुद्धि, सोचने की शक्ति, समझने की शक्ति, देखने की शक्ति, सुनने की शक्ति, कार्य करने की शक्ति दी है , तो मनुष्य का भी कुछ कर्तव्य बनता है कि इस दुनिया में आकर समाज के लिए, परिवार के लिए, राष्ट्र के लिए, अपने लिए कुछ उत्तम कर्म करें। वह उत्तम कर्म स्वामी दयानंद जी ने पंच महायज्ञ के नाम से बताएं हैं जो इस प्रकार है।

ब्रह्मयज्ञ:- परमात्मा ने यह सुंदर शरीर बनाया , इसकी जीविका के लिए सारे साधन जुटाए हैं। खाने के ,पीने के, ओढ़ने के, पहनने के, यह सभी कुछ उस परमात्मा की ही देन है। कोई किसी को एक छोटी सी चीज, जैसे कि एक पेन भी देता है तो उसको धन्यवाद बोला जाता है। जिस परमात्मा ने सब कुछ दिया है, तो हमारा भी दायित्व बनता है कि उस परमपिता परमात्मा को सुबह शाम संध्या के द्वारा उसका स्मरण करें, उसका धन्यवाद करें। प्रतिदिन सुबह शाम धन्यवाद करते हुए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करें। इसको ही ब्रह्मयज्ञ कहते हैं। इससे बुद्धि, आत्मिक ज्ञान, आत्मिक शान्ति और आत्मिक बल बढ़ता है। प्रत्येक मनुष्य को ब्रह्मयज्ञ का पालन करना चाहिए। यह उसका नैतिक कर्तव्य है।

देवयज्ञ:- प्रतिदिन शुद्ध घी, जड़ी-बूटियों और हवन सामग्री द्वारा अग्निहोत्र (हवन) करने को देवयज्ञ कहा जाता है। इससे वातावरण शुद्ध होता है, रोगों का नाश होता है बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा होते हैं और पर्यावरण को भी लाभ मिलता है। हम सारा दिन शरीर के द्वारा, पसीने के द्वारा, श्वास के द्वारा, मल मूत्र के द्वारा, वायुमंडल को दूषित करते रहते हैं तो हमारा भी नैतिक कर्तव्य बनता है कि प्रतिदिन यज्ञ करके, जिस वायुमंडल में हम साँस लेते हैं उसको शुद्ध करें। जैसे प्रतिदिन अपने घर की सफाई रखते हैं, मंदिर की सफाई रखते हैं, शरीर की सफाई रखते हैं, इसी प्रकार दैनिक यज्ञ करके वायुमंडल को भी शुद्ध करें तो हमें और आम जनता को सांस लेने में तकलीफ नहीं होगी, हमें शुद्ध वायुमंडल मिलेगा। दैनिक यज्ञ करना हमारा नैतिक कर्तव्य बनता है। जिसका हमें पालन करना चाहिए।

पितृयज्ञ:- अपने जीवित माता-पिता, सास ससुर, दादा दादी, गुरुजनों, वृद्धों और विद्वानों की सेवा, सत्कार और सम्मान करना पितृयज्ञ कहलाता है। जिन्होंने हमें जन्म दिया और ज्ञान दिया, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का यह माध्यम है। जो 1 वर्ष में 15 दिन श्राद्ध निकालते हैं वह निकालें या ना निकालें, कोई पाप नहीं लगता, लेकिन जीवित माता-पिता, बुजुर्गों की आंखों में आंसू आ गए तो महापाप लगेगा। बुजुर्गों की सेवा करने का सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि हमारी संतान यह सब कुछ देखती है तो आगे जाकर हमें भी उसका लाभ मिलेगा, वह हमारी सेवा करेंगे। गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि आत्मा मरती नहीं है वह समय आने पर चोला बदलती है। जो माता-पिता हमारे से विदा हो गए, उन्होंने नया शरीर कर्म अनुसार धारण कर लिया , इसके बाद वह फिर से हमारा भोजन ग्रहण करने नहीं आएंगे। हम उनकी पुण्यतिथि पर यज्ञ (हवन) करा कर उनको याद कर सकते हैं उनकी याद में गरीबों को दान कर सकते हैं।

बलिवैश्वदेव यज्ञ :- मनु महाराज ने मनुस्मृति में आदमी के जीवन को चार भागों में बांटा है, जिनको आश्रम कहते हैं। ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम। इन चारों आश्रमों में सबसे मुख्य गृहस्थ आश्रम को माना गया है। गृहस्थी का कर्तव्य है कि वह पक्षियों, चीटियों, गायों और अन्य बेजुबान जानवरों ,प्राणियों और इनके साथ दादा-दादी, माता-पिता, सास-ससुर अपनी सन्तान के लिए भोजन और जल की व्यवस्था करे यही बलिवैश्वदेव यज्ञ कहलाता है। यह समस्त जीवों के प्रति प्रेम और करुणा की भावना को दर्शाता है। इस यज्ञ का पालन करना गृहस्थी का नैतिक कर्तव्य है।

अतिथि यज्ञ:- परिवारिक घर में जो आदमी बिना तिथि के आए उसको ही अतिथि कहते हैं। घर आए हुए विद्वान, संन्यासी, धार्मिक और परोपकारी व्यक्ति और किसी भी प्रकार के अन्य अतिथियों का सत्कार और सेवा करना अतिथि यज्ञ है। इससे सामाजिक सद्भाव और अतिथि सत्कार की भावना प्रबल होती है। जिस घर में अतिथि आते हैं और उनका वहाँ पर पूरा मान सम्मान होता है। जब वह अतिथि बाहर जाकर उस परिवार की प्रशंसा करते हैं तो उस परिवार का बल, बुद्धि और यश बढ़ता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य बनता है अतिथि यज्ञ का पूरी तरह पालन करें।

यह पंच महायज्ञ प्रत्येक व्यक्ति के लिए लाभकारी हैं। जो सभी को करने चाहिए।

सत्यपाल वत्स आर्य
अध्यक्ष आध्यात्मिक प्रकोष्ट - महासभा

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

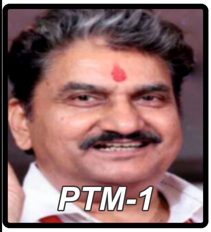

श्री कैलाश चन्द्र बरनेला, (इन्दौर)

श्री सुरेन्द्र कुमार वत्स, दिल्ली

श्री अशोक कुमार बरनेला, इन्दौर

श्री पी.एल.शास्त्री, गुड़गांव

श्री देबूराम जांगिड, दिल्ली

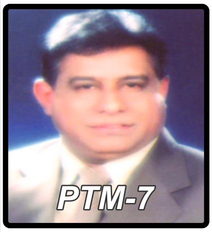

श्री रामनिवास शर्मा, दिल्ली

श्री राजेन्द्र शर्मा, इन्दौर

श्री निर्मल कुमार जांगिड, इन्दौर

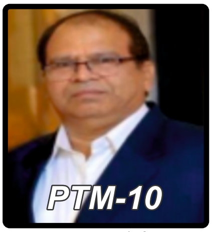

श्री लीलू राम शर्मा, दिल्ली

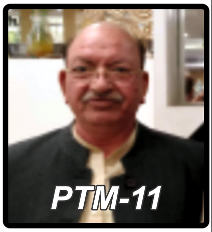

श्री रमेशचन्द शर्मा 'सरपंच', दिल्ली

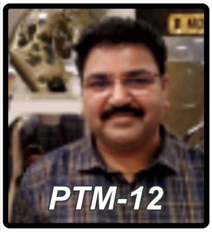

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली

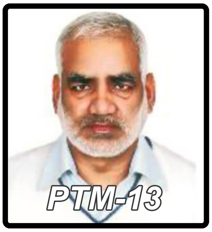

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

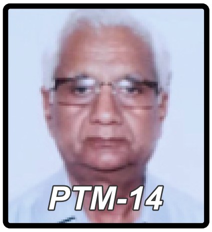

श्री पूरनचन्द शर्मा, दिल्ली

श्री श्रीगोपाल चोयल, अजमेर

श्री कृष्ण कुमार शर्मा, मुम्बई

श्री विद्यासागर जांगिड, गुड़गांव

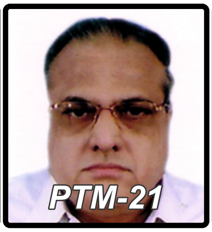

श्री सुशील कुमार शर्मा, कोलकता

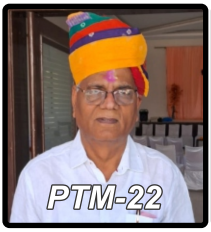

श्री सांवरमल जांगिड, सीकर

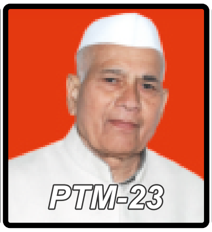

श्री रघुवीर सिंह आर्य, शामली

श्री वेदप्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

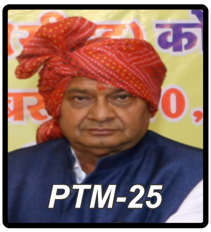

श्री प्रभुदयाल शर्मा, देवास

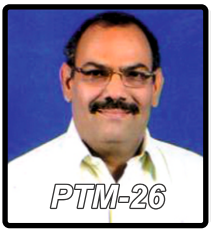

श्री प्रहलादराय शर्मा, इन्दौर

श्री पूनाराम जांगिड, जोधपुर

श्री ललित जड़वाल, अजमेर

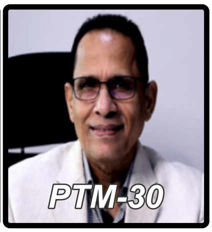

श्री मीता राम जांगिड, मुम्बई

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

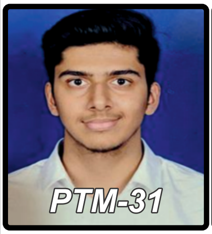

श्री यश अजय शर्मा, मुम्बई

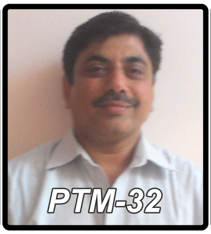

श्री रविन्द्र शर्मा, बीकानेर

श्री जवाहरलाल जांगिड, उज्जैन

श्री नरेश जांगिड, गुड़गांव

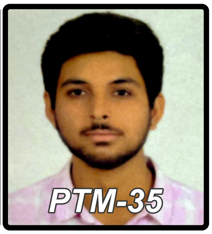

श्री भुवन जांगिड, गुड़गांव

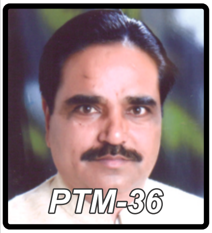

श्री कृष्ण कुमार जांगिड, गुड़गांव

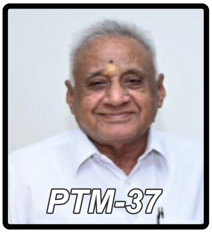

श्री किशन लाल शर्मा, नागपुर

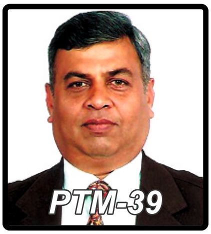

श्री किशोर जी मोखा, नागपुर

श्री बाबू लाल शर्मा, अहमदाबाद

श्री नारायण दत्त, साड़ीवाले, दिल्ली

श्री ओमप्रकाश जांगिड, दिल्ली

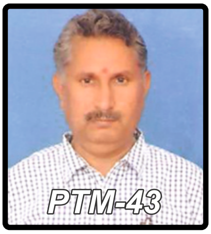

श्री धनपत शर्मा, फरीदाबाद

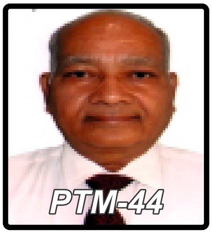

श्री सुरेन्द्र शर्मा, अहमदाबाद

श्री सत्यनारायण शर्मा, दिल्ली

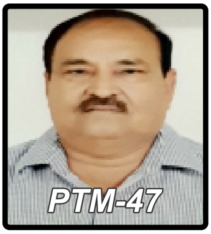

श्री सोमदत्त शर्मा, दिल्ली

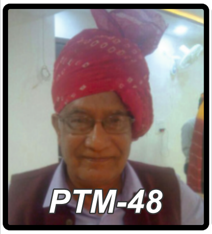

श्री बी.सी. शर्मा, जयपुर

श्री सुरेश शर्मा, नीमच

श्री नितिन शर्मा, इन्दौर

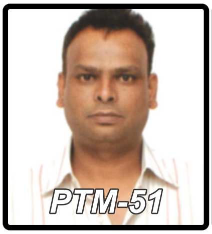

श्री प्रमोद कुमार जांगिड, सूरत

श्री हुकुमचन्द जांगिड, इन्दौर

श्री सत्यनारायण जांगिड, इन्दौर

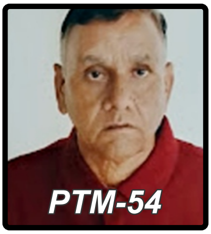

श्री गजानन जांगिड, जालना

श्री अशोक कुमार मोखा, नागपुर

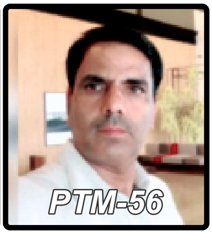

श्री घनश्याम जांगिड, बैंगलुरू

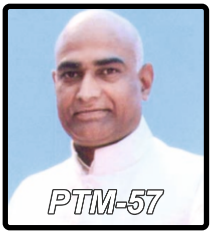

श्री देवमणि जांगिड, दिल्ली

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री फूलकुमार शर्मा, द्वारका-दिल्ली

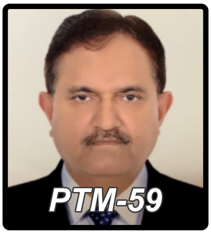

श्री अमराराम जांगिड, जोधपुर

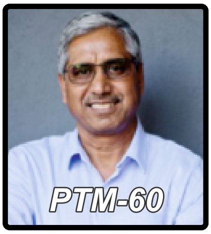

श्री रमेश शर्मा, बैंगलुरू

श्री रविशंकर शर्मा, जयपुर

श्री यादराम जांगिड, दिल्ली

श्री बाबू लाल, बैंगलुरू

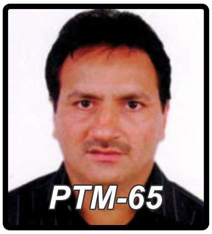

श्री अशोक दत्तु राम, अहमदाबाद

श्री दयानन्द शर्मा, दिल्ली

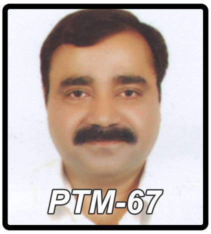

श्री यशवंत नेपालिया, अजमेर

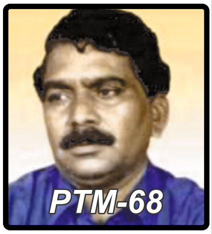

श्री राधेश्याम शर्मा, वापी

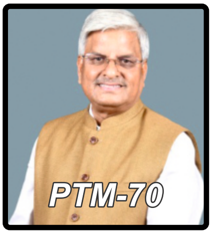

श्री रामपाल शर्मा, बैंगलुरू

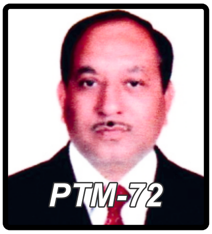

श्री गोपाल शर्मा, कोरबा

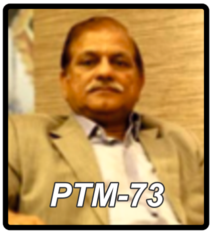

श्री भंवर लाल कुलरिया, मुम्बई

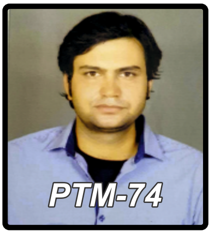

श्री अमित कुमार शर्मा, जयपुर

श्री नरेश चन्द्र शर्मा, बैंगलुरू

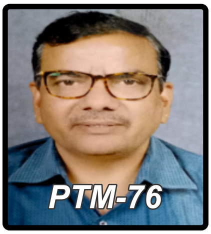

श्री भीमराज शर्मा, जयपुर

श्री रवि जांगिड, बैंगलुरू

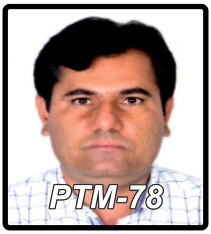

श्री भंवरलाल सुथार, गोवा

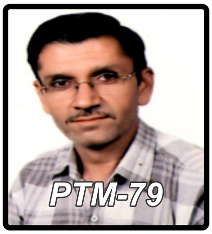

श्री रामनिवास शर्मा, भिलाई

श्री शुभम शर्मा, कोरबा

श्री नानूराम जांगिड, धुलिया

श्री प्रहलाद शर्मा, जयपुर

श्री रीछपाल शर्मा, बिलासपुर, छ.ग.

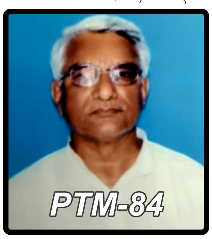

श्री धर्मचन्द शर्मा, बस्तर

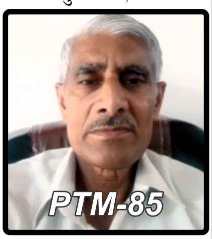

श्री राधेश्याम जांगिड, रेनवाल

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री कन्हैया लाल खाती, अजमेर

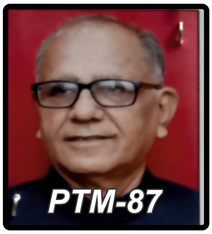

श्री कन्हैया लाल सिलक, अजमेर

श्री अनिल शर्मा, इन्दौर

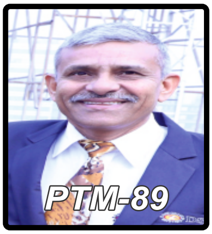

श्री धन सिंह जांगिड, फरीदाबाद

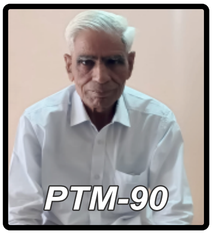

श्री लालचन्द जांगिड, नारनौल

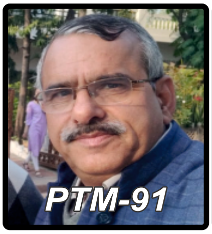

श्री रोहिताश जांगिड, औरंगाबाद

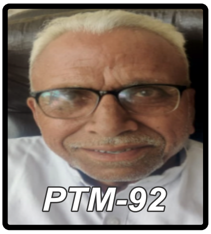

श्री सांवरमल जांगिड, बांसवाडा

श्री महावीर प्रसाद जांगिड, अहमदाबाद

श्री शंकरलाल जांगिड, जयपुर

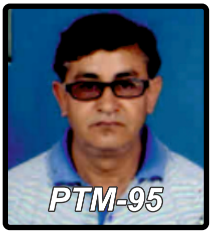

श्री संजय शर्मा, चित्तौड़गढ़

श्री जगतराम भद्रेचा, बैंगलुरु

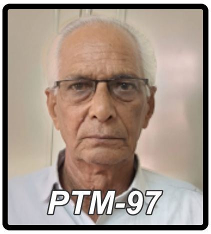

श्री पुरुषोत्तम लाल जांगिड, जयपुर

श्री अनिल शर्मा, चंडीगढ़

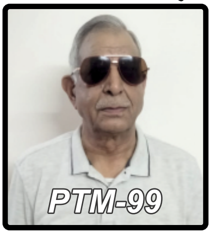

श्री लक्ष्मीनारायण जांगिड, गुरूग्राम

श्री नेमीचन्द जांगिड, सूरत

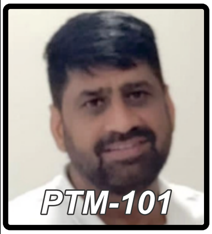

श्री चिरंजीलाल जांगिड, इन्दौर

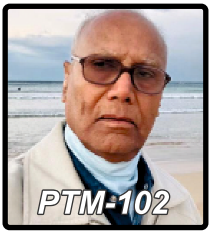

श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा, सूरत

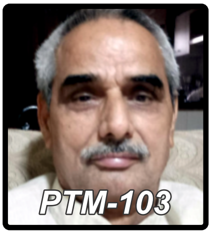

श्री सत्यपाल वत्स, बहादुरगढ़

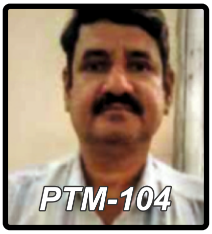

श्री सोमदत्त शर्मा, लखनऊ

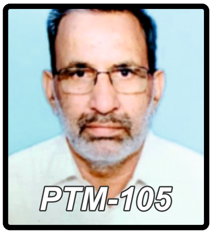

श्री ओम प्रकाश जांगिड, दिल्ली

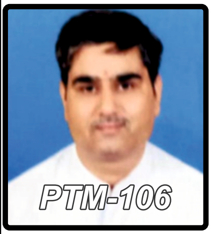

श्री अनिल शर्मा, तेलंगाना

श्री मुकेश जांगिड, तेलंगाना

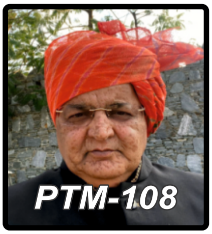

श्री भंवरलाल जांगिड, सूरत

श्री जगदीश खण्डेलवाल, दिल्ली

श्री भंवरलाल शर्मा, पाली,राज0

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री प्रहलाद चन्द शर्मा, बैंगलुरू

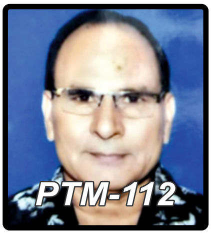

श्री नानूराम जांगिड, हिंगोली,

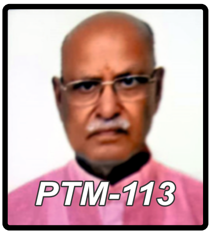

श्री रामानन्द शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

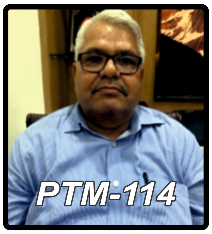

श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, दिल्ली

श्री कैलाश जांगिड, सूरत

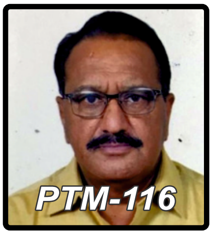

श्री मदन लाल शर्मा, वडोदरा

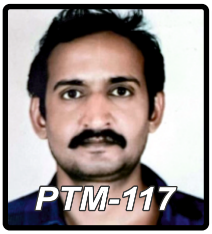

श्री गजानन्द जांगिड, सूरत

श्री हरिराम शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

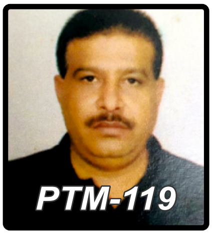

श्री सतवीर शर्मा, गुरूग्राम

श्री किशोरी लाल शर्मा, सागरपुर, दिल्ली

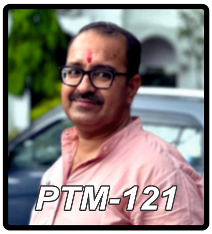

श्री सुनील सिद्धड़, चिड़ावा, झुंझनू

श्री सुरेश कुमार जांगिड, नजफगढ़

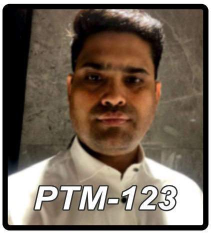

श्री मोहन पंवार, सागरपुर दिल्ली

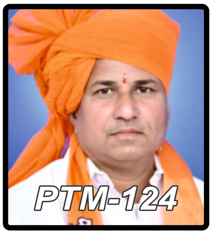

श्री रामावतार जांगिड, सरदारशहर, चूरू

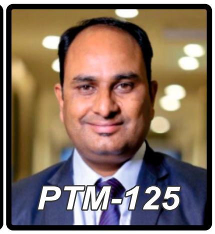

श्री राजील कुमार जांगिड, सूरत

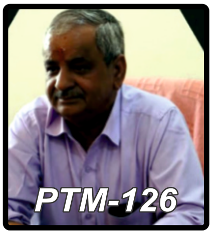

श्री सादीराम जांगिड, हनुमानगढ़,रा0

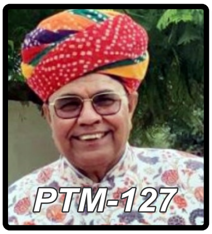

श्री मामराज मिस्त्री, सूरत

श्री सागरमल जांगिड, वडोदरा

श्री सुनील कुमार जांगिड, महाराष्ट्र

श्री महेश कुमार शर्मा, दिल्ली

श्री किशन लाल जांगिड, जयपुर

श्री एकलिंग प्रसाद सुथार, सूरत

श्री राजेश जांगिड, हैदराबाद

श्री सियाराम जांगिड, हैदराबाद

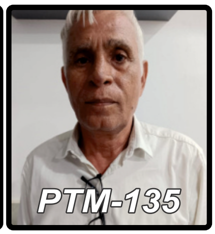

श्री रामवतार शर्मा, तिरूवल्लुर,तमिलनाडू

महासभा दिल्ली के एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य

श्री सतीश कुमार जांगिड,(किशनगढ़ बास) वलसाड

श्री शंकरलाल माकड़, हैदराबाद

श्री महेश चन्द शर्मा, साध नगर, दिल्ली

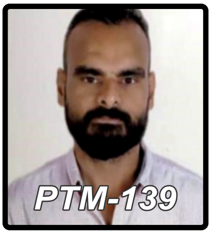

श्री राकेश जांगिड, सूरत

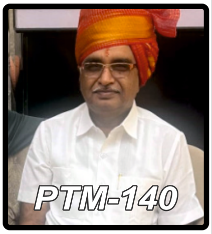

श्री देवकरण जांगिड, हैदराबाद

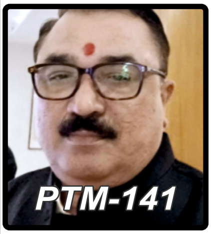

श्री सुभाष शर्मा, भरूच

श्री महेश शर्मा, बैंगलुरू

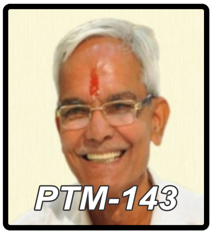

श्री चंद्र प्रकाश शर्मा, गांधीधाम,कच्छ

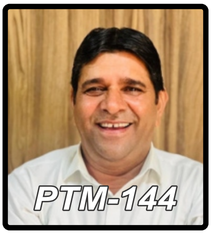

श्री सतवीर जांगिड, बैंगलुरू

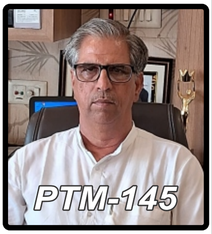

श्री महेन्द्र सिंह जांगिड, धारूहेड़ा रेवाड़ी

श्री पूरनमल जांगिड, सूरत

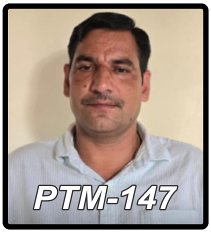

स्वर्गीय श्री नरेश शर्मा, भरूच

श्री बंशीधर जांगिड, भरूच

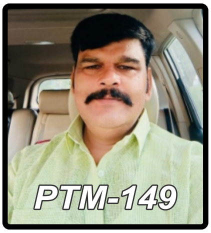

श्री मुकेश कुमार जांगिड, हिम्मतनगर

श्री गोपाल जांगिड, गांधी नगर

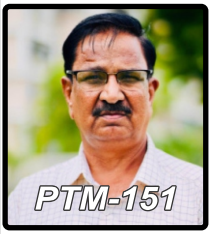

श्री राजेन्द्र कुमार डभाण, खेड़ा

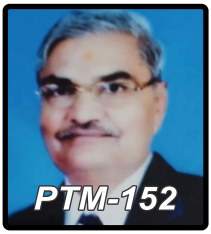

श्री ओम प्रकाश शर्मा, अहमदाबाद

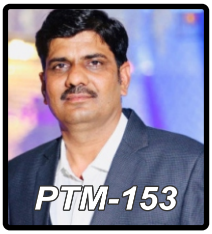

श्री अरूण कुमार डभाण, खेड़ा

श्री कैलाश चंद्र शर्मा, डभाण, खेड़ा

श्री मदन लाल सुथार, भरूच

श्री महेन्द्र जांगिड, भरूच

श्री कन्हैया लाल, (ओजटू वाले) बैंगलुरू

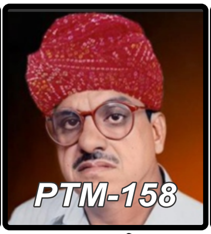

श्री शंकरलाल जांगिड, झुंझुनूं

श्रीमती उषा बरड़वा धर्मपत्नी श्री आनन्द बरड़वा, कोटा राज0

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा दिल्ली अंगिराऽसि जांगिड

शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य की सूची

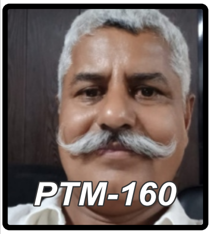

श्री देवेन्द्र शर्मा, उदयपुर, राजस्थान

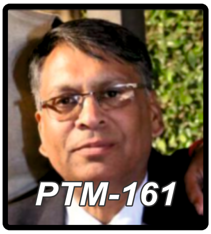

श्री नरोत्तम लाल जांगिड, फरीदाबाद, हरियाणा

श्री हजारी लाल शर्मा, जयपुर, राज0

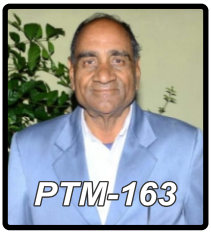

श्री भागीरथ मल जांगिड, जयपुर, राज0

श्री मदनलाल शर्मा, रायपुर छ0गढ़

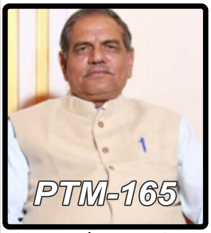

श्री पतराम शर्मा , गुरूग्राम, हरियाणा

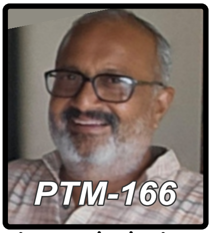

श्री बजरंग शर्मा , दुर्ग, छतीसगढ़

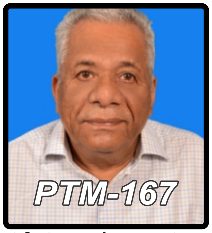

श्री विरदी चन्द शर्मा , रायपुर, छतीसगढ़

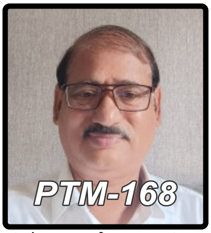

श्री ओमप्रकाश जांगिड, रायपुर, छतीसगढ़

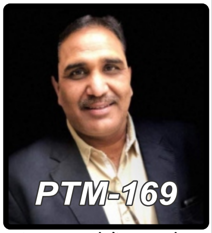

श्री संतलाल शर्मा, बैंगलुरू, कर्नाटक

श्री जगन नाथ जांगिड, रेवाड़ी, हरियाणा

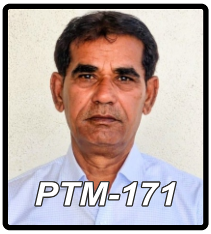

श्री राजकुमार चोयल,पोलो ग्राउंड, सीकर

श्री गोपालदास शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

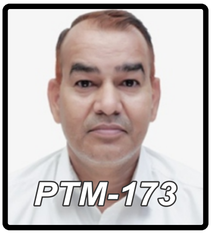

श्री विनोद कुमार शर्मा, रायपुर, छ0गढ़

श्री राधेश्याम शर्मा, जयपुर, राज0

श्री प्रहलाद राय जांगिड, दूजोद, सीकर, राज0

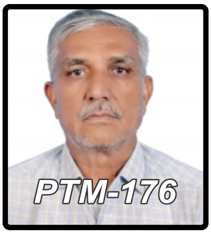

श्री भोलाराम शर्मा, दुर्ग, छतीसगढ़

श्री रमेश शर्मा, रायपुर, छतीसगढ़

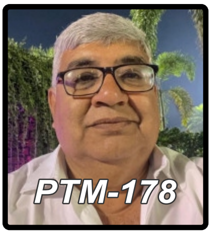

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री अनुराग नीलेश कुमार शर्मा, अहमदाबाद, गुज0

श्री ओम प्रकाश जांगिड, वापी वलसाड, गुज0

श्री शिवपाल जांगिड, बेटमा, इन्दौर, मध्य प्रदेश

श्री उमेदराम जांगिड, वापी, वलसाड, गुजरात

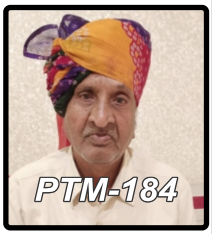

श्री द्वारका प्रसाद शर्मा, वापी, वलसाड, गुजरात

शपथ ग्रहण समारोह के बाद बने हुए एक लाख रूपये के प्लेटिनम सदस्य की सूची

श्री अरुण कुमार, आया नगर,दिल्ली

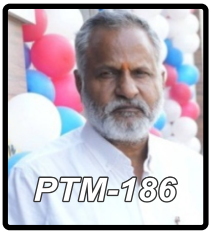

श्री सुरेश जांगिड, दक्षिणी दिल्ली

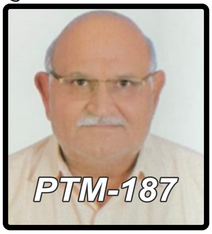

श्री श्रीराम जांगिड, बाजवा, वडोदरा, गुजरात

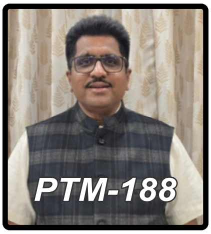

श्री जसाराम सुथार, पणजी, नॉर्थ गोवा

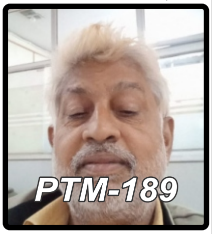

श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा, मेरठ,उत्तर प्रदेश

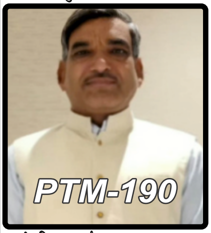

श्री रवि दत्त शर्मा, अहमदाबाद,गुजरात

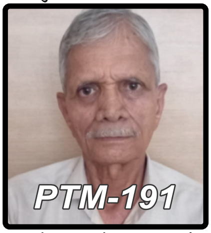

श्री रमेश चंद्र शर्मा, अंजनी नगर,इंदौर

वर चाहिए

1. Wanted a suitable match for healthy & pleasant personality J.B. girl, D.O.B.- 06/03/1996, Birth Time: 01:15 PM, Ht.- 5'1", Birth Place: Bikaner, residence in Jodhpur Rajasthan, Education- B.Tech(Electronics & Communication) **Shasan: Motiyar, Kalunia, Mandan, Jadwal**, **Contact-** Mr. Naresh Motiyar,(Retd. XEn RRVPNL)- 9214406908

वधु चाहिए

1. जांगिड ब्राह्मण परिवार में सुंदर सुशील गृह कार्य में दक्ष मध्यम परिवार से विवाह के लिए कन्या चाहिए। सूरत (गुजरात) में परिवार सेटल्ड है , लड़का (पुत्र) वर्तमान में इनफ़ोसिस पुणे में सॉफ्टवेर इन्जिनियेर है, उम्र- 27 वर्ष, जन्म -09.10.1997. दहेज़ बंधन नहीं। रुचिकर परिवार अन्य जानकारी और गौत्र के लिए कृपया संपर्क करें – आर. के. शर्मा (सीनियर इनकम टैक्स इंस्पेक्टर, सूरत) फ़ोन -7778061060

2.Wanted a suitable match for Jangid Brahmin Doctor boy.DOB: 8-6-1989, Ht. 6'-11". MBBS from AIIMS, New Delhi. To join for M.D.(Paed.) shortly. Father retired XEN from Haryana Govt. Mother Home Maker. Brother Software Engineer. Gotra: Self- Kala, Mother- Panwar, Grand Mother- Kaloniya. Contact Father 9588327248 at Bhiwani Haryana.

3.Wanted suitable match for Jangid Brahmin Engineer boy. DOB 7-12-1992, Ht. 5'-11". B. Tech. (Computer Science) Working with Standard Chartered Bank at Bangalore. Gotra: Self- Kala, Mother- Panwar, Grand Mother- Kaloniya. Contact Father 9588327248 at Bhiwani Haryana

4. Wanted a suitable match for Jangid Brhamin Boy from Alwar, Rajasthan. D.O.B.-06/10/1994, Ht- 5’8’’, Educational Qualification- B.Tech (ECE) from BKBIT Pilani, M.A.(Economics) from PDSU Sikar, Job Details: Assistant Manager in Govt Bank (Mumbai). Father’s Profession- Professor(Govt College Neemkathana), Elder Brother-O.S.(Indian Railway); Prefered Jaipur Zone , Ajmer , Rewari, M.Garh districts. Gotra- Dahmiwal, Samriwal, Dosodiya, Harsoliya. Contact Details: R.N.Sharma: 8005721411,9414906614

श्रद्धांजलि सुमन

अत्यंत दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि श्री सुरेश शर्मा (पूर्व महामंत्री- महासभा) एवं श्री दिनेश शर्मा की पूजनीय माताजी श्रीमती लक्ष्मी देवी शर्मा धर्मपत्नी स्व.श्री बंशीलाल शर्मा नीमच (मध्यप्रदेश) का 05 जून, 2026 को असामयिक निधन हो गया। उनके निधन का समाचार सुनकर गहरा दुख और स्तब्धता हुई।

श्रीमति लक्ष्मी देवी शर्मा हंसमुख, मृदुभाषी, मिलनसार, परोपकारी, सामाजिक एवं धार्मिक व्यक्तित्व की धनी थी। उनका ममतामयी स्वभाव और परिवार तथा समाज के प्रति उनका योगदान हमेशा हम सभी की प्रेरणा बना रहेगा। श्रीमती लक्ष्मीदेवी शर्मा दीपक एवं मौही की दादी जी थी। वह अपने पीछे भरा - पूरा परिवार छोड़कर गई है।

तीये की बैठक में समाजजनों एवं उपस्थित महानुभावो ने उनके प्रति अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि श्रद्धैय माताजी ने अपने जीवन में सभी को प्रेम और संस्कार दिए। उनका स्नेह, मार्गदर्शन और मधुर व्यवहार हमेशा हमारी स्मृतियों में अंकित रहेगा। उनका निधन परिवार ही नहीं वरन हम सभी के लिए अपूरणीय क्षति है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वे उनकी पुण्य आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें और शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय दु:ख को सहने की शक्ति प्रदान करें। परिवारजनों ने उनकी पावन स्मृति में अनेक सामाजिक संस्थाओं एवं मंदिरों को सहयोग राशि प्रदान की।

श्रध्देय श्रीमती लक्ष्मी देवी शर्मा के निधन पर अपनी शोक संवेदना व्यक्त करने, महासभा एवं प्रदेश सभाओं के अनेक पदाधिकारी उनके निवास स्थान पर पहुंचे और उन्होंने अपने श्रद्धासुमन व्यक्त करते हुए कहा कि माताजी का हमेशा के लिए बिछड़ जाना असीम दुख का कारण तो है परंतु ऐसे में धीरज रखना ही महानता है। उनके निधन से परिवार ही नहीं समाज में भी अपूरणीय क्षति हुई है।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा तथा समस्त कार्यकारिणी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों मे उचित स्थान प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। हम सभी आपके समस्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पुण्यात्मा के श्री चरणों मे श्रद्धासुमन और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

।। ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति ।।

प्रवीण शर्मा नीमच
मुख्य चुनाव अधिकारी - महासभा

श्रद्धांजलि सुमन

अत्यंत दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि जांगिड सेवा संस्थान बेरी के अध्यक्ष श्री बशेश्वर दयाल जांगिड के भ्राता श्री राधेश्याम जांगिड (रोलीवाल) पुत्र स्व. श्री ज्वालाप्रसाद निवासी बिड़ोदी बड़ी हाल निवास नवलगढ़ (स्टेशन रोड़) का आकस्मिक देवलोक गमन दिनांक 14 मई, 2026 को हो गया है।

स्वर्गीय श्री राधेश्याम जांगिड एक सरल स्वभाव, मिलनसार, हंसमुख एवं धर्मपरायण व्यक्तित्व के धनी थे। पगड़ी रस्म दिनांक 26 मई, 2026 के दिन समाज बंधुओं ने पुण्यात्मा को मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा तथा समस्त कार्यकारिणी परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों मे उचित स्थान प्रदान करे और शोकाकुल परिवार को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। हम सभी आपके समस्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगत पुण्यात्मा के श्री चरणों मे श्रद्धासुमन और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

।। ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति।।

सह - संपादक

हाल ही मे सम्पन्न जिला सभा चूरू के निर्देशन मे महिला प्रकोष्ट द्वारा आयोजित
जिला स्तरीय "सेल्फी परिंडा अभियान 2026" की कुछ झलकियां।

मासूम परिंदों की प्यासी पुकार सुनिए, एक बर्तन पानी का भरकर रखिये

BHARAT WHEEL

Manufacturer of Rims for Tractor,
Motor Vehicle, Earthmoving Machine.

Our valued customers

VECTRA MANITOU GROUP JCB ESCORTS

Bharat Wheel Private Limited
Muzaffarnagar Road, Shamli - 247776, UP, India
Email : info@bharatwheel.com
www.bharatwheel.com

SHARMA
Group of companies

25 YEARS OF DRIVEN EXCELLENCE
SHARMA HYUNDAI
SINCE 1998

LATE SHREE
KANHAIYALAL SHARMA
(CHOYAL)

HYUNDAI

AUTHORISED HYUNDAI DEALER
SHARMA HYUNDAI
Since 1998

Ashram Road Call : 9099978327	**Satellite** Call : 9099978334
Parimal Garden Call : 9099978328	**Naroda** Call : 9099938777

TOYOTA

Authorised Toyota Dealer : **NARMADA TOYOTA**
VADODARA : 9099916601 I ANAND : 9099916631/32

MORRIS GARAGES
Since 1924

Authorised MG Dealer :
Kayakalp Cars Pvt. Ltd.
Zorba Complex, Akshar chowk, OP Road, Vadodara.
Ph : 6358800230/31

Posted at:L.P.C. DELHI
R.M.S., Delhi-06

Registered With The Registrar of News Papers For INDIA, Under Regd. No. 25512/72

D.L.(DG-11)/8009/2024-26
Posted Under Licence No. U(DN)39/2024-26 of Post without prepayment of postage

Mahindra Rise.

महिन्द्रा का अधिकृत शोरूम एवं वर्कशॉप

भागीरथ मोटर्स (इं) प्रा.लि.

पर्सनल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154144, 9109154152
कमर्शियल वाहनों के लिए सम्पर्क करें मो. 9109154153

शोरूम : सर्वे नं. 379/2,ग्राम-डाबला, रेवाड़ी, आगरा रोड, आर.डी. गार्डी कॉलेज के पास, उज्जैन (म.प्र.)

Bhagirth & Brothers

Bus & Truck Body Manufacture Since 1960

Organization :

Audi Automobiles, Pithampur
Bhagirath Coach & Metal Fabricators Pvt. Ltd., Pithampur
B & B Body Builders, A.B. Road, Indore
Rohan Coach Builders, 29Nehru park, Indore

Adm. Office
29, Nehru Park Road, Indore-1(M.P.)
Phone : 0731-2431921, Fax" 0731-2538841

Works:
Plot No. 199-b, Sector-1
Pithampur Dist. Dhar (M.P.) 454775
Phone : 07292-426150 to 70

Website : www.bhagirathbrothers.com

Printed, Published by Sh. J.P. Sharma, K-29, Ward-1, Desu Road, Mehrauli, New Delhi-30, on behalf of (Owner) Akhil Bhartiya Jangid Brahmin Mahasabha, 440, Haveli Haider Quli, Chandni Chowk, Delhi-06, Printed at M/s. Kamal Printers, Anand Parbat, N.D.-05, Ph.:9810622239, Published at Delhi, Editor Sh. Ram Bhagat Sharma, 1741 Sector - 23 B Chandigarh (UT)

Posting Date: 22-27 Each Month
Publication Date: 15 June 2026
Weight: 100 gms. Cost: Rs. 240 Yearly

अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा
440, हवेली हैदर कुली,
चाँदनी चौक, दिल्ली-110006